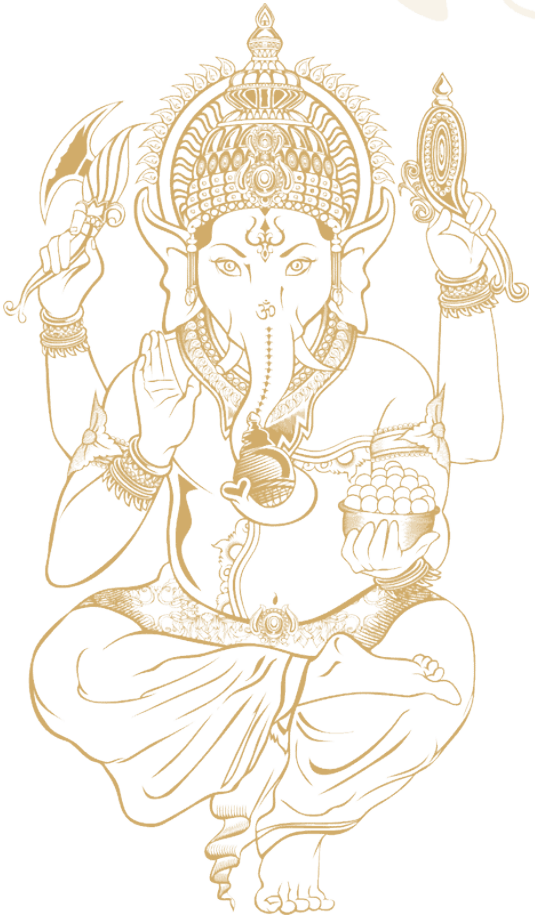

Ramesh ji rathi ji

01 Nov 1954

10:34 PM

Pune

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119947301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**01/11/1954**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**22:34:00 घंटे**
इष्ट	40:00:10 घटी
स्थान	**Pune**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:34:00 उत्तर
रेखांश	73:58:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:34:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	21:59:52 घंटे
वेलान्तर	00:16:23 घंटे
साम्पातिक काल	00:41:39 घंटे
सूर्योदय	06:33:56 घंटे
सूर्यास्त	18:01:32 घंटे
दिनमान	11:27:36 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	15:30:52 तुला
लग्न के अंश	23:42:20 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मिथुन - बुध
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**पूर्वाषाढ़ा - 3**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	धृति
करण	कौलव
गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	फा-फारुख
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1876	कार्तिक	10
पंजाबी	संवत : 2011	कार्तिक	16
बंगाली	सन् : 1361	कार्तिक	15
तमिल	संवत : 2011	आइपसी	16
केरल	कोल्लम : 1130	तुलम	16
नेपाली	संवत : 2011	कार्तिक	16
चैत्रादि	संवत : 2011	कार्तिक	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2011	कार्तिक	शुक्ल 5

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 5
तिथि समाप्ति काल _____: 11:36:15
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 08:11:06 घंटे
जन्म योग _____: पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग ___: सुकर्मा
योग समाप्ति काल _____: 17:28:58 घंटे
जन्म योग _____: धृति
सूर्योदय कालीन करण ___: बालव
करण समाप्ति काल _____: 11:36:15 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 35:57:15
भभोग _____: 65:32:47
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 9 वर्ष 0 मा 29 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

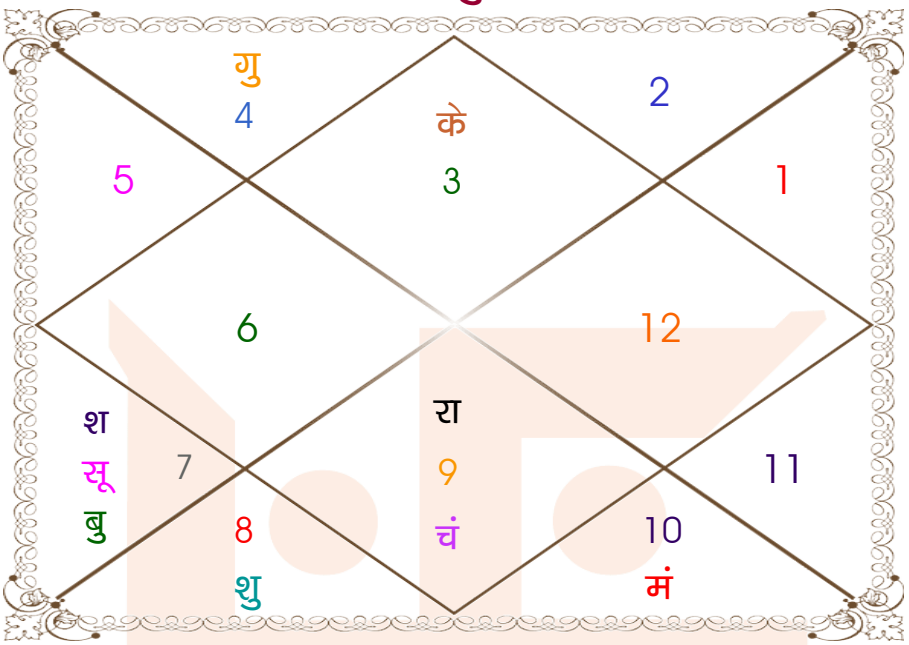

चन्द्र कुंडली

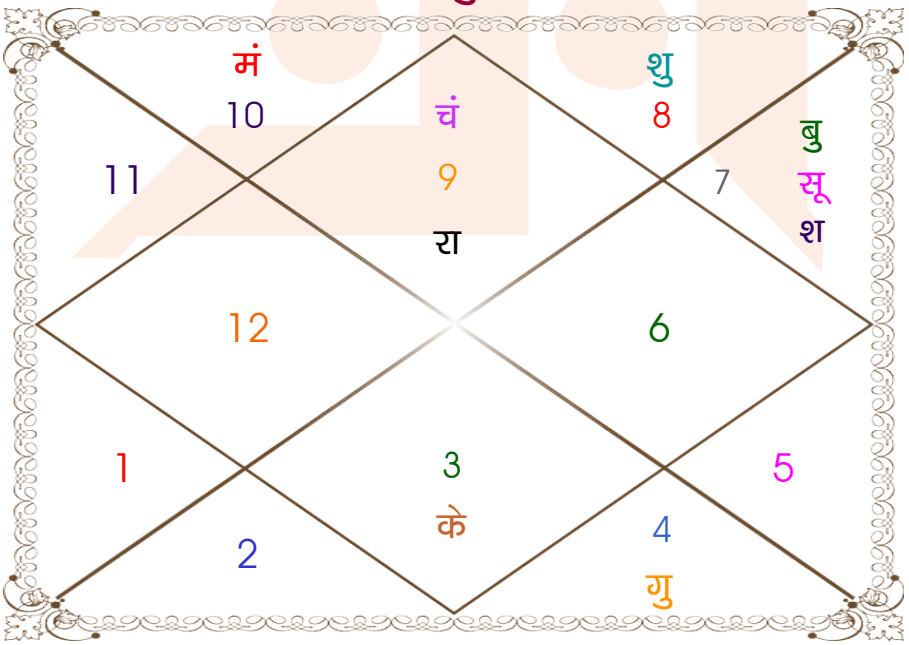

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

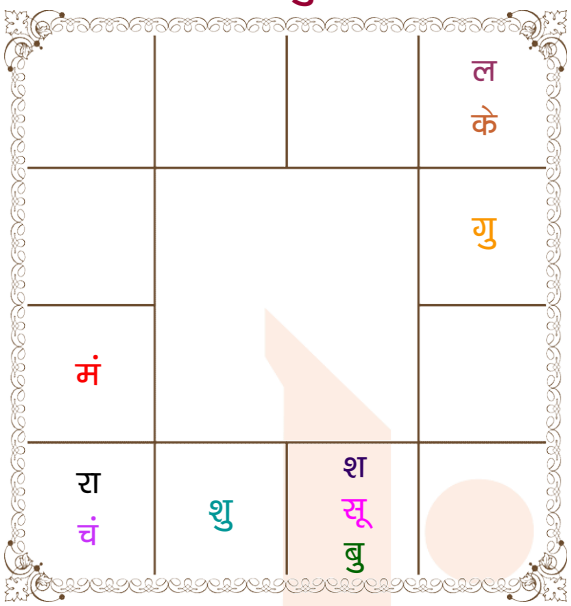

लग्न कुंडली

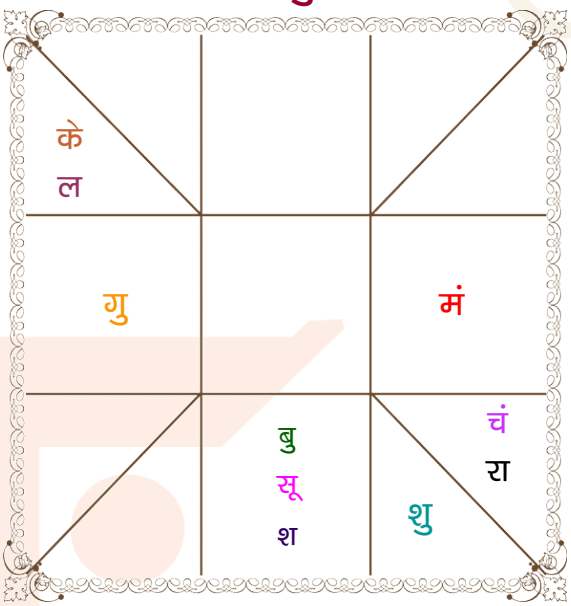

विंशोत्तरी
शुक्र 9वर्ष 0मा 29दि

शुक्र

01/11/1954

01/12/2063

शुक्र	01/12/1963
सूर्य	01/12/1969
चन्द्र	01/12/1979
मंगल	01/12/1986
राहु	30/11/2004
गुरु	30/11/2020
शनि	01/12/2039
बुध	30/11/2056
केतु	01/12/2063

योगिनी
सिद्धा 3वर्ष 2मा 4दि

सिद्धा

06/01/2023

05/01/2030

सिद्धा	17/05/2024
संकटा	06/12/2025
मंगला	15/02/2026
पिंगला	07/07/2026
धान्या	05/02/2027
भ्रामरी	16/11/2027
भद्रिका	05/11/2028
उल्का	05/01/2030

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	23:42:20	321:32:00	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	शनि	---
सूर्य			तुला	15:30:52	01:00:03	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	नीच राशि
चंद्र			धनु	20:36:47	12:12:49	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	सम राशि
मंगल			मक	14:08:51	00:40:14	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	उच्च राशि
बुध	व	अ	तुला	09:15:27	01:05:28	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	मित्र राशि
गुरु			कर्क	06:19:31	00:02:59	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	बुध	उच्च राशि
शुक्र	व		वृश्चि	05:50:35	00:16:54	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	सम राशि
शनि		अ	तुला	18:27:06	00:07:12	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	उच्च राशि
राहु			धनु	13:55:09	00:00:37	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	नीच राशि
केतु			मिथु	13:55:09	00:00:37	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	नीच राशि
हर्ष			कर्क	04:28:31	00:00:06	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	---
नेप			तुला	03:03:03	00:02:12	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	---
प्लूटो			सिंह	03:23:12	00:00:48	मघा	2	10	सूर्य	केतु	सूर्य	---
दशम भाव			मीन	18:05:52	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:13:50

लग्न-चलित

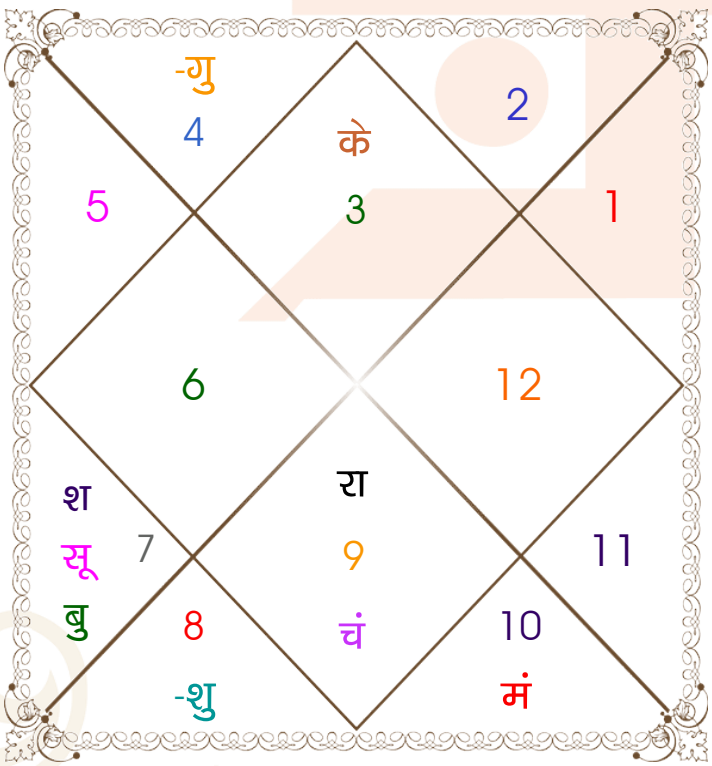

चन्द्र कुंडली

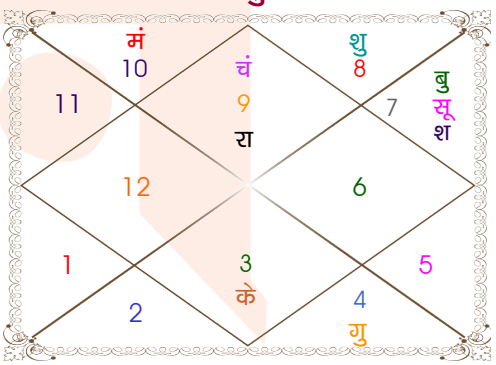

नवमांश कुंडली

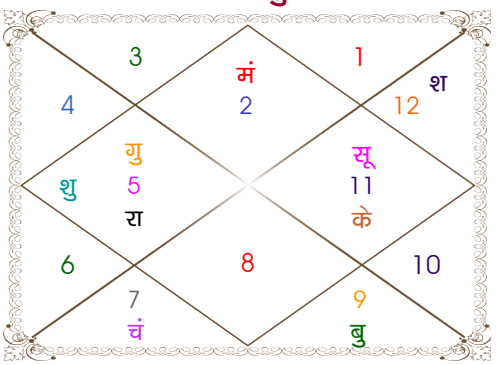

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	07:46:15	मिथुन	23:42:20
2	कर्क	07:46:15	कर्क	21:50:11
3	सिंह	05:54:06	सिंह	19:58:01
4	कन्या	04:01:57	कन्या	18:05:52
5	तुला	04:01:57	तुला	19:58:01
6	वृश्चिक	05:54:06	वृश्चिक	21:50:11
7	धनु	07:46:15	धनु	23:42:20
8	मकर	07:46:15	मकर	21:50:11
9	कुम्भ	05:54:06	कुम्भ	19:58:01
10	मीन	04:01:57	मीन	18:05:52
11	मेष	04:01:57	मेष	19:58:01
12	वृष	05:54:06	वृष	21:50:11

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	23:42:20
2	कर्क	18:42:13
3	सिंह	16:31:29
4	कन्या	18:05:52
5	तुला	21:31:30
6	वृश्चिक	23:43:32
7	धनु	23:42:20
8	मकर	18:42:13
9	कुम्भ	16:31:29
10	मीन	18:05:52
11	मेष	21:31:30
12	वृष	23:43:32

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

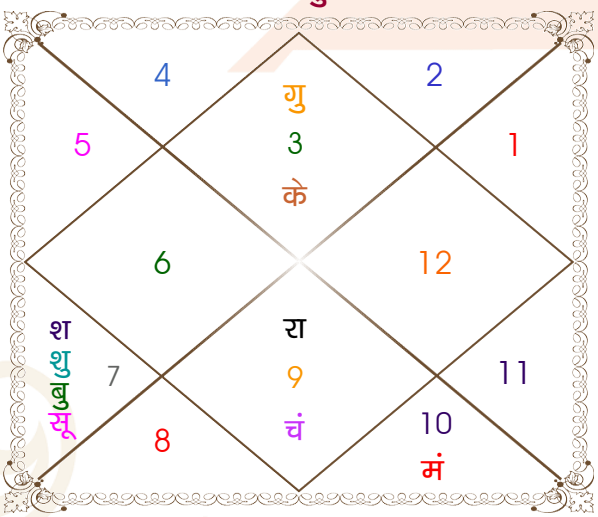

भाव कुंडली

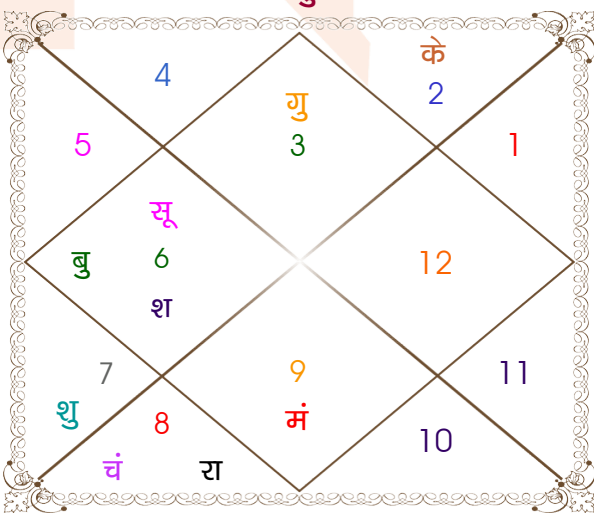

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	युवा	भीत	आगमन	0.31	20 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	वृद्ध	शान्त	सभा	1.19	47 %
मंगल	मातृ	भ्रातृ	युवा	दीप्त	भोजन	13.85	41 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	कुमार	विकल	नेत्रपाणि	0.00	62 %
गुरु	ज्ञाति	धन	वृद्ध	दीप्त	कौतुक	20.85	40 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	मृत	शक्त	नेत्रपाणि	2.07	24 %
शनि	अमात्य	आयु	वृद्ध	विकल	भोजन	14.87	37 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	भीत	कौतुक	0.00	61 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	भीत	भोजन	0.00	61 %
कुल						53.13	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

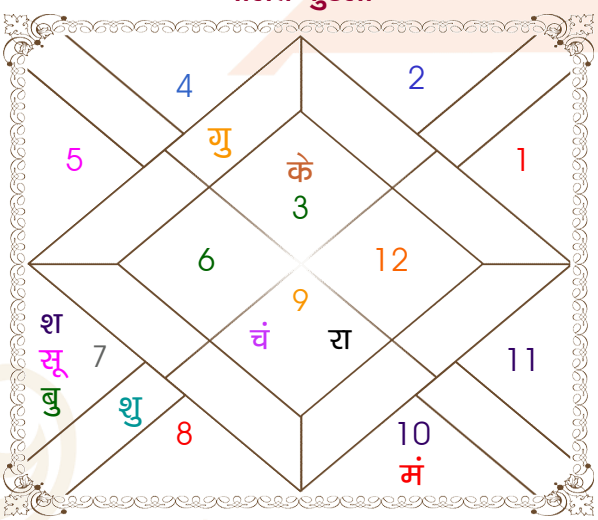

लग्न-चलित

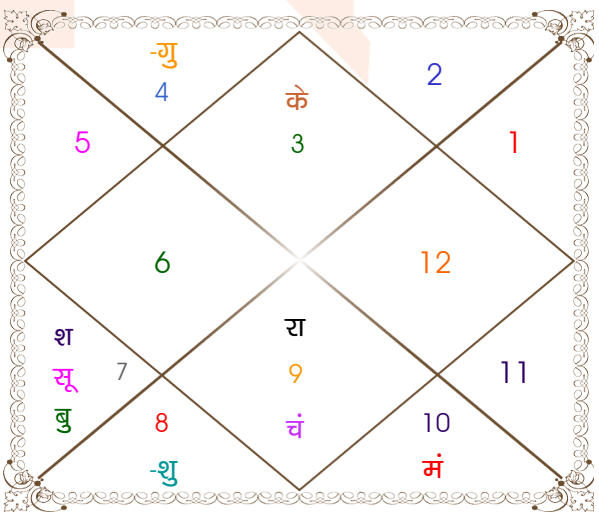

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

सुदर्शन चक्र

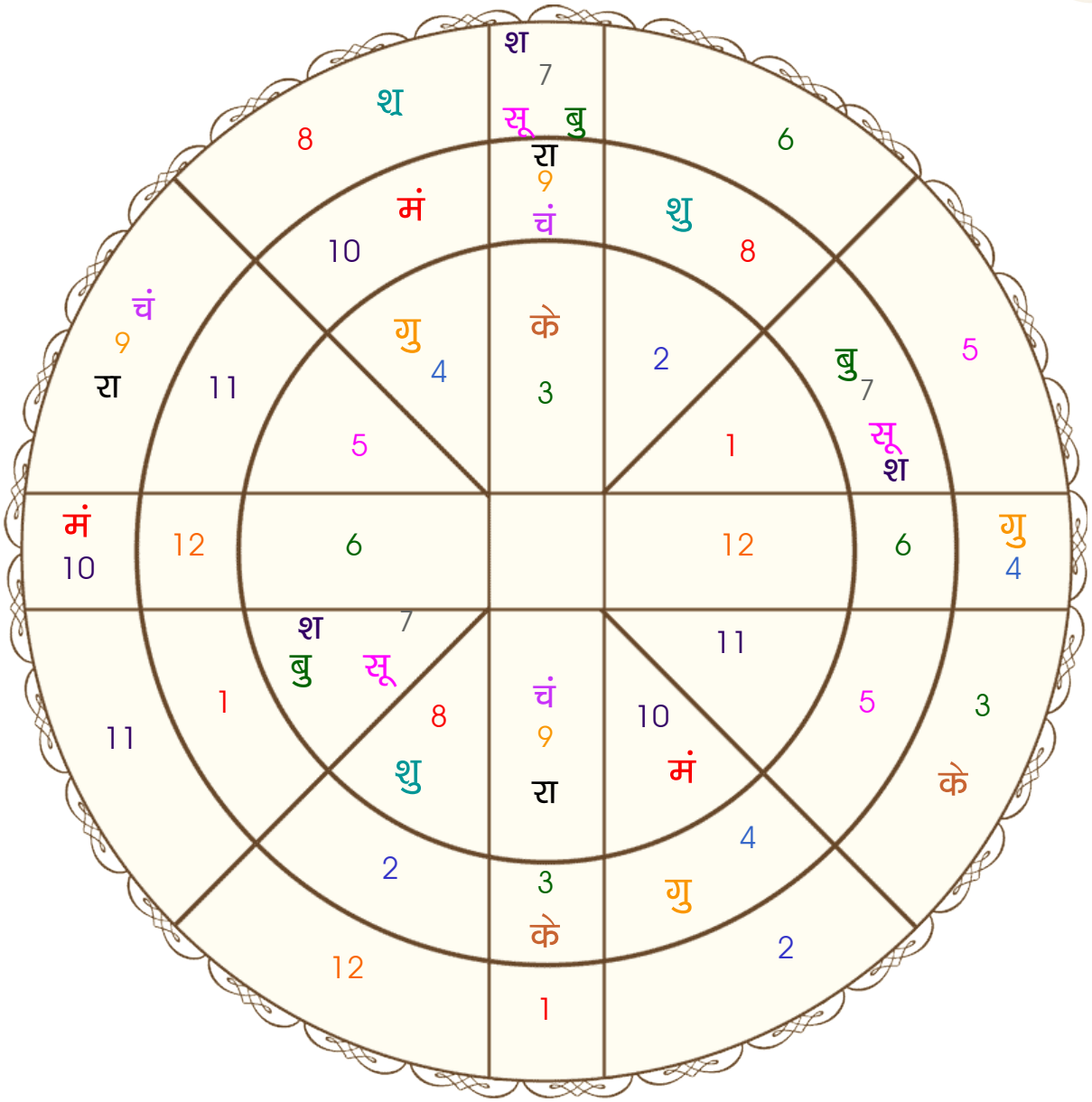

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 8 वर्ष 11 मास 2 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		तुला	15:37:10	शुक्र	राहु	शुक्र	सूर्य
चंद्र		धनु	20:43:05	गुरु	शुक्र	गुरु	बुध
मंगल		मक	14:15:09	शनि	चंद्र	गुरु	शनि
बुध	व	तुला	09:21:45	शुक्र	राहु	गुरु	बुध
गुरु		कर्क	06:25:49	चंद्र	शनि	बुध	मंगल
शुक्र	व	वृश्चि	05:56:53	मंगल	शनि	बुध	शुक्र
शनि		तुला	18:33:24	शुक्र	राहु	चंद्र	गुरु
राहु		धनु	14:01:27	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल
केतु		मिथु	14:01:27	बुध	राहु	बुध	गुरु
हर्ष		कर्क	04:34:49	चंद्र	शनि	शनि	चंद्र
नेप		तुला	03:09:21	शुक्र	मंगल	शुक्र	चंद्र
प्लूटो		सिंह	03:29:30	सूर्य	केतु	सूर्य	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मिथु	23:48:38	बुध	गुरु	शनि	गुरु
2	कर्क	18:48:31	चंद्र	बुध	केतु	चंद्र
3	सिंह	16:37:47	सूर्य	शुक्र	चंद्र	गुरु
4	कन्या	18:12:10	बुध	चंद्र	बुध	शुक्र
5	तुला	21:37:48	शुक्र	गुरु	गुरु	राहु
6	वृश्चि	23:49:50	मंगल	बुध	मंगल	बुध
7	धनु	23:48:38	गुरु	शुक्र	शनि	गुरु
8	मक	18:48:31	शनि	चंद्र	बुध	मंगल
9	कुंभ	16:37:47	शनि	राहु	शुक्र	गुरु
10	मीन	18:12:10	गुरु	बुध	बुध	गुरु
11	मेष	21:37:48	मंगल	शुक्र	गुरु	राहु
12	वृष	23:49:50	शुक्र	मंगल	मंगल	बुध

के.पी. अयनांश : 23:07:32

फॉरच्युना : सिंह 28:54:32

लग्न कुंडली

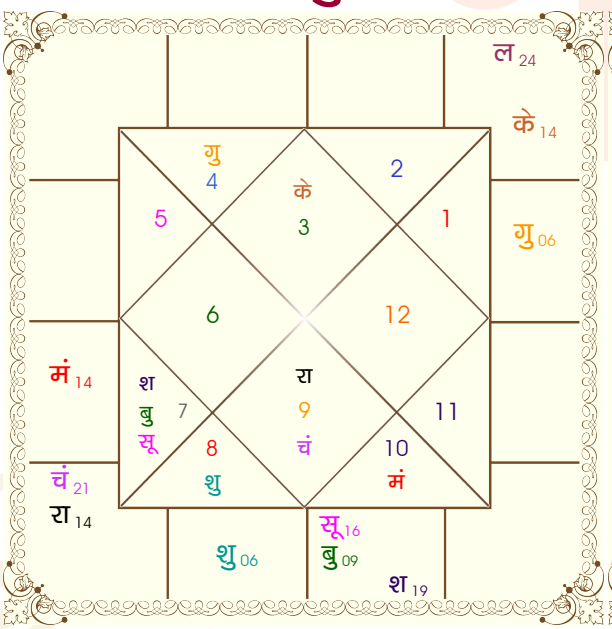

भाव कुंडली

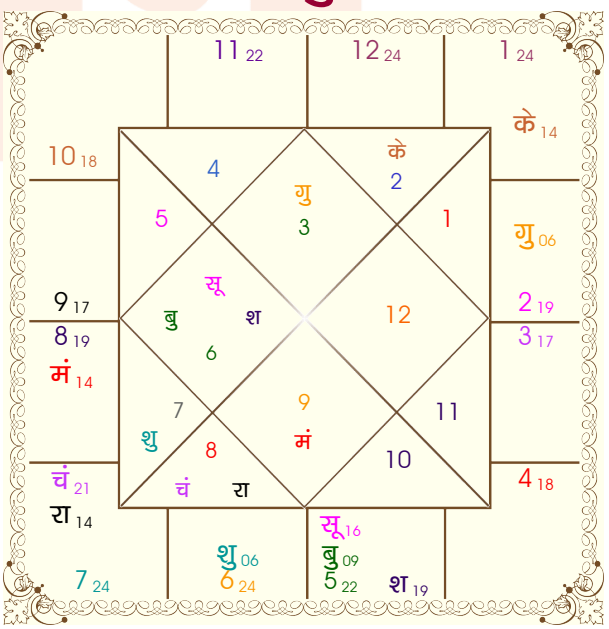

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध- गुरु,
2	चंद्र- मंगल-
3	सूर्य-
4	सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनि,
5	चंद्र+ शुक्र, राहु+
6	सूर्य, चंद्र, मंगल+ बुध, शनि, राहु, केतु,
7	मंगल, गुरु-
8	गुरु- शुक्र- शनि-
9	गुरु- शुक्र- शनि-
10	गुरु-
11	मंगल-
12	चंद्र- शुक्र- राहु- केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 4, 6,
चंद्र	2- 5+ 6, 12-
मंगल	2- 6+ 7, 11-
बुध	1- 4, 6,
गुरु	1, 4, 7- 8- 9- 10-
शुक्र	4, 5, 8- 9- 12-
शनि	4, 6, 8- 9-
राहु	5+ 6, 12-
केतु	6, 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	गु	--	बु
2	--	--	मं	चं
3	--	--	--	सू
4	गु शु	सू बु श	--	बु
5	चं रा	शु	चं रा	शु
6	सू मं बु श के	चं रा	--	मं
7	--	मं	--	गु
8	--	--	गु शु	श
9	--	--	गु शु	श
10	--	--	--	गु
11	--	--	--	मं
12	--	के	चं रा	शु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	3	---	तुला	4
चंद्र	2	4,8	धनु	6
मंगल	6,11	12	मकर	7
बुध	1,4	2,6,10	तुला	4
गुरु	7,10	1,5	कर्क	1
शुक्र	5,12	3,7,11	वृश्चिक	5
शनि	8,9	---	तुला	4
राहु	---	9	धनु	6
केतु	---	---	मिथुन	12

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	---	9	6	5,12	3,7,11	5
चंद्र	5,12	3,7,11	5	7,10	1,5	1
मंगल	2	4,8	6	7,10	1,5	1
बुध	---	9	6	7,10	1,5	1
गुरु	8,9	---	4	1,4	2,6,10	4
शुक्र	8,9	---	4	1,4	2,6,10	4
शनि	---	9	6	2	4,8	6
राहु	5,12	3,7,11	5	5,12	3,7,11	5
केतु	---	9	6	1,4	2,6,10	4

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	195.51	260.61	284.15	189.26	96.33	215.84	198.45	253.92	73.92	94.48	183.05	123.39
सूर्य	--	तृती	चतु	युति	--	--	युति	तृती	--	--	युति	--
195.51	0.00	0.70	2.81	7.93	0.00	0.00	9.53	2.74	0.00	0.00	2.63	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	युति	सप्त	सप्त	--	--
260.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.64	7.64	1.19	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	षष्ठ	सप्त	--	8वां
284.15	0.00	0.00	0.00	0.00	6.83	0.00	0.00	0.00	0.94	5.29	0.00	4.29
बुध	युति	पंचा	चतु	--	--	--	युति	तृती	--	--	युति	--
189.26	7.93	0.53	0.86	0.00	0.00	0.00	5.71	1.03	0.00	0.00	7.96	0.00
गुरु	--	--	सप्त	चतु	--	5वां	--	--	--	युति	चतु	--
96.33	0.00	0.00	6.83	2.16	0.00	9.99	0.00	0.00	0.00	9.81	1.96	0.00
शुक्र	--	अष्ट	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
215.84	0.00	0.94	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	युति	3रा	चतु	युति	10वा	--	--	3रा	--	10वा	--	10वा
198.45	9.53	9.74	1.29	5.71	2.96	0.00	0.00	8.89	0.00	1.07	0.00	0.07
राहु	--	युति	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
253.92	0.00	7.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	पंच	सप्त	--	पंच	--	--	पंच	सप्त	--	--	--	--
73.92	2.74	7.64	0.00	1.03	0.00	0.00	1.12	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	सप्त	सप्त	चतु	युति	पंच	--	--	--	--	चतु	--
94.48	0.00	1.19	5.29	0.94	9.81	2.81	0.00	0.00	0.00	0.00	2.79	0.00
नेप	युति	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	--	--
183.05	2.63	0.00	0.00	7.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	पंचा	--	--	तृती	--	चतु	--	--	--	--	तृती	--
123.39	0.98	0.00	0.00	0.10	0.00	2.40	0.00	0.00	0.00	0.00	2.99	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	83.71	111.84	139.97	168.10	199.97	231.84	263.71	291.84	319.97	348.10	19.97	51.84
सूर्य	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--
195.51	0.00	0.00	0.00	0.00	8.93	0.00	0.00	0.00	1.18	0.00	8.93	0.00
चंद्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--
260.61	9.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.48	0.00	2.96	2.37	2.96	0.00
मंगल	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	4था	--
284.15	0.00	6.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.93	0.00	1.53	8.20	0.00
बुध	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
189.26	0.00	0.00	0.00	0.00	4.34	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.34	0.00
गुरु	युति	--	--	पंचा	--	अष्टां	सप्त	--	--	9वां	--	--
96.33	2.47	0.00	0.00	0.94	0.00	0.69	2.47	0.00	0.00	3.32	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
215.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	10वा	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--
198.45	0.00	9.38	0.00	0.00	9.87	0.00	0.00	1.90	2.77	0.85	9.87	0.00
राहु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	--	--
253.92	5.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.19	0.00	0.00	1.38	0.00	0.00
केतु	युति	--	--	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
73.92	5.19	0.00	0.00	1.38	0.00	0.00	5.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	युति	--	अष्ट	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
94.48	4.29	0.00	0.72	0.00	0.00	0.00	4.29	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
183.05	0.00	0.00	0.00	0.05	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.05	0.00	0.00
प्लूटो	--	युति	--	अष्ट	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
123.39	0.00	3.53	0.00	0.90	0.00	0.00	0.00	3.53	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	83.71	108.70	136.52	168.10	201.52	233.73	263.71	288.70	316.52	348.10	21.52	53.73
सूर्य	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--
195.51	0.00	0.00	0.00	0.00	8.08	0.00	0.00	2.01	2.90	0.00	8.08	0.00
चंद्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--
260.61	9.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.48	0.00	1.44	2.37	2.91	0.00
मंगल	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	4था	--
284.15	0.00	8.88	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.88	0.00	1.53	7.16	0.00
बुध	--	--	--	--	युति	अष्ट	--	--	--	--	सप्त	--
189.26	0.00	0.00	0.00	0.00	2.82	0.67	0.00	0.00	0.00	0.00	2.82	0.00
गुरु	युति	युति	नवां	पंचा	--	--	सप्त	सप्त	--	9वां	--	--
96.33	2.47	2.71	0.95	0.94	0.00	0.00	2.47	2.71	0.00	3.32	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	युति	--	--	पंचा	--	--	सप्त	--
215.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.71	0.00	0.00	0.22	0.00	0.00	0.71	0.00
शनि	--	10वा	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--
198.45	0.00	10.00	0.00	0.00	9.49	0.00	0.00	2.99	2.63	0.85	9.49	0.00
राहु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--
253.92	5.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.19	0.00	2.33	1.38	0.00	0.00
केतु	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
73.92	5.19	0.00	2.33	1.38	0.00	0.00	5.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	युति	युति	--	--	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--
94.48	4.29	0.81	0.00	0.00	0.00	0.00	4.29	0.81	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
183.05	0.00	0.00	0.00	0.05	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.05	0.00	0.00
प्लूटो	--	युति	युति	अष्ट	--	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--
123.39	0.00	0.33	1.94	0.90	0.00	0.00	0.00	0.33	1.94	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

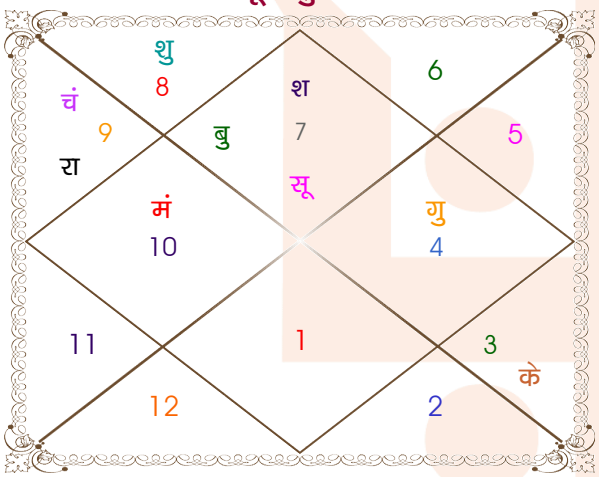

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

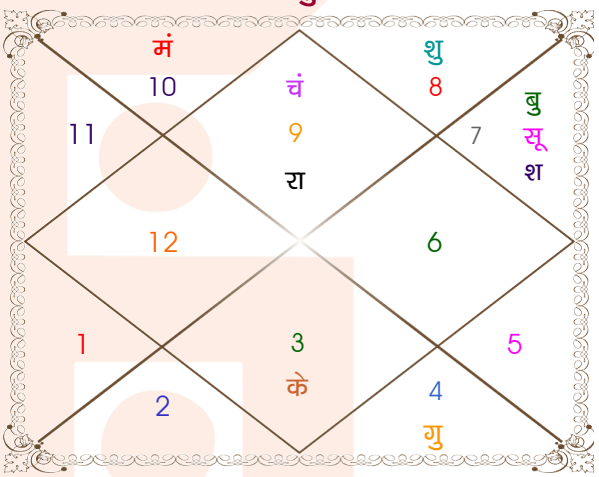

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

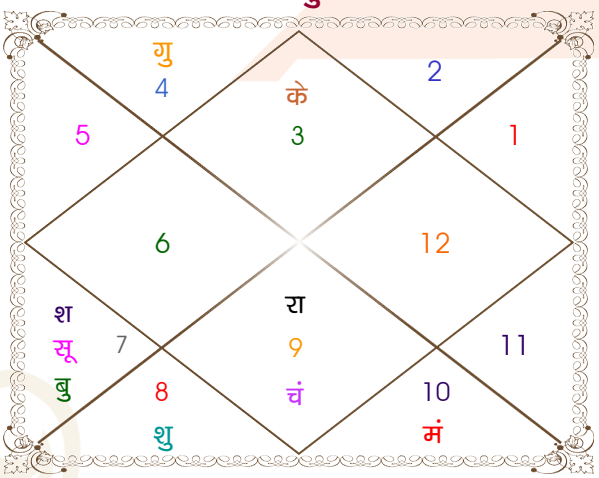

देह विचारः

होरा कुंडली

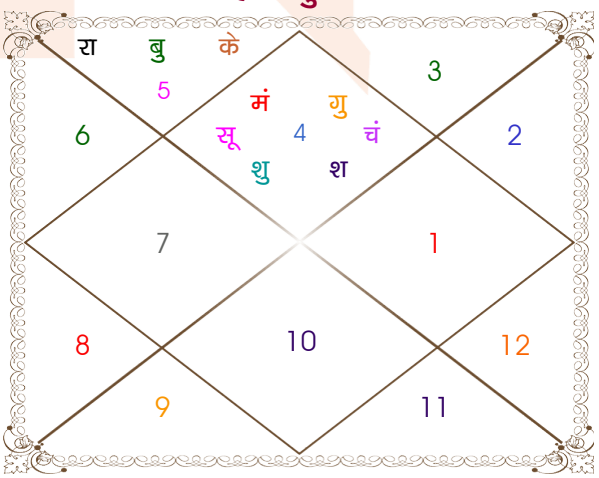

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

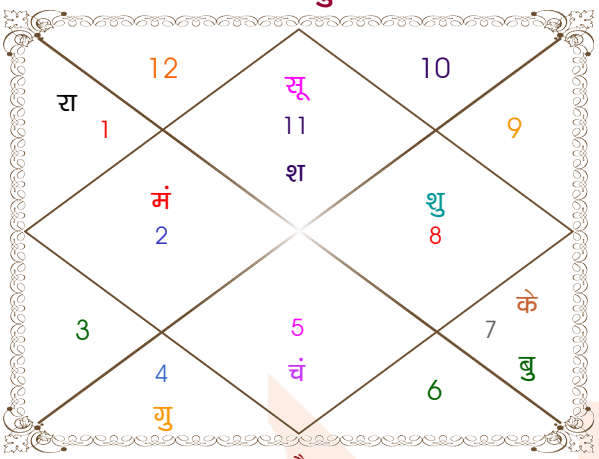

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

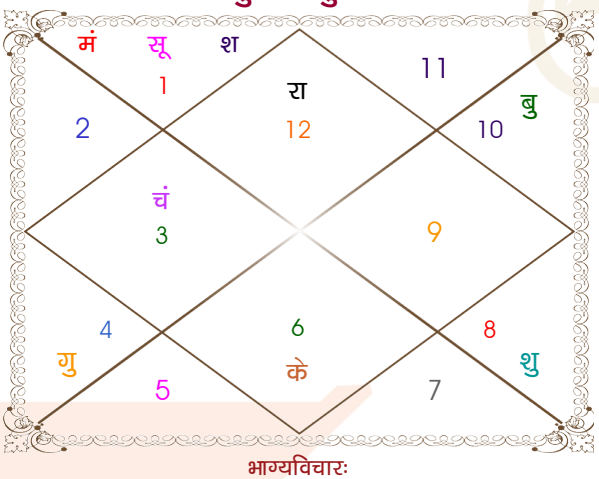

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

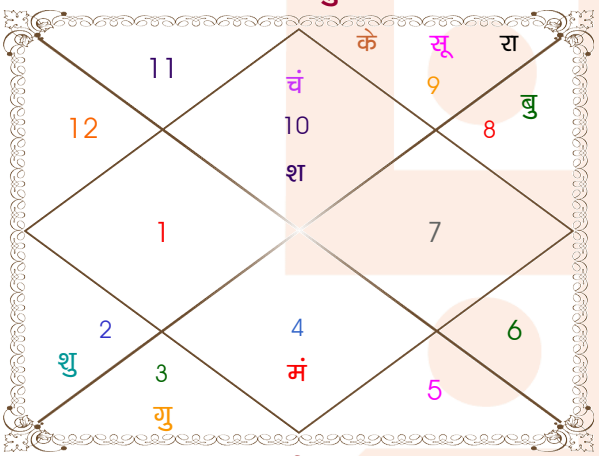

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

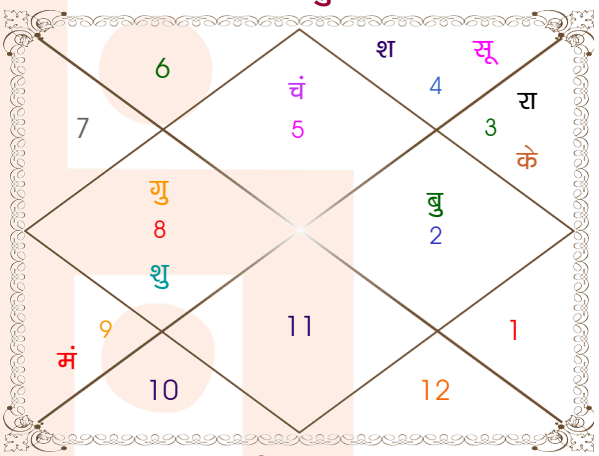

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

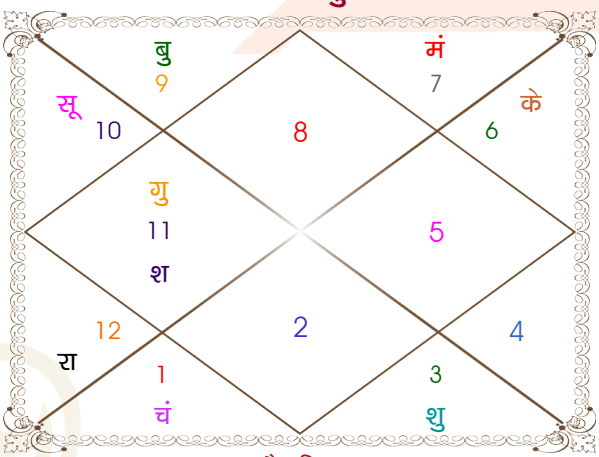

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

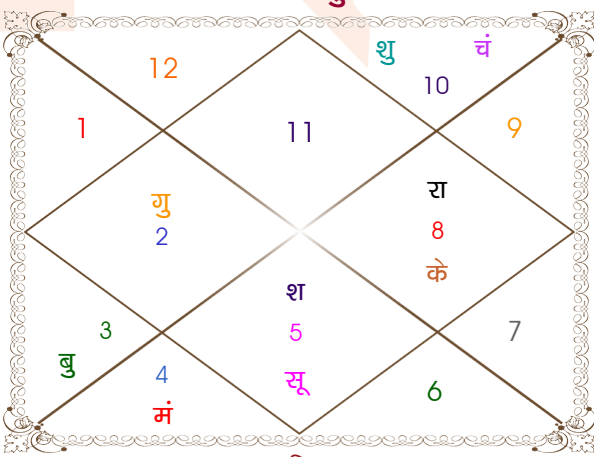

आयुविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

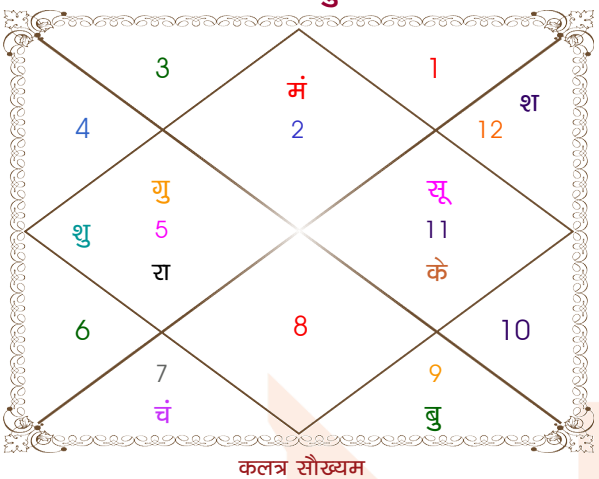

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

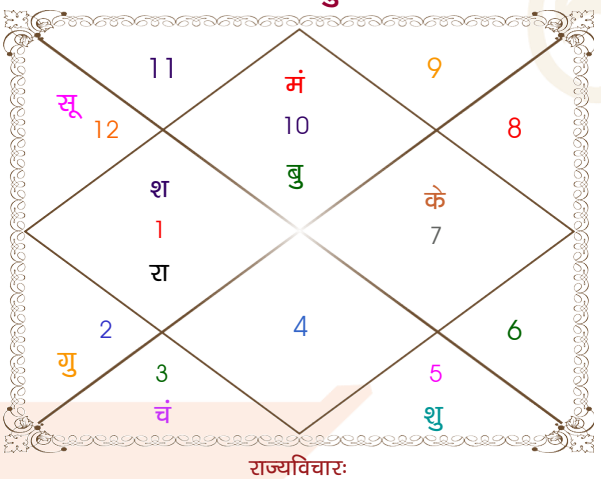

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

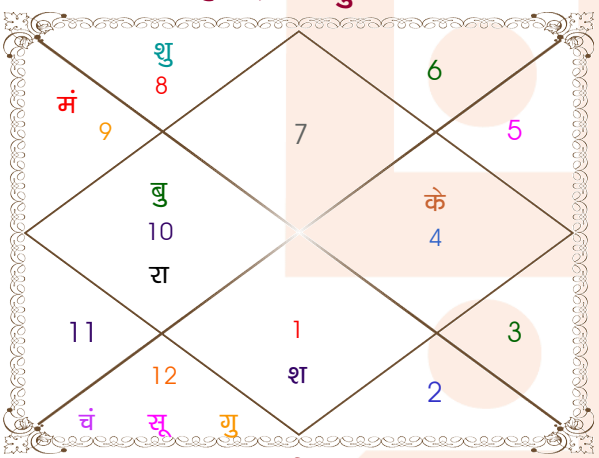

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

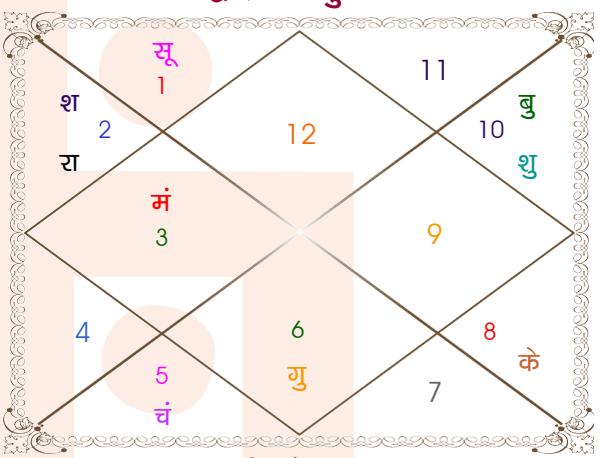

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

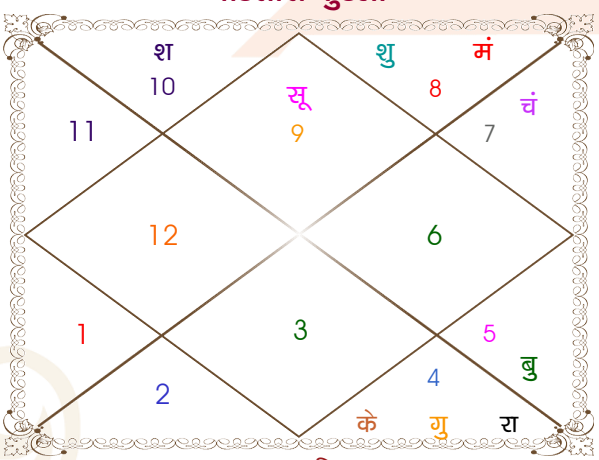

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

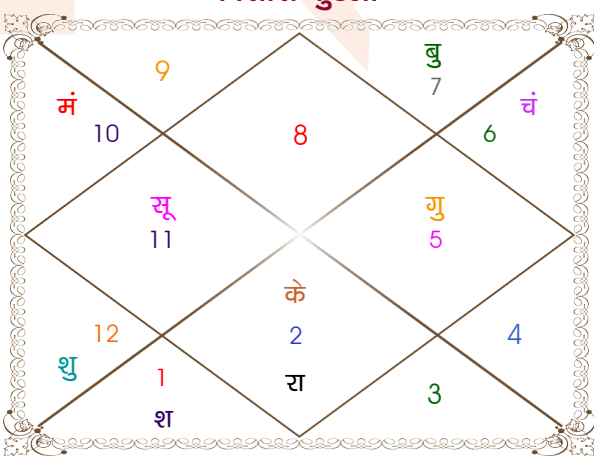

उपासनाज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

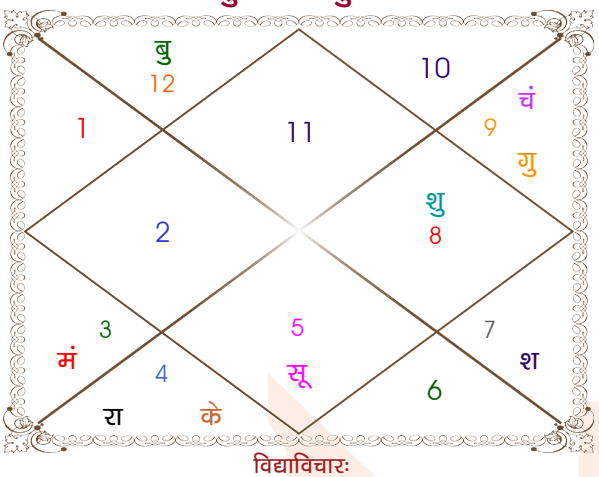

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

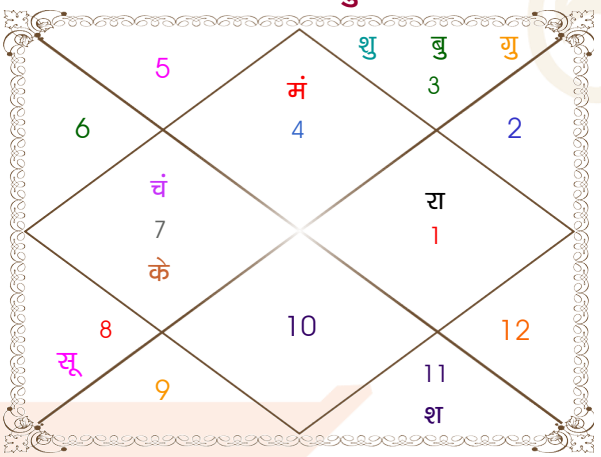

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

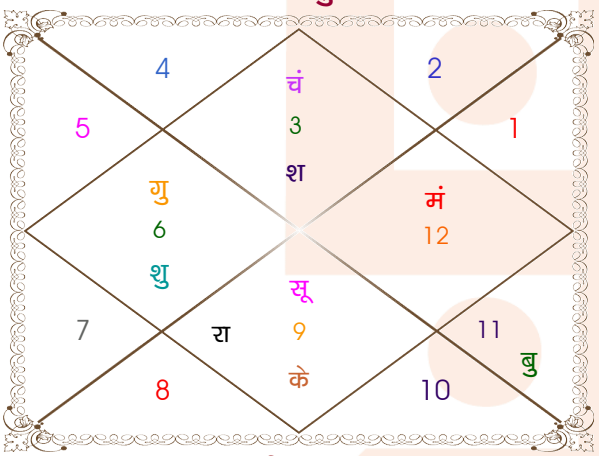

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

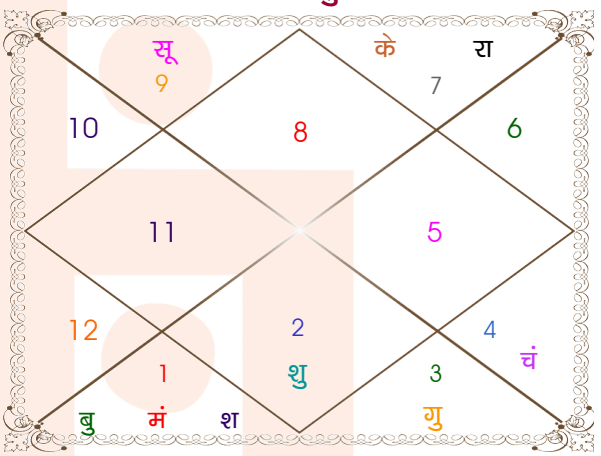

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

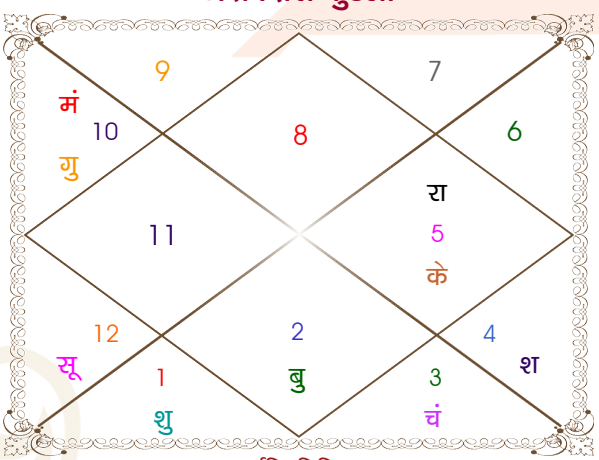

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

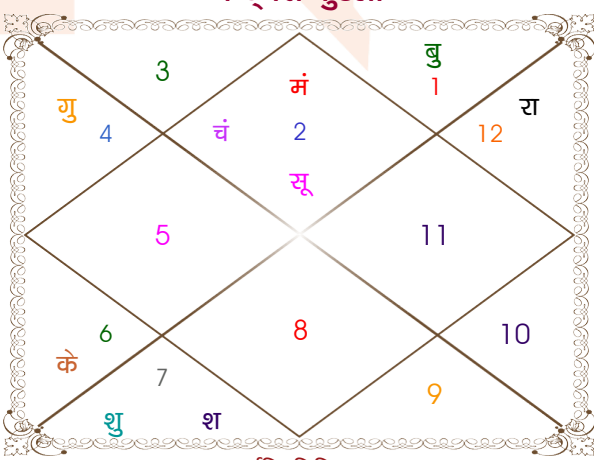

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मिथु	तुला	धनु	मक	तुला	कर्क	वृश्चि	तुला	धनु	मिथु
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कुंभ	कुंभ	सिंह	वृष	तुला	कर्क	वृश्चि	कुंभ	मेष	तुला
चतुर्थांश	मीन	मेष	मिथु	मेष	मक	कर्क	वृश्चि	मेष	मीन	कन्या
सप्तमांश	वृश्चि	मक	मेष	तुला	धनु	कुंभ	मिथु	कुंभ	मीन	कन्या
नवमांश	वृष	कुंभ	तुला	वृष	धनु	सिंह	सिंह	मीन	सिंह	कुंभ
दशमांश	मक	मीन	मिथु	मक	मक	वृष	सिंह	मेष	मेष	तुला
द्वादशांश	मीन	मेष	सिंह	मिथु	मक	कन्या	मक	वृष	वृष	वृश्चि
षोडशांश	धनु	धनु	तुला	वृश्चि	सिंह	कर्क	वृश्चि	मक	कर्क	कर्क
विंशांश	वृश्चि	कुंभ	कन्या	मक	तुला	सिंह	मीन	मेष	वृष	वृष
चतुर्विंशांश	कुंभ	सिंह	धनु	मिथु	मीन	धनु	वृश्चि	तुला	कर्क	कर्क
सप्तविंशांश	कर्क	वृश्चि	तुला	कर्क	मिथु	मिथु	मिथु	कुंभ	मेष	तुला
त्रिंशांश	मिथु	धनु	मिथु	मीन	कुंभ	कन्या	कन्या	मिथु	धनु	धनु
खवेदांश	वृश्चि	धनु	कर्क	मेष	मेष	मिथु	वृष	मेष	तुला	तुला
अक्षवेदांश	वृश्चि	मीन	मिथु	मक	वृष	मक	मेष	कर्क	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	वृष	वृष	वृष	वृष	मेष	कर्क	तुला	तुला	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
मंगल	1 ---	1 ---	3 उत्तम	7 कल्पवृक्ष
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	5 सिंहान	7 कल्पवृक्ष
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
शनि	2 किंसुक	3 व्यंजन	5 सिंहान	7 कल्पवृक्ष
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
केतु	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	9.75	14.15	14.55	14.80	12.00	13.70	16.45	9.75	7.60
सप्तवर्ग	9.50	14.40	14.55	14.50	12.43	14.20	16.68	9.53	7.50
दशवर्ग	11.88	15.08	14.85	13.13	10.60	15.80	16.43	8.58	7.83
षोडशवर्ग	11.80	14.45	15.48	14.20	11.78	15.18	16.15	8.55	7.23

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	2	16	55	52	60	13	59
सप्तवर्गज बल	81	131	98	90	75	113	135
ओजयुग्मक बल	30	0	0	30	15	15	15
केन्द्र बल	30	60	30	30	30	15	30
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	15	0	15
कुल स्थान बल	142	222	183	202	195	155	254
कुल दिग्बल	9	29	39	25	56	44	38
नतोन्नत बल	9	51	51	60	9	9	51
पक्ष बल	38	77	38	38	22	22	38
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	15	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	45	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	22	59	6	46	56	4	50
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	69	232	96	144	206	110	170
कुल चेष्टाबल	0	0	36	47	36	55	1
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	6	-18	-23	5	-31	7	6
कुल षट्बल	287	517	347	449	496	413	478
रूप षट्बल	4.8	8.6	5.8	7.5	8.3	6.9	8.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.0	1.4	1.2	1.1	1.3	1.3	1.6
संबंधित पद	7	2	5	6	3	4	1

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	5.60	18.56	44.48	49.35	46.49	26.62	6.95
कष्ट फल	49.96	41.11	10.59	10.29	3.24	15.73	5.53

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	449	517	287	449	413	347	496	478	478	496	347	413
भावदिग्बल	60	40	10	30	20	50	30	20	20	0	50	40
भावदृष्टि बल	-1	-28	-13	16	35	50	44	77	49	59	19	24
कुल भाव बल	508	528	284	495	468	447	571	575	547	556	416	477
रूप भाव बल	8.5	8.8	4.7	8.2	7.8	7.4	9.5	9.6	9.1	9.3	6.9	8.0
संबंधित पद	6	5	12	7	9	10	2	1	4	3	11	8

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

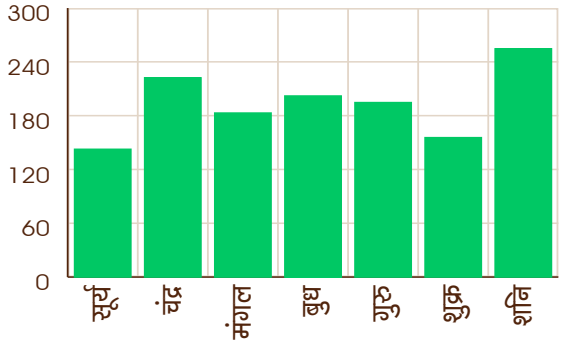

दिग्बल

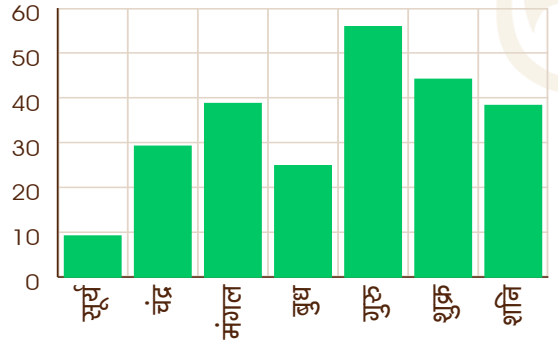

कालबल

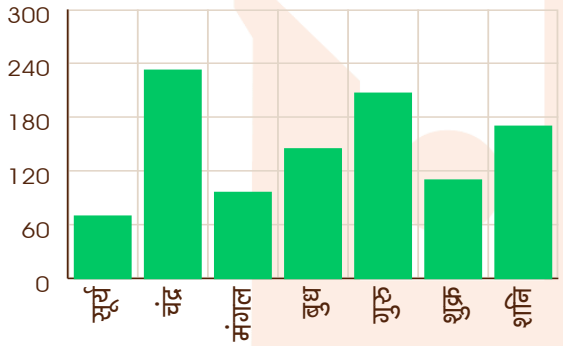

चेष्टाबल

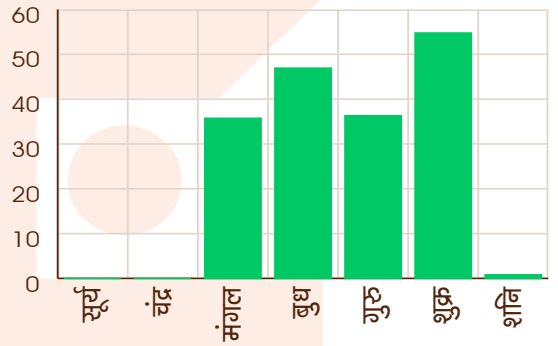

नैसर्गिक बल

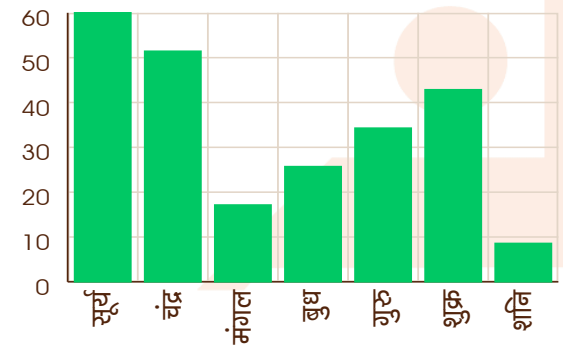

दृग्बल

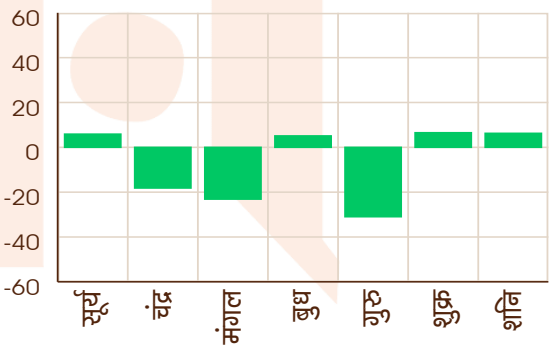

रूप षट्बल

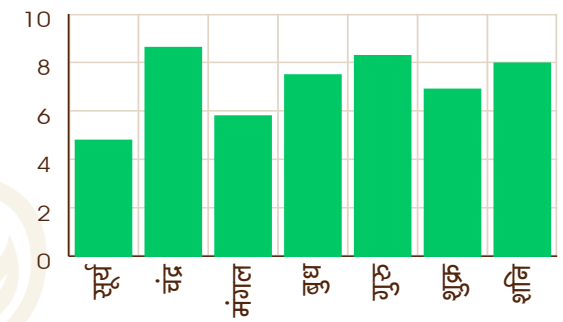

न्यूनतम षट्बल

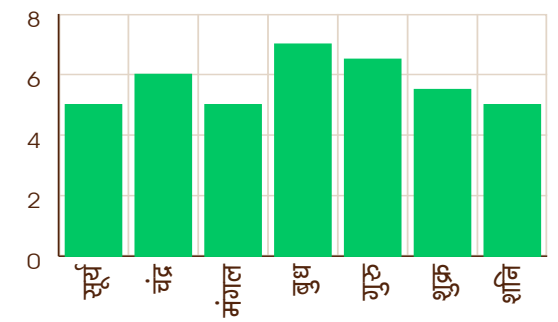

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

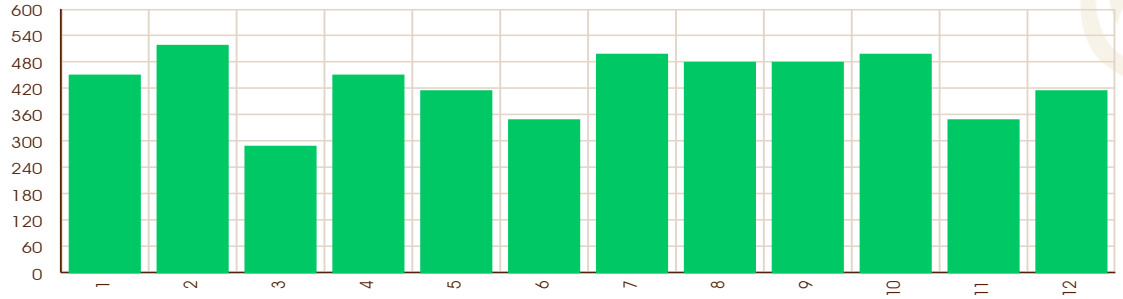

भावदिग्बल

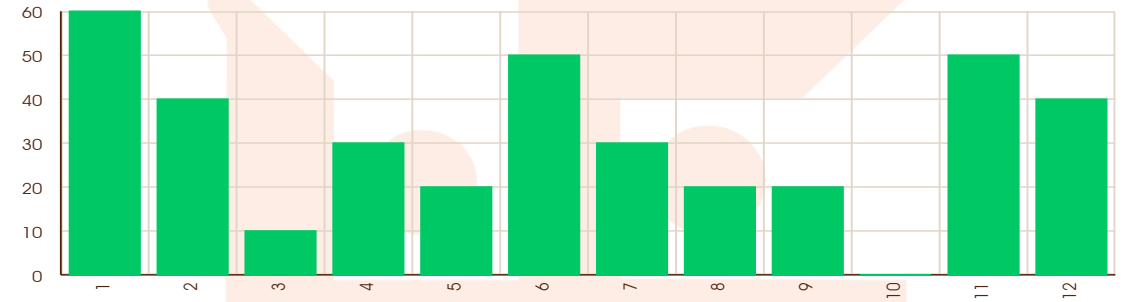

भावदृष्टि बल

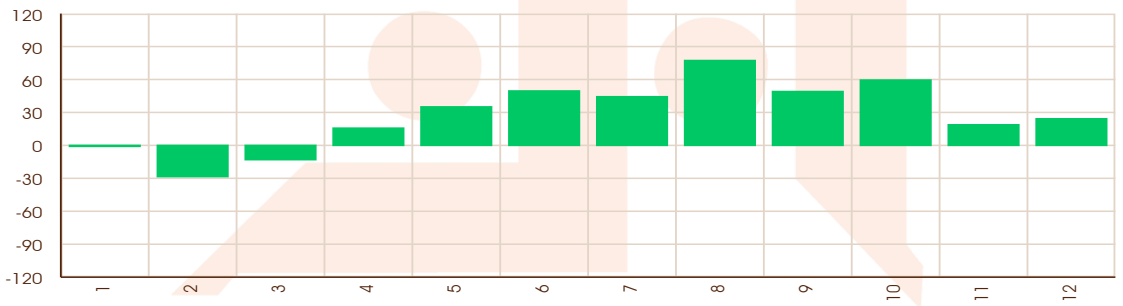

भाव बल

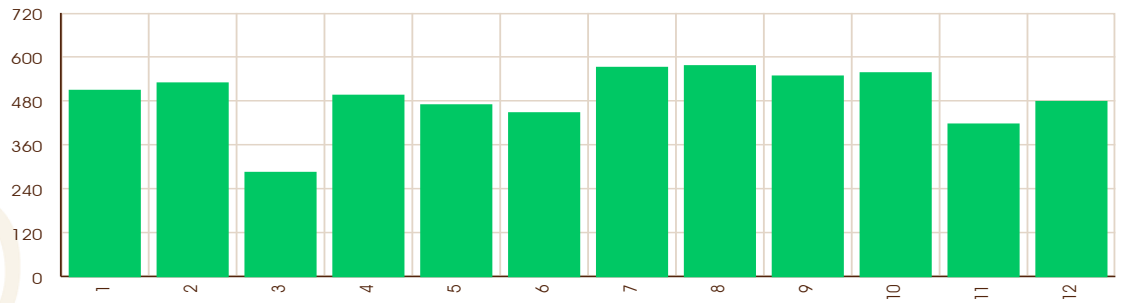

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

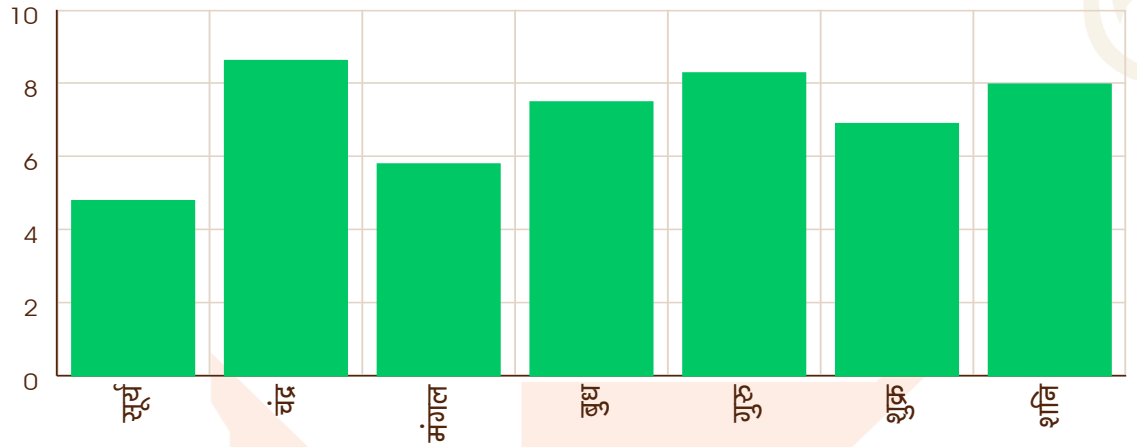

इष्ट - कष्ट फल

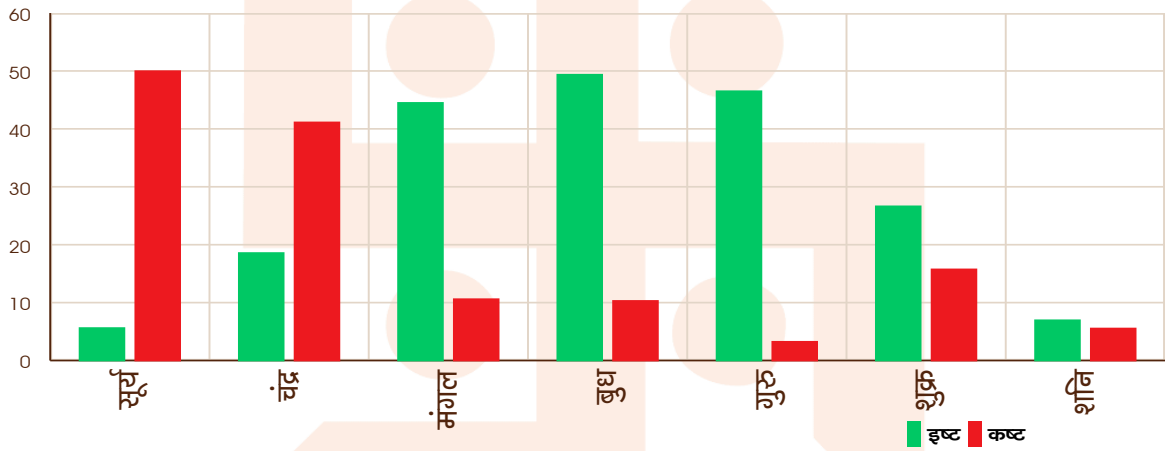

रूप भाव बल

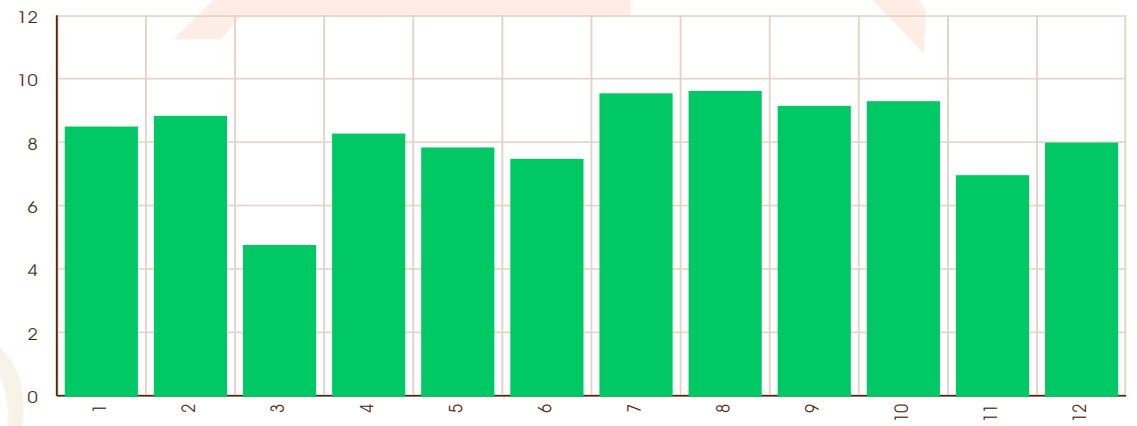

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मिथु	23:42:20	--	--	पुनर्वसु	2	7
गुलिक	गु	मिथु	04:49:49	--	--	मृगशिरा	4	5
काल	का	मिथु	26:05:22	--	--	पुनर्वसु	2	7
मृत्यु	मृ	सिंह	08:41:16	--	--	मघा	3	10
यमघंटक	यम	कन्या	23:16:37	--	--	हस्त	4	13
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	00:53:44	--	--	उ०फाल्गुनी	2	12
धूम	धू	कुंभ	28:50:52	नीच	--	पू०भाद्रपद	3	25
व्यतिपात	व्य	वृष	01:09:08	नीच	--	कृतिका	2	3
परिवेश	परि	वृश्चि	01:09:08	--	--	विशाखा	4	16
इन्द्रचाप	इ	सिंह	28:50:52	--	--	उ०फाल्गुनी	1	12
उपकेतु	उप	कन्या	15:30:52	--	--	हस्त	2	13

प्राणपद	:	कुंभ	15:50:38	कारकाँश लग्न	:	तुला	05:30:59
भाव लग्न	:	मिथु	15:31:51	होरा लग्न	:	कुंभ	15:32:50
घटी लग्न	:	कुंभ	15:35:48	वर्णद लग्न	:	कुंभ	20:44:50

उपग्रह कुंडली

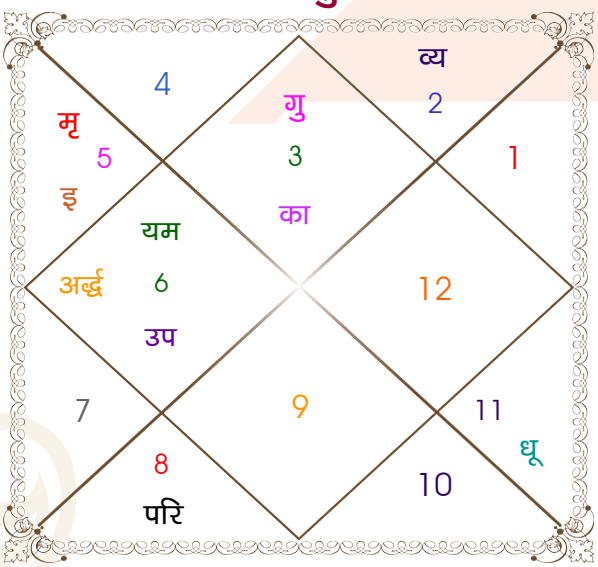

आरूढ़ कुंडली

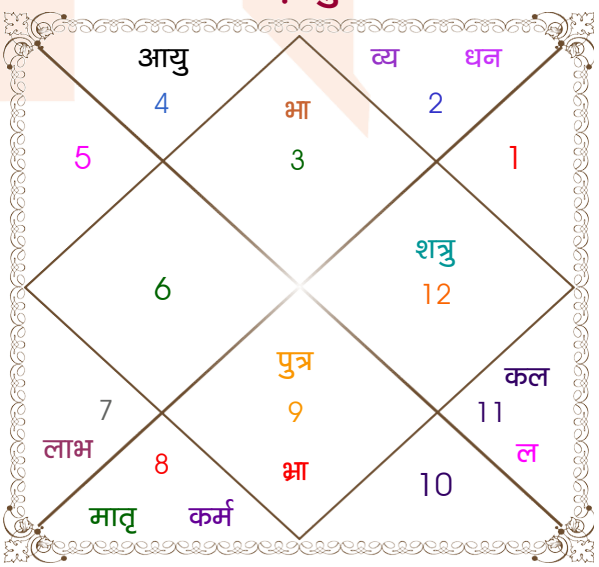

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षन्नाडी चक्र

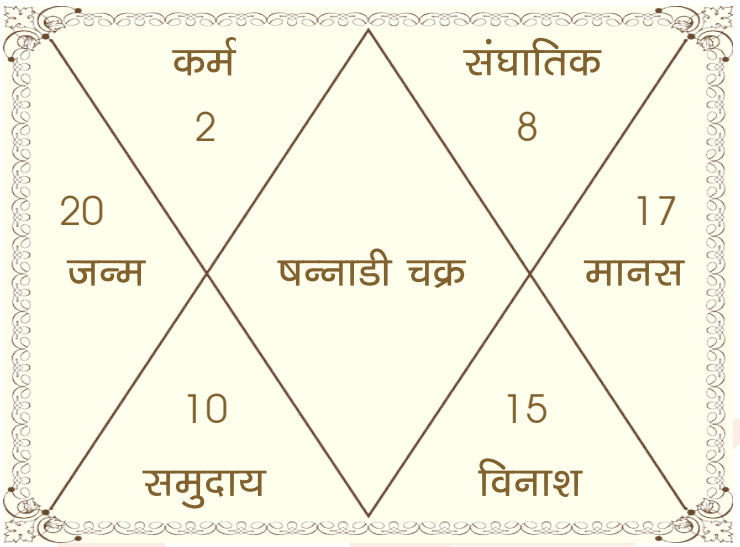

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
कुल	5	5	2	3	3	3	5	6	3	4	5	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	6
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
कुल	4	3	6	5	4	6	2	4	7	2	4	2	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	7
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
बुध	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
कुल	2	4	3	5	3	4	3	5	1	4	2	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
कुल	4	4	3	5	5	5	3	3	6	6	4	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
सूर्य	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	9
शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	6
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
लग्न	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
कुल	6	6	4	6	4	4	5	5	4	6	2	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	5
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	9
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
कुल	4	5	4	6	5	4	3	5	4	6	4	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
कुल	4	4	3	1	2	4	3	5	4	2	4	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
गुरु	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
सूर्य	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	2	5	5	2	5	6	4	6	2	7	2	3	49

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	5	4	2	4	3	4	4	3	1	2	4	39
गुरु	6	2	4	6	6	4	6	4	4	5	5	4	56
मंगल	5	3	4	3	5	1	4	2	3	2	4	3	39
सूर्य	5	6	3	4	5	4	5	5	2	3	3	3	48
शुक्र	4	3	5	4	6	4	2	4	5	4	6	5	52
बुध	3	3	6	6	4	6	4	4	3	5	5	5	54
चंद्र	4	6	2	4	7	2	4	2	4	3	6	5	49
बिन्दु	30	28	28	29	37	24	29	25	24	23	31	29	337
रेखा	26	28	28	27	19	32	27	31	32	33	25	27	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	4	2	0	1	2	2	2	0	0	0	2	15
गुरु	2	0	0	2	2	2	2	0	0	3	1	0	14
मंगल	2	2	0	1	2	0	0	0	0	1	0	1	9
सूर्य	3	3	0	1	3	1	2	2	0	0	0	0	15
शुक्र	0	0	3	0	2	1	0	0	1	1	4	1	13
बुध	0	0	2	2	1	3	0	0	0	2	1	1	12
चंद्र	0	4	0	2	3	0	2	0	0	1	4	3	19
रेखा	7	13	7	8	14	9	8	4	1	8	10	8	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	2	0	0	1	0	2	2	0	0	0	2	9
गुरु	2	0	0	2	2	2	2	0	0	3	0	0	13
मंगल	2	2	0	1	2	0	0	0	0	1	0	1	9
सूर्य	1	1	0	1	3	1	2	2	0	0	0	0	11
शुक्र	0	0	2	0	2	1	0	0	1	1	3	0	10
बुध	0	0	2	2	1	1	0	0	0	2	0	1	9
चंद्र	0	2	0	2	3	0	2	0	0	1	3	3	16
रेखा	5	7	4	8	14	5	8	4	1	8	6	7	77

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	86	146	75	61	81	88	84
ग्रह पिंड	54	58	18	36	74	13	44
शोध्य पिंड	140	204	93	97	155	101	128

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

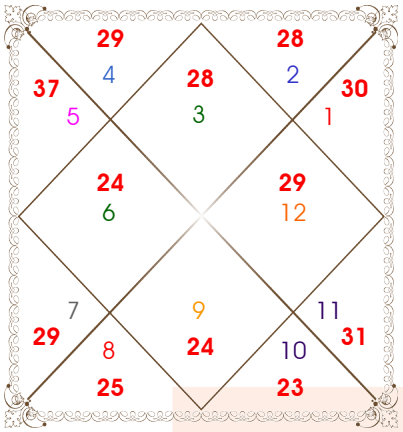

सूर्य का अष्टकवर्ग

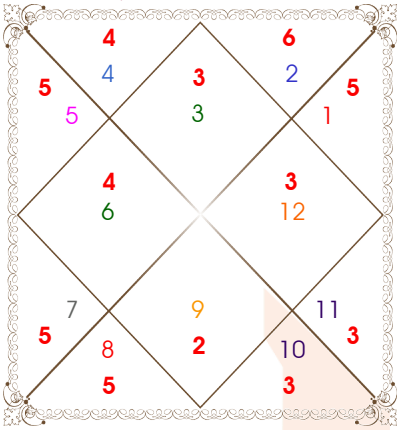

चंद्र का अष्टकवर्ग

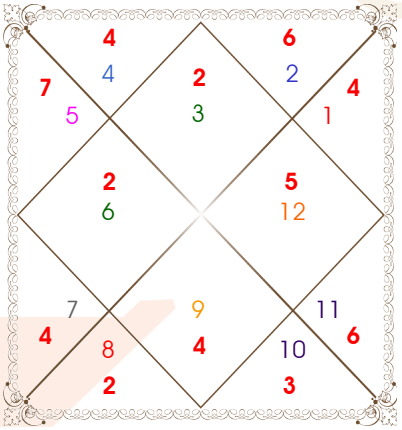

मंगल का अष्टकवर्ग

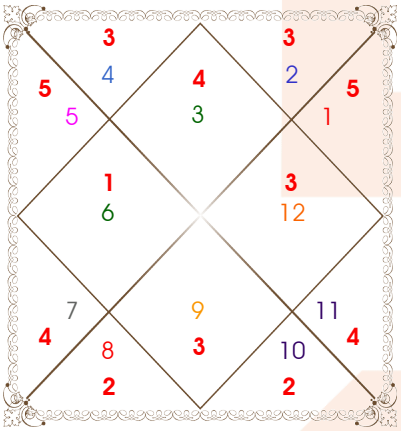

बुध का अष्टकवर्ग

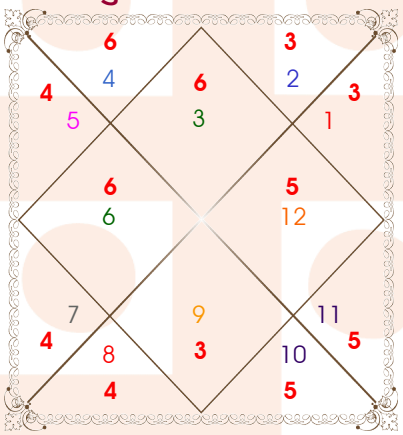

गुरू का अष्टकवर्ग

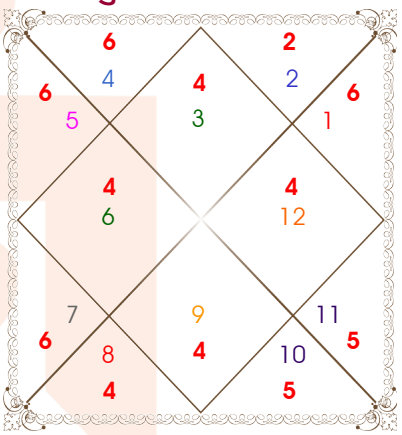

शुक्र का अष्टकवर्ग

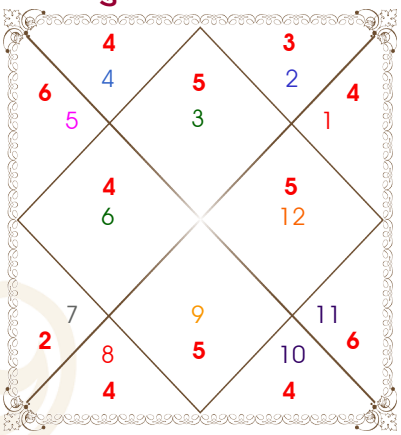

शनि का अष्टकवर्ग

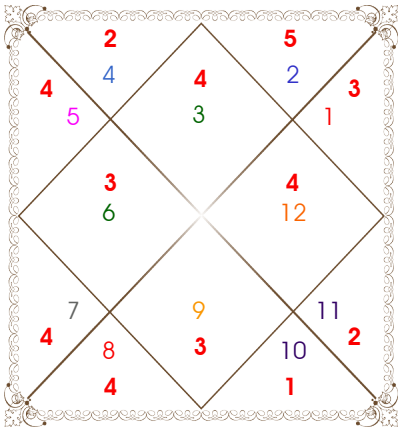

लग्न का अष्टकवर्ग

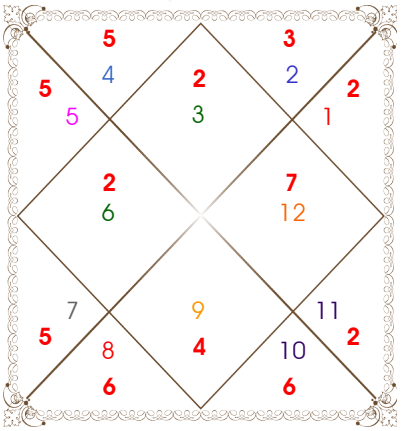

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

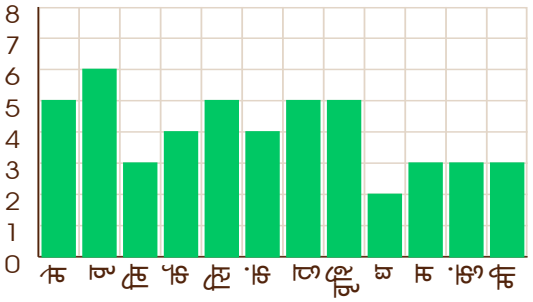

चन्द्र

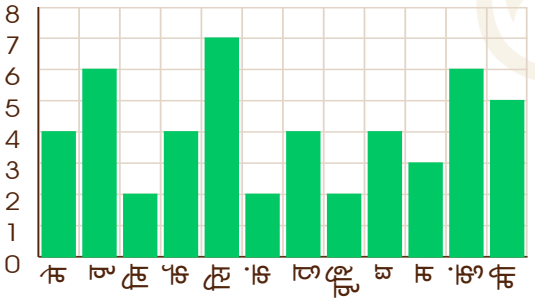

मंगल

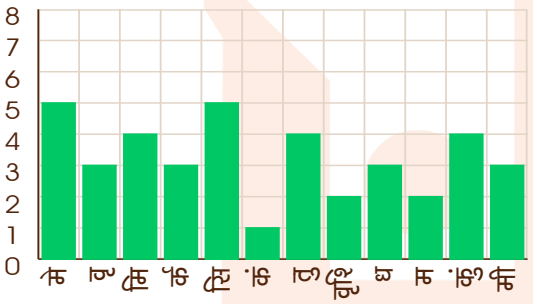

बुध

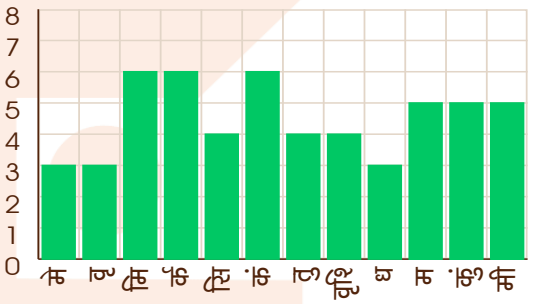

गुरु

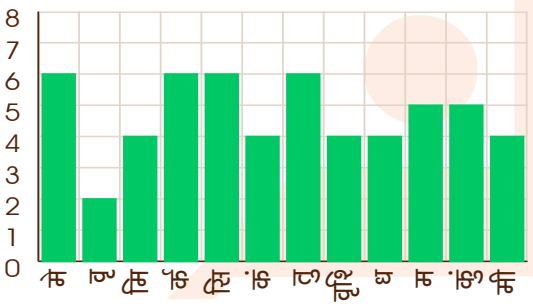

शुक्र

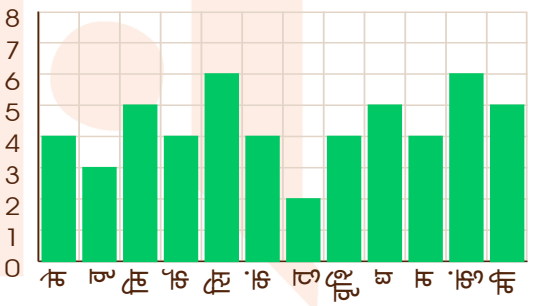

शनि

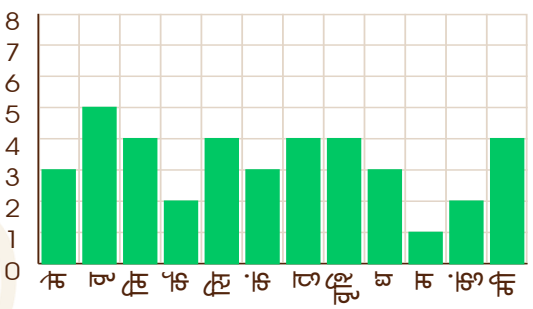

लग्न

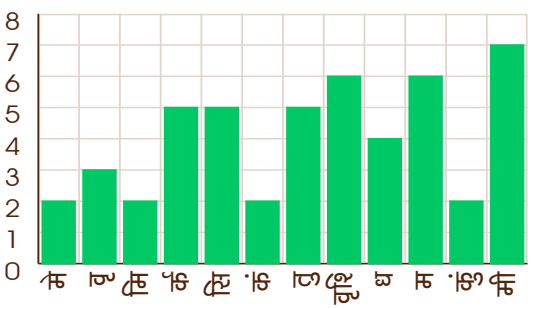

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

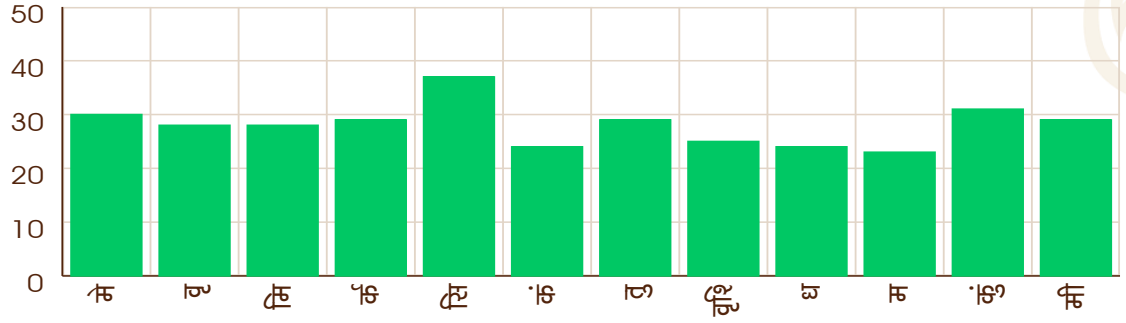

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

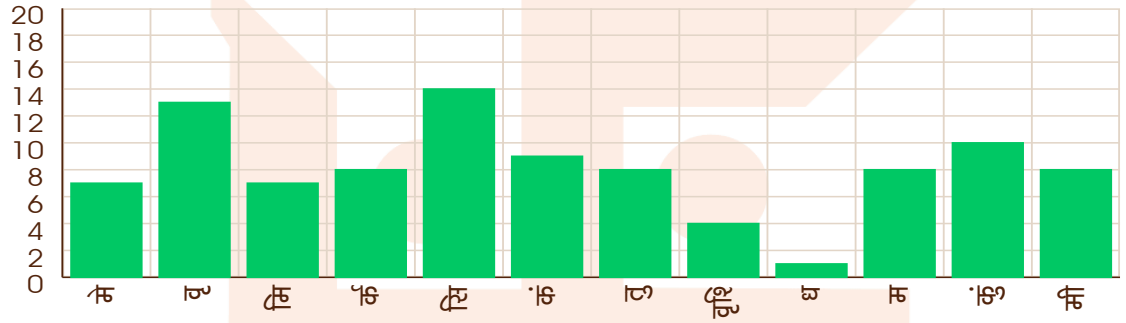

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

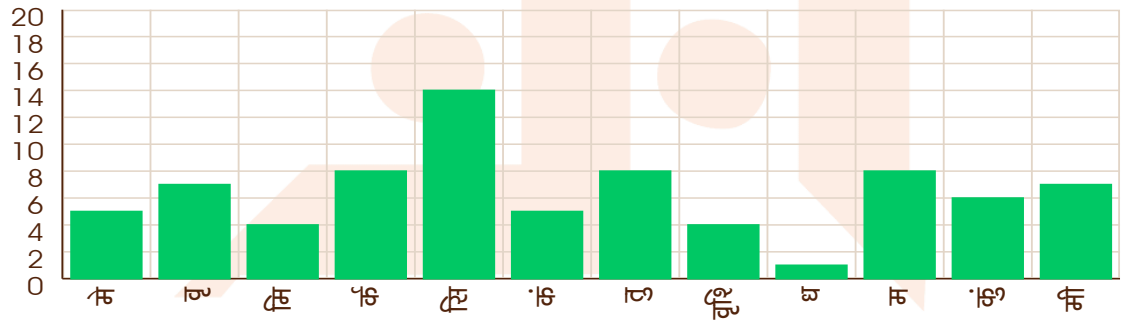

शोध्य पिंड

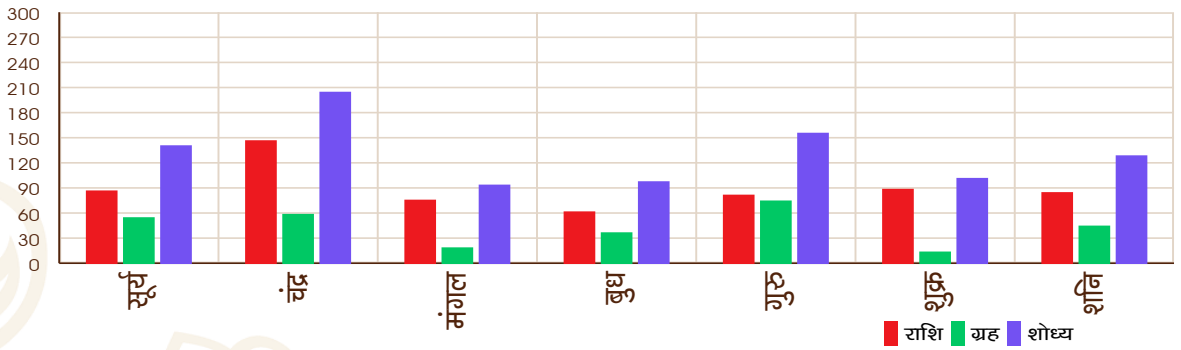

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 9 वर्ष 0 मास 29 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
01/11/1954		01/12/1963		01/12/1969		01/12/1979		01/12/1986	
01/12/1963		01/12/1969		01/12/1979		01/12/1986		30/11/2004	
	00/00/0000	सूर्य	20/03/1964	चंद्र	01/10/1970	मंगल	28/04/1980	राहु	13/08/1989
	00/00/0000	चंद्र	18/09/1964	मंगल	02/05/1971	राहु	17/05/1981	गुरु	07/01/1992
	00/00/0000	मंगल	24/01/1965	राहु	31/10/1972	गुरु	23/04/1982	शनि	13/11/1994
	00/00/0000	राहु	19/12/1965	गुरु	02/03/1974	शनि	02/06/1983	बुध	01/06/1997
	01/11/1954	गुरु	07/10/1966	शनि	01/10/1975	बुध	29/05/1984	केतु	20/06/1998
गुरु	01/10/1956	शनि	19/09/1967	बुध	02/03/1977	केतु	25/10/1984	शुक्र	19/06/2001
शनि	01/12/1959	बुध	26/07/1968	केतु	01/10/1977	शुक्र	25/12/1985	सूर्य	14/05/2002
बुध	01/10/1962	केतु	30/11/1968	शुक्र	02/06/1979	सूर्य	02/05/1986	चंद्र	13/11/2003
केतु	01/12/1963	शुक्र	01/12/1969	सूर्य	01/12/1979	चंद्र	01/12/1986	मंगल	30/11/2004

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
30/11/2004		30/11/2020		01/12/2039		30/11/2056		01/12/2063	
30/11/2020		01/12/2039		30/11/2056		01/12/2063		00/00/0000	
गुरु	19/01/2007	शनि	04/12/2023	बुध	29/04/2042	केतु	29/04/2057	शुक्र	02/04/2067
शनि	01/08/2009	बुध	13/08/2026	केतु	26/04/2043	शुक्र	29/06/2058	सूर्य	01/04/2068
बुध	07/11/2011	केतु	22/09/2027	शुक्र	24/02/2046	सूर्य	03/11/2058	चंद्र	01/12/2069
केतु	13/10/2012	शुक्र	22/11/2030	सूर्य	31/12/2046	चंद्र	05/06/2059	मंगल	31/01/2071
शुक्र	14/06/2015	सूर्य	04/11/2031	चंद्र	01/06/2048	मंगल	01/11/2059	राहु	31/01/2074
सूर्य	01/04/2016	चंद्र	04/06/2033	मंगल	29/05/2049	राहु	18/11/2060	गुरु	01/11/2074
चंद्र	01/08/2017	मंगल	14/07/2034	राहु	16/12/2051	गुरु	25/10/2061		00/00/0000
मंगल	08/07/2018	राहु	20/05/2037	गुरु	23/03/2054	शनि	04/12/2062		00/00/0000
राहु	30/11/2020	गुरु	01/12/2039	शनि	30/11/2056	बुध	01/12/2063		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 9 वर्ष 0 मा 11 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
01/11/1954		01/10/1956		01/12/1959		01/10/1962		01/12/1963	
01/10/1956		01/12/1959		01/10/1962		01/12/1963		20/03/1964	
	01/11/1954	शनि	02/04/1957	बुध	26/04/1960	केतु	26/10/1962	सूर्य	07/12/1963
शनि	11/11/1954	बुध	13/09/1957	केतु	25/06/1960	शुक्र	05/01/1963	चंद्र	16/12/1963
बुध	29/03/1955	केतु	19/11/1957	शुक्र	15/12/1960	सूर्य	26/01/1963	मंगल	22/12/1963
केतु	24/05/1955	शुक्र	31/05/1958	सूर्य	04/02/1961	चंद्र	03/03/1963	राहु	08/01/1964
शुक्र	03/11/1955	सूर्य	28/07/1958	चंद्र	02/05/1961	मंगल	28/03/1963	गुरु	22/01/1964
सूर्य	21/12/1955	चंद्र	01/11/1958	मंगल	01/07/1961	राहु	30/05/1963	शनि	09/02/1964
चंद्र	12/03/1956	मंगल	07/01/1959	राहु	03/12/1961	गुरु	26/07/1963	बुध	24/02/1964
मंगल	07/05/1956	राहु	30/06/1959	गुरु	20/04/1962	शनि	02/10/1963	केतु	01/03/1964
राहु	01/10/1956	गुरु	01/12/1959	शनि	01/10/1962	बुध	01/12/1963	शुक्र	20/03/1964

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
20/03/1964		18/09/1964		24/01/1965		19/12/1965		07/10/1966	
18/09/1964		24/01/1965		19/12/1965		07/10/1966		19/09/1967	
चंद्र	04/04/1964	मंगल	26/09/1964	राहु	14/03/1965	गुरु	27/01/1966	शनि	01/12/1966
मंगल	15/04/1964	राहु	15/10/1964	गुरु	27/04/1965	शनि	14/03/1966	बुध	19/01/1967
राहु	12/05/1964	गुरु	01/11/1964	शनि	18/06/1965	बुध	25/04/1966	केतु	08/02/1967
गुरु	05/06/1964	शनि	21/11/1964	बुध	04/08/1965	केतु	12/05/1966	शुक्र	07/04/1967
शनि	04/07/1964	बुध	09/12/1964	केतु	23/08/1965	शुक्र	29/06/1966	सूर्य	25/04/1967
बुध	30/07/1964	केतु	17/12/1964	शुक्र	17/10/1965	सूर्य	14/07/1966	चंद्र	24/05/1967
केतु	10/08/1964	शुक्र	07/01/1965	सूर्य	02/11/1965	चंद्र	07/08/1966	मंगल	13/06/1967
शुक्र	09/09/1964	सूर्य	14/01/1965	चंद्र	30/11/1965	मंगल	24/08/1966	राहु	04/08/1967
सूर्य	18/09/1964	चंद्र	24/01/1965	मंगल	19/12/1965	राहु	07/10/1966	गुरु	19/09/1967

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
19/09/1967		26/07/1968		30/11/1968		01/12/1969		01/10/1970	
26/07/1968		30/11/1968		01/12/1969		01/10/1970		02/05/1971	
बुध	02/11/1967	केतु	02/08/1968	शुक्र	30/01/1969	चंद्र	26/12/1969	मंगल	13/10/1970
केतु	20/11/1967	शुक्र	23/08/1968	सूर्य	18/02/1969	मंगल	13/01/1970	राहु	14/11/1970
शुक्र	11/01/1968	सूर्य	30/08/1968	चंद्र	20/03/1969	राहु	27/02/1970	गुरु	13/12/1970
सूर्य	26/01/1968	चंद्र	09/09/1968	मंगल	10/04/1969	गुरु	09/04/1970	शनि	16/01/1971
चंद्र	21/02/1968	मंगल	17/09/1968	राहु	04/06/1969	शनि	27/05/1970	बुध	15/02/1971
मंगल	10/03/1968	राहु	06/10/1968	गुरु	23/07/1969	बुध	09/07/1970	केतु	27/02/1971
राहु	26/04/1968	गुरु	23/10/1968	शनि	19/09/1969	केतु	27/07/1970	शुक्र	04/04/1971
गुरु	06/06/1968	शनि	12/11/1968	बुध	09/11/1969	शुक्र	16/09/1970	सूर्य	14/04/1971
शनि	26/07/1968	बुध	30/11/1968	केतु	01/12/1969	सूर्य	01/10/1970	चंद्र	02/05/1971

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
02/05/1971		31/10/1972		02/03/1974		01/10/1975		02/03/1977	
31/10/1972		02/03/1974		01/10/1975		02/03/1977		01/10/1977	
राहु	23/07/1971	गुरु	04/01/1973	शनि	02/06/1974	बुध	14/12/1975	केतु	14/03/1977
गुरु	04/10/1971	शनि	22/03/1973	बुध	22/08/1974	केतु	13/01/1976	शुक्र	19/04/1977
शनि	30/12/1971	बुध	30/05/1973	केतु	25/09/1974	शुक्र	08/04/1976	सूर्य	29/04/1977
बुध	17/03/1972	केतु	27/06/1973	शुक्र	31/12/1974	सूर्य	04/05/1976	चंद्र	17/05/1977
केतु	18/04/1972	शुक्र	17/09/1973	सूर्य	28/01/1975	चंद्र	16/06/1976	मंगल	29/05/1977
शुक्र	18/07/1972	सूर्य	11/10/1973	चंद्र	18/03/1975	मंगल	16/07/1976	राहु	30/06/1977
सूर्य	14/08/1972	चंद्र	20/11/1973	मंगल	20/04/1975	राहु	02/10/1976	गुरु	29/07/1977
चंद्र	29/09/1972	मंगल	19/12/1973	राहु	16/07/1975	गुरु	10/12/1976	शनि	01/09/1977
मंगल	31/10/1972	राहु	02/03/1974	गुरु	01/10/1975	शनि	02/03/1977	बुध	01/10/1977

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
01/10/1977		02/06/1979		01/12/1979		28/04/1980		17/05/1981	
02/06/1979		01/12/1979		28/04/1980		17/05/1981		23/04/1982	
शुक्र	10/01/1978	सूर्य	11/06/1979	मंगल	10/12/1979	राहु	25/06/1980	गुरु	01/07/1981
सूर्य	10/02/1978	चंद्र	26/06/1979	राहु	01/01/1980	गुरु	15/08/1980	शनि	24/08/1981
चंद्र	01/04/1978	मंगल	07/07/1979	गुरु	21/01/1980	शनि	15/10/1980	बुध	12/10/1981
मंगल	07/05/1978	राहु	03/08/1979	शनि	14/02/1980	बुध	08/12/1980	केतु	31/10/1981
राहु	06/08/1978	गुरु	27/08/1979	बुध	06/03/1980	केतु	30/12/1980	शुक्र	27/12/1981
गुरु	26/10/1978	शनि	25/09/1979	केतु	15/03/1980	शुक्र	04/03/1981	सूर्य	13/01/1982
शनि	31/01/1979	बुध	21/10/1979	शुक्र	08/04/1980	सूर्य	23/03/1981	चंद्र	11/02/1982
बुध	27/04/1979	केतु	01/11/1979	सूर्य	16/04/1980	चंद्र	24/04/1981	मंगल	03/03/1982
केतु	02/06/1979	शुक्र	01/12/1979	चंद्र	28/04/1980	मंगल	17/05/1981	राहु	23/04/1982

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
23/04/1982		02/06/1983		29/05/1984		25/10/1984		25/12/1985	
02/06/1983		29/05/1984		25/10/1984		25/12/1985		02/05/1986	
शनि	26/06/1982	बुध	23/07/1983	केतु	06/06/1984	शुक्र	04/01/1985	सूर्य	31/12/1985
बुध	22/08/1982	केतु	13/08/1983	शुक्र	01/07/1984	सूर्य	25/01/1985	चंद्र	11/01/1986
केतु	15/09/1982	शुक्र	12/10/1983	सूर्य	09/07/1984	चंद्र	02/03/1985	मंगल	18/01/1986
शुक्र	21/11/1982	सूर्य	30/10/1983	चंद्र	21/07/1984	मंगल	27/03/1985	राहु	07/02/1986
सूर्य	11/12/1982	चंद्र	30/11/1983	मंगल	30/07/1984	राहु	29/05/1985	गुरु	24/02/1986
चंद्र	14/01/1983	मंगल	21/12/1983	राहु	21/08/1984	गुरु	25/07/1985	शनि	16/03/1986
मंगल	07/02/1983	राहु	13/02/1984	गुरु	10/09/1984	शनि	01/10/1985	बुध	03/04/1986
राहु	09/04/1983	गुरु	01/04/1984	शनि	04/10/1984	बुध	30/11/1985	केतु	11/04/1986
गुरु	02/06/1983	शनि	29/05/1984	बुध	25/10/1984	केतु	25/12/1985	शुक्र	02/05/1986

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
02/05/1986		01/12/1986		13/08/1989		07/01/1992		13/11/1994	
01/12/1986		13/08/1989		07/01/1992		13/11/1994		01/06/1997	
चंद्र	20/05/1986	राहु	28/04/1987	गुरु	08/12/1989	शनि	19/06/1992	बुध	25/03/1995
मंगल	01/06/1986	गुरु	06/09/1987	शनि	26/04/1990	बुध	14/11/1992	केतु	18/05/1995
राहु	03/07/1986	शनि	09/02/1988	बुध	28/08/1990	केतु	14/01/1993	शुक्र	20/10/1995
गुरु	31/07/1986	बुध	28/06/1988	केतु	18/10/1990	शुक्र	06/07/1993	सूर्य	06/12/1995
शनि	03/09/1986	केतु	25/08/1988	शुक्र	13/03/1991	सूर्य	27/08/1993	चंद्र	21/02/1996
बुध	03/10/1986	शुक्र	05/02/1989	सूर्य	26/04/1991	चंद्र	22/11/1993	मंगल	16/04/1996
केतु	16/10/1986	सूर्य	26/03/1989	चंद्र	08/07/1991	मंगल	22/01/1994	राहु	02/09/1996
शुक्र	20/11/1986	चंद्र	17/06/1989	मंगल	28/08/1991	राहु	27/06/1994	गुरु	05/01/1997
सूर्य	01/12/1986	मंगल	13/08/1989	राहु	07/01/1992	गुरु	13/11/1994	शनि	01/06/1997

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
01/06/1997		20/06/1998		19/06/2001		14/05/2002		13/11/2003	
20/06/1998		19/06/2001		14/05/2002		13/11/2003		30/11/2004	
केतु	23/06/1997	शुक्र	19/12/1998	सूर्य	06/07/2001	चंद्र	29/06/2002	मंगल	05/12/2003
शुक्र	26/08/1997	सूर्य	12/02/1999	चंद्र	02/08/2001	मंगल	31/07/2002	राहु	01/02/2004
सूर्य	14/09/1997	चंद्र	14/05/1999	मंगल	21/08/2001	राहु	21/10/2002	गुरु	23/03/2004
चंद्र	16/10/1997	मंगल	17/07/1999	राहु	10/10/2001	गुरु	02/01/2003	शनि	23/05/2004
मंगल	08/11/1997	राहु	29/12/1999	गुरु	22/11/2001	शनि	30/03/2003	बुध	16/07/2004
राहु	04/01/1998	गुरु	23/05/2000	शनि	13/01/2002	बुध	15/06/2003	केतु	07/08/2004
गुरु	24/02/1998	शनि	12/11/2000	बुध	01/03/2002	केतु	17/07/2003	शुक्र	10/10/2004
शनि	26/04/1998	बुध	16/04/2001	केतु	20/03/2002	शुक्र	16/10/2003	सूर्य	29/10/2004
बुध	20/06/1998	केतु	19/06/2001	शुक्र	14/05/2002	सूर्य	13/11/2003	चंद्र	30/11/2004

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
30/11/2004		19/01/2007		01/08/2009		07/11/2011		13/10/2012	
19/01/2007		01/08/2009		07/11/2011		13/10/2012		14/06/2015	
गुरु	14/03/2005	शनि	14/06/2007	बुध	26/11/2009	केतु	27/11/2011	शुक्र	24/03/2013
शनि	16/07/2005	बुध	23/10/2007	केतु	13/01/2010	शुक्र	22/01/2012	सूर्य	12/05/2013
बुध	03/11/2005	केतु	16/12/2007	शुक्र	31/05/2010	सूर्य	09/02/2012	चंद्र	01/08/2013
केतु	18/12/2005	शुक्र	18/05/2008	सूर्य	12/07/2010	चंद्र	08/03/2012	मंगल	27/09/2013
शुक्र	27/04/2006	सूर्य	04/07/2008	चंद्र	19/09/2010	मंगल	28/03/2012	राहु	20/02/2014
सूर्य	05/06/2006	चंद्र	19/09/2008	मंगल	06/11/2010	राहु	18/05/2012	गुरु	30/06/2014
चंद्र	09/08/2006	मंगल	12/11/2008	राहु	10/03/2011	गुरु	02/07/2012	शनि	01/12/2014
मंगल	24/09/2006	राहु	31/03/2009	गुरु	29/06/2011	शनि	25/08/2012	बुध	18/04/2015
राहु	19/01/2007	गुरु	01/08/2009	शनि	07/11/2011	बुध	13/10/2012	केतु	14/06/2015

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
14/06/2015		01/04/2016		01/08/2017		08/07/2018		30/11/2020	
01/04/2016		01/08/2017		08/07/2018		30/11/2020		04/12/2023	
सूर्य	28/06/2015	चंद्र	11/05/2016	मंगल	21/08/2017	राहु	16/11/2018	शनि	23/05/2021
चंद्र	23/07/2015	मंगल	09/06/2016	राहु	11/10/2017	गुरु	13/03/2019	बुध	26/10/2021
मंगल	09/08/2015	राहु	21/08/2016	गुरु	25/11/2017	शनि	30/07/2019	केतु	29/12/2021
राहु	22/09/2015	गुरु	25/10/2016	शनि	18/01/2018	बुध	01/12/2019	शुक्र	30/06/2022
गुरु	30/10/2015	शनि	10/01/2017	बुध	08/03/2018	केतु	21/01/2020	सूर्य	24/08/2022
शनि	16/12/2015	बुध	20/03/2017	केतु	28/03/2018	शुक्र	15/06/2020	चंद्र	24/11/2022
बुध	26/01/2016	केतु	17/04/2017	शुक्र	23/05/2018	सूर्य	29/07/2020	मंगल	27/01/2023
केतु	12/02/2016	शुक्र	08/07/2017	सूर्य	09/06/2018	चंद्र	10/10/2020	राहु	11/07/2023
शुक्र	01/04/2016	सूर्य	01/08/2017	चंद्र	08/07/2018	मंगल	30/11/2020	गुरु	04/12/2023

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
04/12/2023		13/08/2026		22/09/2027		22/11/2030		04/11/2031	
13/08/2026		22/09/2027		22/11/2030		04/11/2031		04/06/2033	
बुध	21/04/2024	केतु	06/09/2026	शुक्र	02/04/2028	सूर्य	09/12/2030	चंद्र	22/12/2031
केतु	18/06/2024	शुक्र	12/11/2026	सूर्य	30/05/2028	चंद्र	07/01/2031	मंगल	25/01/2032
शुक्र	29/11/2024	सूर्य	03/12/2026	चंद्र	03/09/2028	मंगल	27/01/2031	राहु	20/04/2032
सूर्य	17/01/2025	चंद्र	05/01/2027	मंगल	10/11/2028	राहु	20/03/2031	गुरु	07/07/2032
चंद्र	09/04/2025	मंगल	29/01/2027	राहु	02/05/2029	गुरु	06/05/2031	शनि	06/10/2032
मंगल	05/06/2025	राहु	31/03/2027	गुरु	03/10/2029	शनि	30/06/2031	बुध	27/12/2032
राहु	31/10/2025	गुरु	24/05/2027	शनि	04/04/2030	बुध	18/08/2031	केतु	30/01/2033
गुरु	11/03/2026	शनि	27/07/2027	बुध	15/09/2030	केतु	07/09/2031	शुक्र	06/05/2033
शनि	13/08/2026	बुध	22/09/2027	केतु	22/11/2030	शुक्र	04/11/2031	सूर्य	04/06/2033

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
04/06/2033		14/07/2034		20/05/2037		01/12/2039		29/04/2042	
14/07/2034		20/05/2037		01/12/2039		29/04/2042		26/04/2043	
मंगल	28/06/2033	राहु	17/12/2034	गुरु	20/09/2037	बुध	04/04/2040	केतु	20/05/2042
राहु	27/08/2033	गुरु	05/05/2035	शनि	14/02/2038	केतु	25/05/2040	शुक्र	19/07/2042
गुरु	20/10/2033	शनि	17/10/2035	बुध	25/06/2038	शुक्र	19/10/2040	सूर्य	06/08/2042
शनि	23/12/2033	बुध	12/03/2036	केतु	18/08/2038	सूर्य	02/12/2040	चंद्र	06/09/2042
बुध	19/02/2034	केतु	12/05/2036	शुक्र	19/01/2039	चंद्र	13/02/2041	मंगल	27/09/2042
केतु	14/03/2034	शुक्र	01/11/2036	सूर्य	06/03/2039	मंगल	05/04/2041	राहु	20/11/2042
शुक्र	21/05/2034	सूर्य	23/12/2036	चंद्र	22/05/2039	राहु	15/08/2041	गुरु	07/01/2043
सूर्य	10/06/2034	चंद्र	20/03/2037	मंगल	15/07/2039	गुरु	11/12/2041	शनि	06/03/2043
चंद्र	14/07/2034	मंगल	20/05/2037	राहु	01/12/2039	शनि	29/04/2042	बुध	26/04/2043

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
26/04/2043		24/02/2046		31/12/2046		01/06/2048		29/05/2049	
24/02/2046		31/12/2046		01/06/2048		29/05/2049		16/12/2051	
शुक्र	15/10/2043	सूर्य	11/03/2046	चंद्र	12/02/2047	मंगल	22/06/2048	राहु	16/10/2049
सूर्य	06/12/2043	चंद्र	06/04/2046	मंगल	15/03/2047	राहु	15/08/2048	गुरु	17/02/2050
चंद्र	01/03/2044	मंगल	24/04/2046	राहु	31/05/2047	गुरु	03/10/2048	शनि	14/07/2050
मंगल	01/05/2044	राहु	10/06/2046	गुरु	08/08/2047	शनि	29/11/2048	बुध	23/11/2050
राहु	03/10/2044	गुरु	21/07/2046	शनि	29/10/2047	बुध	19/01/2049	केतु	17/01/2051
गुरु	18/02/2045	शनि	08/09/2046	बुध	10/01/2048	केतु	09/02/2049	शुक्र	21/06/2051
शनि	01/08/2045	बुध	22/10/2046	केतु	10/02/2048	शुक्र	11/04/2049	सूर्य	06/08/2051
बुध	25/12/2045	केतु	10/11/2046	शुक्र	06/05/2048	सूर्य	29/04/2049	चंद्र	23/10/2051
केतु	24/02/2046	शुक्र	31/12/2046	सूर्य	01/06/2048	चंद्र	29/05/2049	मंगल	16/12/2051

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
16/12/2051		23/03/2054		30/11/2056		29/04/2057		29/06/2058	
23/03/2054		30/11/2056		29/04/2057		29/06/2058		03/11/2058	
गुरु	05/04/2052	शनि	26/08/2054	केतु	09/12/2056	शुक्र	09/07/2057	सूर्य	05/07/2058
शनि	14/08/2052	बुध	12/01/2055	शुक्र	03/01/2057	सूर्य	30/07/2057	चंद्र	16/07/2058
बुध	09/12/2052	केतु	11/03/2055	सूर्य	10/01/2057	चंद्र	03/09/2057	मंगल	23/07/2058
केतु	26/01/2053	शुक्र	21/08/2055	चंद्र	23/01/2057	मंगल	28/09/2057	राहु	11/08/2058
शुक्र	13/06/2053	सूर्य	10/10/2055	मंगल	01/02/2057	राहु	01/12/2057	गुरु	28/08/2058
सूर्य	25/07/2053	चंद्र	30/12/2055	राहु	23/02/2057	गुरु	27/01/2058	शनि	18/09/2058
चंद्र	02/10/2053	मंगल	26/02/2056	गुरु	15/03/2057	शनि	04/04/2058	बुध	06/10/2058
मंगल	19/11/2053	राहु	22/07/2056	शनि	07/04/2057	बुध	04/06/2058	केतु	13/10/2058
राहु	23/03/2054	गुरु	30/11/2056	बुध	29/04/2057	केतु	29/06/2058	शुक्र	03/11/2058

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
03/11/2058		05/06/2059		01/11/2059		18/11/2060		25/10/2061	
05/06/2059		01/11/2059		18/11/2060		25/10/2061		04/12/2062	
चंद्र	21/11/2058	मंगल	13/06/2059	राहु	28/12/2059	गुरु	03/01/2061	शनि	28/12/2061
मंगल	04/12/2058	राहु	06/07/2059	गुरु	17/02/2060	शनि	26/02/2061	बुध	24/02/2062
राहु	05/01/2059	गुरु	26/07/2059	शनि	18/04/2060	बुध	15/04/2061	केतु	19/03/2062
गुरु	02/02/2059	शनि	18/08/2059	बुध	11/06/2060	केतु	05/05/2061	शुक्र	26/05/2062
शनि	08/03/2059	बुध	08/09/2059	केतु	04/07/2060	शुक्र	01/07/2061	सूर्य	15/06/2062
बुध	07/04/2059	केतु	17/09/2059	शुक्र	06/09/2060	सूर्य	18/07/2061	चंद्र	19/07/2062
केतु	19/04/2059	शुक्र	12/10/2059	सूर्य	25/09/2060	चंद्र	15/08/2061	मंगल	11/08/2062
शुक्र	25/05/2059	सूर्य	19/10/2059	चंद्र	27/10/2060	मंगल	04/09/2061	राहु	11/10/2062
सूर्य	05/06/2059	चंद्र	01/11/2059	मंगल	18/11/2060	राहु	25/10/2061	गुरु	04/12/2062

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - बुध - राहु		शनि - बुध - गुरु		शनि - बुध - शनि		शनि - केतु - केतु	
05/06/2025 14:19		31/10/2025 01:35		11/03/2026 03:36		13/08/2026 19:30	
31/10/2025 01:35		11/03/2026 03:36		13/08/2026 19:30		06/09/2026 10:15	
राहु	27/06/2025 17:12	गुरु	17/11/2025 13:03	शनि	04/04/2026 19:07	केतु	15/08/2026 04:34
गुरु	17/07/2025 09:07	शनि	08/12/2025 07:11	बुध	26/04/2026 20:23	शुक्र	19/08/2026 03:01
शनि	09/08/2025 17:30	बुध	26/12/2025 20:52	केतु	05/05/2026 22:18	सूर्य	20/08/2026 07:22
बुध	30/08/2025 14:53	केतु	03/01/2026 12:23	शुक्र	31/05/2026 20:57	चंद्र	22/08/2026 06:35
केतु	08/09/2025 05:21	शुक्र	25/01/2026 08:43	सूर्य	08/06/2026 15:45	मंगल	23/08/2026 15:39
शुक्र	02/10/2025 19:14	सूर्य	31/01/2026 22:01	चंद्र	21/06/2026 15:04	राहु	27/08/2026 04:40
सूर्य	10/10/2025 04:11	चंद्र	11/02/2026 20:11	मंगल	30/06/2026 17:00	गुरु	30/08/2026 08:14
चंद्र	22/10/2025 11:08	मंगल	19/02/2026 11:42	राहु	24/07/2026 01:23	शनि	03/09/2026 01:58
मंगल	31/10/2025 01:35	राहु	11/03/2026 03:36	गुरु	13/08/2026 19:30	बुध	06/09/2026 10:15

शनि - केतु - शुक्र		शनि - केतु - सूर्य		शनि - केतु - चंद्र		शनि - केतु - मंगल	
06/09/2026 10:15		12/11/2026 21:32		03/12/2026 03:19		05/01/2027 20:57	
12/11/2026 21:32		03/12/2026 03:19		05/01/2027 20:57		29/01/2027 11:42	
शुक्र	17/09/2026 16:08	सूर्य	13/11/2026 21:49	चंद्र	05/12/2026 22:47	मंगल	07/01/2027 06:00
सूर्य	21/09/2026 01:06	चंद्र	15/11/2026 14:18	मंगल	07/12/2026 22:00	राहु	10/01/2027 19:01
चंद्र	26/09/2026 16:02	मंगल	16/11/2026 18:38	राहु	12/12/2026 23:27	गुरु	13/01/2027 22:35
मंगल	30/09/2026 14:30	राहु	19/11/2026 19:30	गुरु	17/12/2026 11:24	शनि	17/01/2027 16:19
राहु	10/10/2026 17:23	गुरु	22/11/2026 12:16	शनि	22/12/2026 19:36	बुध	21/01/2027 00:37
गुरु	19/10/2026 17:17	शनि	25/11/2026 17:11	बुध	27/12/2026 14:18	केतु	22/01/2027 09:40
शनि	30/10/2026 09:40	बुध	28/11/2026 14:01	केतु	29/12/2026 13:32	शुक्र	26/01/2027 08:08
बुध	08/11/2026 23:04	केतु	29/11/2026 18:21	शुक्र	04/01/2027 04:28	सूर्य	27/01/2027 12:28
केतु	12/11/2026 21:32	शुक्र	03/12/2026 03:19	सूर्य	05/01/2027 20:57	चंद्र	29/01/2027 11:42

शनि - केतु - राहु		शनि - केतु - गुरु		शनि - केतु - शनि		शनि - केतु - बुध	
29/01/2027 11:42		31/03/2027 05:02		24/05/2027 04:28		27/07/2027 06:46	
31/03/2027 05:02		24/05/2027 04:28		27/07/2027 06:46		22/09/2027 15:09	
राहु	07/02/2027 14:18	गुरु	07/04/2027 09:46	शनि	03/06/2027 08:02	बुध	04/08/2027 09:46
गुरु	15/02/2027 16:37	शनि	15/04/2027 22:52	बुध	12/06/2027 09:57	केतु	07/08/2027 18:03
शनि	25/02/2027 07:21	बुध	23/04/2027 14:23	केतु	16/06/2027 03:41	शुक्र	17/08/2027 07:27
बुध	05/03/2027 21:49	केतु	26/04/2027 17:57	शुक्र	26/06/2027 20:04	सूर्य	20/08/2027 04:16
केतु	09/03/2027 10:49	शुक्र	05/05/2027 17:52	सूर्य	30/06/2027 00:59	चंद्र	24/08/2027 22:58
शुक्र	19/03/2027 13:43	सूर्य	08/05/2027 10:38	चंद्र	05/07/2027 09:11	मंगल	28/08/2027 07:15
सूर्य	22/03/2027 14:35	चंद्र	12/05/2027 22:35	मंगल	09/07/2027 02:55	राहु	05/09/2027 21:43
चंद्र	27/03/2027 16:02	मंगल	16/05/2027 02:09	राहु	18/07/2027 17:40	गुरु	13/09/2027 13:14
मंगल	31/03/2027 05:02	राहु	24/05/2027 04:28	गुरु	27/07/2027 06:46	शनि	22/09/2027 15:09

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शुक्र - शुक्र	
22/09/2027 15:09	
02/04/2028 09:39	
शुक्र	24/10/2027 18:14
सूर्य	03/11/2027 09:34
चंद्र	19/11/2027 11:06
मंगल	30/11/2027 16:59
राहु	29/12/2027 14:58
गुरु	24/01/2028 07:50
शनि	23/02/2028 20:21
बुध	22/03/2028 03:47
केतु	02/04/2028 09:39

शनि - शुक्र - सूर्य	
02/04/2028 09:39	
30/05/2028 05:36	
सूर्य	05/04/2028 07:03
चंद्र	10/04/2028 02:43
मंगल	13/04/2028 11:41
राहु	22/04/2028 03:52
गुरु	29/04/2028 20:56
शनि	09/05/2028 00:41
बुध	17/05/2028 05:19
केतु	20/05/2028 14:17
शुक्र	30/05/2028 05:36

शनि - शुक्र - चंद्र	
30/05/2028 05:36	
03/09/2028 14:51	
चंद्र	07/06/2028 06:23
मंगल	12/06/2028 21:19
राहु	27/06/2028 08:18
गुरु	10/07/2028 04:44
शनि	25/07/2028 11:00
बुध	08/08/2028 02:43
केतु	13/08/2028 17:39
शुक्र	29/08/2028 19:12
सूर्य	03/09/2028 14:51

शनि - शुक्र - मंगल	
03/09/2028 14:51	
10/11/2028 02:08	
मंगल	07/09/2028 13:19
राहु	17/09/2028 16:12
गुरु	26/09/2028 16:06
शनि	07/10/2028 08:30
बुध	16/10/2028 21:53
केतु	20/10/2028 20:21
शुक्र	01/11/2028 02:14
सूर्य	04/11/2028 11:11
चंद्र	10/11/2028 02:08

शनि - शुक्र - राहु	
10/11/2028 02:08	
02/05/2029 13:59	
राहु	06/12/2028 02:42
गुरु	29/12/2028 05:53
शनि	25/01/2029 17:10
बुध	19/02/2029 07:03
केतु	01/03/2029 09:56
शुक्र	30/03/2029 07:55
सूर्य	08/04/2029 00:06
चंद्र	22/04/2029 11:05
मंगल	02/05/2029 13:59

शनि - शुक्र - गुरु	
02/05/2029 13:59	
03/10/2029 19:11	
गुरु	23/05/2029 03:28
शनि	16/06/2029 13:30
बुध	08/07/2029 09:50
केतु	17/07/2029 09:44
शुक्र	12/08/2029 02:36
सूर्य	19/08/2029 19:40
चंद्र	01/09/2029 16:06
मंगल	10/09/2029 16:00
राहु	03/10/2029 19:11

शनि - शुक्र - शनि	
03/10/2029 19:11	
04/04/2030 22:21	
शनि	01/11/2029 19:05
बुध	27/11/2029 17:44
केतु	08/12/2029 10:07
शुक्र	07/01/2030 22:39
सूर्य	17/01/2030 02:24
चंद्र	01/02/2030 08:40
मंगल	12/02/2030 01:03
राहु	11/03/2030 12:20
गुरु	04/04/2030 22:21

शनि - शुक्र - बुध	
04/04/2030 22:21	
15/09/2030 18:53	
बुध	28/04/2030 03:28
केतु	07/05/2030 16:52
शुक्र	04/06/2030 00:17
सूर्य	12/06/2030 04:54
चंद्र	25/06/2030 20:37
मंगल	05/07/2030 10:01
राहु	29/07/2030 23:54
गुरु	20/08/2030 20:14
शनि	15/09/2030 18:53

शनि - शुक्र - केतु	
15/09/2030 18:53	
22/11/2030 06:09	
केतु	19/09/2030 17:20
शुक्र	30/09/2030 23:13
सूर्य	04/10/2030 08:11
चंद्र	09/10/2030 23:07
मंगल	13/10/2030 21:35
राहु	24/10/2030 00:28
गुरु	02/11/2030 00:22
शनि	12/11/2030 16:46
बुध	22/11/2030 06:09

शनि - सूर्य - सूर्य	
22/11/2030 06:09	
09/12/2030 14:32	
सूर्य	23/11/2030 02:58
चंद्र	24/11/2030 13:40
मंगल	25/11/2030 13:58
राहु	28/11/2030 04:25
गुरु	30/11/2030 11:56
शनि	03/12/2030 05:52
बुध	05/12/2030 16:51
केतु	06/12/2030 17:09
शुक्र	09/12/2030 14:32

शनि - सूर्य - चंद्र	
09/12/2030 14:32	
07/01/2031 12:31	
चंद्र	12/12/2030 00:22
मंगल	13/12/2030 16:51
राहु	18/12/2030 00:57
गुरु	21/12/2030 21:29
शनि	26/12/2030 11:22
बुध	30/12/2030 13:40
केतु	01/01/2031 06:09
शुक्र	06/01/2031 01:49
सूर्य	07/01/2031 12:31

शनि - सूर्य - मंगल	
07/01/2031 12:31	
27/01/2031 18:18	
मंगल	08/01/2031 16:51
राहु	11/01/2031 17:43
गुरु	14/01/2031 10:29
शनि	17/01/2031 15:24
बुध	20/01/2031 12:14
केतु	21/01/2031 16:34
शुक्र	25/01/2031 01:32
सूर्य	26/01/2031 01:49
चंद्र	27/01/2031 18:18

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - सूर्य - राहु	
27/01/2031 18:18	
20/03/2031 19:27	
राहु	04/02/2031 13:40
गुरु	11/02/2031 12:14
शनि	19/02/2031 18:01
बुध	27/02/2031 02:58
केतु	02/03/2031 03:50
शुक्र	10/03/2031 20:02
सूर्य	13/03/2031 10:29
चंद्र	17/03/2031 18:35
मंगल	20/03/2031 19:27

शनि - सूर्य - गुरु	
20/03/2031 19:27	
06/05/2031 01:49	
गुरु	26/03/2031 23:30
शनि	03/04/2031 07:18
बुध	09/04/2031 20:37
केतु	12/04/2031 13:23
शुक्र	20/04/2031 06:26
सूर्य	22/04/2031 13:57
चंद्र	26/04/2031 10:29
मंगल	29/04/2031 03:16
राहु	06/05/2031 01:49

शनि - सूर्य - शनि	
06/05/2031 01:49	
30/06/2031 00:22	
शनि	14/05/2031 18:35
बुध	22/05/2031 13:23
केतु	25/05/2031 18:18
शुक्र	03/06/2031 22:03
सूर्य	06/06/2031 15:59
चंद्र	11/06/2031 05:52
मंगल	14/06/2031 10:47
राहु	22/06/2031 16:34
गुरु	30/06/2031 00:22

शनि - सूर्य - बुध	
30/06/2031 00:22	
18/08/2031 04:07	
बुध	06/07/2031 23:30
केतु	09/07/2031 20:19
शुक्र	18/07/2031 00:57
सूर्य	20/07/2031 11:56
चंद्र	24/07/2031 14:15
मंगल	27/07/2031 11:04
राहु	03/08/2031 20:02
गुरु	10/08/2031 09:20
शनि	18/08/2031 04:07

शनि - सूर्य - केतु	
18/08/2031 04:07	
07/09/2031 09:54	
केतु	19/08/2031 08:28
शुक्र	22/08/2031 17:25
सूर्य	23/08/2031 17:43
चंद्र	25/08/2031 10:12
मंगल	26/08/2031 14:32
राहु	29/08/2031 15:24
गुरु	01/09/2031 08:10
शनि	04/09/2031 13:05
बुध	07/09/2031 09:54

शनि - सूर्य - शुक्र	
07/09/2031 09:54	
04/11/2031 05:51	
शुक्र	17/09/2031 01:14
सूर्य	19/09/2031 22:38
चंद्र	24/09/2031 18:17
मंगल	28/09/2031 03:15
राहु	06/10/2031 19:27
गुरु	14/10/2031 12:30
शनि	23/10/2031 16:16
बुध	31/10/2031 20:54
केतु	04/11/2031 05:51

शनि - चंद्र - चंद्र	
04/11/2031 05:51	
22/12/2031 10:29	
चंद्र	08/11/2031 06:14
मंगल	11/11/2031 01:43
राहु	18/11/2031 07:12
गुरु	24/11/2031 17:25
शनि	02/12/2031 08:33
बुध	09/12/2031 04:25
केतु	11/12/2031 23:53
शुक्र	20/12/2031 00:39
सूर्य	22/12/2031 10:29

शनि - चंद्र - मंगल	
22/12/2031 10:29	
25/01/2032 04:07	
मंगल	24/12/2031 09:43
राहु	29/12/2031 11:09
गुरु	02/01/2032 23:06
शनि	08/01/2032 07:18
बुध	13/01/2032 02:00
केतु	15/01/2032 01:14
शुक्र	20/01/2032 16:10
सूर्य	22/01/2032 08:39
चंद्र	25/01/2032 04:07

शनि - चंद्र - राहु	
25/01/2032 04:07	
20/04/2032 22:03	
राहु	07/02/2032 04:24
गुरु	18/02/2032 18:00
शनि	03/03/2032 11:38
बुध	15/03/2032 18:34
केतु	20/03/2032 20:01
शुक्र	04/04/2032 07:00
सूर्य	08/04/2032 15:06
चंद्र	15/04/2032 20:36
मंगल	20/04/2032 22:03

शनि - चंद्र - गुरु	
20/04/2032 22:03	
07/07/2032 00:39	
गुरु	01/05/2032 04:47
शनि	13/05/2032 09:48
बुध	24/05/2032 07:58
केतु	28/05/2032 19:55
शुक्र	10/06/2032 16:21
सूर्य	14/06/2032 12:53
चंद्र	20/06/2032 23:06
मंगल	25/06/2032 11:03
राहु	07/07/2032 00:39

शनि - चंद्र - शनि	
07/07/2032 00:39	
06/10/2032 14:14	
शनि	21/07/2032 12:36
बुध	03/08/2032 11:55
केतु	08/08/2032 20:07
शुक्र	24/08/2032 02:23
सूर्य	28/08/2032 16:15
चंद्र	05/09/2032 07:23
मंगल	10/09/2032 15:35
राहु	24/09/2032 09:13
गुरु	06/10/2032 14:14

शनि - चंद्र - बुध	
06/10/2032 14:14	
27/12/2032 12:30	
बुध	18/10/2032 04:47
केतु	22/10/2032 23:29
शुक्र	05/11/2032 15:12
सूर्य	09/11/2032 17:30
चंद्र	16/11/2032 13:22
मंगल	21/11/2032 08:04
राहु	03/12/2032 15:00
गुरु	14/12/2032 13:10
शनि	27/12/2032 12:30

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - चंद्र - केतु		शनि - चंद्र - शुक्र		शनि - चंद्र - सूर्य		शनि - मंगल - मंगल	
27/12/2032 12:30		30/01/2033 06:08		06/05/2033 15:23		04/06/2033 13:21	
30/01/2033 06:08		06/05/2033 15:23		04/06/2033 13:21		28/06/2033 04:06	
केतु	29/12/2032 11:43	शुक्र	15/02/2033 07:40	सूर्य	08/05/2033 02:05	मंगल	05/06/2033 22:25
शुक्र	04/01/2033 02:40	सूर्य	20/02/2033 03:20	चंद्र	10/05/2033 11:55	राहु	09/06/2033 11:26
सूर्य	05/01/2033 19:09	चंद्र	28/02/2033 04:06	मंगल	12/05/2033 04:24	गुरु	12/06/2033 15:00
चंद्र	08/01/2033 14:37	मंगल	05/03/2033 19:03	राहु	16/05/2033 12:29	शनि	16/06/2033 08:44
मंगल	10/01/2033 13:51	राहु	20/03/2033 06:02	गुरु	20/05/2033 09:01	बुध	19/06/2033 17:01
राहु	15/01/2033 15:17	गुरु	02/04/2033 02:28	शनि	24/05/2033 22:54	केतु	21/06/2033 02:05
गुरु	20/01/2033 03:14	शनि	17/04/2033 08:44	बुध	29/05/2033 01:13	शुक्र	25/06/2033 00:32
शनि	25/01/2033 11:26	बुध	01/05/2033 00:26	केतु	30/05/2033 17:42	सूर्य	26/06/2033 04:52
बुध	30/01/2033 06:08	केतु	06/05/2033 15:23	शुक्र	04/06/2033 13:21	चंद्र	28/06/2033 04:06

शनि - मंगल - राहु		शनि - मंगल - गुरु		शनि - मंगल - शनि		शनि - मंगल - बुध	
28/06/2033 04:06		27/08/2033 21:27		20/10/2033 20:52		23/12/2033 23:11	
27/08/2033 21:27		20/10/2033 20:52		23/12/2033 23:11		19/02/2034 07:34	
राहु	07/07/2033 06:42	गुरु	04/09/2033 02:10	शनि	31/10/2033 00:26	बुध	01/01/2034 02:10
गुरु	15/07/2033 09:01	शनि	12/09/2033 15:17	बुध	09/11/2033 02:22	केतु	04/01/2034 10:27
शनि	24/07/2033 23:46	बुध	20/09/2033 06:48	केतु	12/11/2033 20:06	शुक्र	13/01/2034 23:51
बुध	02/08/2033 14:13	केतु	23/09/2033 10:22	शुक्र	23/11/2033 12:29	सूर्य	16/01/2034 20:40
केतु	06/08/2033 03:14	शुक्र	02/10/2033 10:16	सूर्य	26/11/2033 17:24	चंद्र	21/01/2034 15:22
शुक्र	16/08/2033 06:07	सूर्य	05/10/2033 03:02	चंद्र	02/12/2033 01:35	मंगल	24/01/2034 23:40
सूर्य	19/08/2033 07:00	चंद्र	09/10/2033 14:59	मंगल	05/12/2033 19:20	राहु	02/02/2034 14:07
चंद्र	24/08/2033 08:26	मंगल	12/10/2033 18:33	राहु	15/12/2033 10:04	गुरु	10/02/2034 05:38
मंगल	27/08/2033 21:27	राहु	20/10/2033 20:52	गुरु	23/12/2033 23:11	शनि	19/02/2034 07:34

शनि - मंगल - केतु		शनि - मंगल - शुक्र		शनि - मंगल - सूर्य		शनि - मंगल - चंद्र	
19/02/2034 07:34		14/03/2034 22:19		21/05/2034 09:35		10/06/2034 15:22	
14/03/2034 22:19		21/05/2034 09:35		10/06/2034 15:22		14/07/2034 09:00	
केतु	20/02/2034 16:37	शुक्र	26/03/2034 04:11	सूर्य	22/05/2034 09:52	चंद्र	13/06/2034 10:50
शुक्र	24/02/2034 15:05	सूर्य	29/03/2034 13:09	चंद्र	24/05/2034 02:21	मंगल	15/06/2034 10:04
सूर्य	25/02/2034 19:25	चंद्र	04/04/2034 04:06	मंगल	25/05/2034 06:42	राहु	20/06/2034 11:31
चंद्र	27/02/2034 18:39	मंगल	08/04/2034 02:33	राहु	28/05/2034 07:34	गुरु	24/06/2034 23:28
मंगल	01/03/2034 03:43	राहु	18/04/2034 05:27	गुरु	31/05/2034 00:20	शनि	30/06/2034 07:39
राहु	04/03/2034 16:43	गुरु	27/04/2034 05:21	शनि	03/06/2034 05:15	बुध	05/07/2034 02:21
गुरु	07/03/2034 20:17	शनि	07/05/2034 21:44	बुध	06/06/2034 02:04	केतु	07/07/2034 01:35
शनि	11/03/2034 14:01	बुध	17/05/2034 11:08	केतु	07/06/2034 06:24	शुक्र	12/07/2034 16:31
बुध	14/03/2034 22:19	केतु	21/05/2034 09:35	शुक्र	10/06/2034 15:22	सूर्य	14/07/2034 09:00

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - बुध - राहु - मंगल	
22/10/2025 11:08	
31/10/2025 01:35	
मंगल	22/10/2025 23:10
राहु	24/10/2025 06:08
गुरु	25/10/2025 09:40
शनि	26/10/2025 18:21
बुध	27/10/2025 23:36
केतु	28/10/2025 11:39
शुक्र	29/10/2025 22:04
सूर्य	30/10/2025 08:23
चंद्र	31/10/2025 01:35

शनि - बुध - गुरु - गुरु	
31/10/2025 01:35	
17/11/2025 13:03	
गुरु	02/11/2025 09:31
शनि	05/11/2025 03:56
बुध	07/11/2025 15:21
केतु	08/11/2025 15:50
शुक्र	11/11/2025 13:44
सूर्य	12/11/2025 10:43
चंद्र	13/11/2025 21:40
मंगल	14/11/2025 22:08
राहु	17/11/2025 13:03

शनि - बुध - गुरु - शनि	
17/11/2025 13:03	
08/12/2025 07:11	
शनि	20/11/2025 19:56
बुध	23/11/2025 18:30
केतु	24/11/2025 23:33
शुक्र	28/11/2025 10:34
सूर्य	29/11/2025 11:29
चंद्र	01/12/2025 04:59
मंगल	02/12/2025 10:03
राहु	05/12/2025 12:46
गुरु	08/12/2025 07:11

शनि - बुध - गुरु - बुध	
08/12/2025 07:11	
26/12/2025 20:52	
बुध	10/12/2025 22:19
केतु	12/12/2025 00:19
शुक्र	15/12/2025 02:36
सूर्य	16/12/2025 00:53
चंद्र	17/12/2025 14:01
मंगल	18/12/2025 16:01
राहु	21/12/2025 10:52
गुरु	23/12/2025 22:18
शनि	26/12/2025 20:52

शनि - बुध - गुरु - केतु	
26/12/2025 20:52	
03/01/2026 12:23	
केतु	27/12/2025 07:34
शुक्र	28/12/2025 14:09
सूर्य	28/12/2025 23:20
चंद्र	29/12/2025 14:37
मंगल	30/12/2025 01:20
राहु	31/12/2025 04:51
गुरु	01/01/2026 05:19
शनि	02/01/2026 10:23
बुध	03/01/2026 12:23

शनि - बुध - गुरु - शुक्र	
03/01/2026 12:23	
25/01/2026 08:43	
शुक्र	07/01/2026 03:46
सूर्य	08/01/2026 05:59
चंद्र	10/01/2026 01:41
मंगल	11/01/2026 08:16
राहु	14/01/2026 14:55
गुरु	17/01/2026 12:50
शनि	20/01/2026 23:51
बुध	24/01/2026 02:08
केतु	25/01/2026 08:43

शनि - बुध - गुरु - सूर्य	
25/01/2026 08:43	
31/01/2026 22:01	
सूर्य	25/01/2026 16:35
चंद्र	26/01/2026 05:41
मंगल	26/01/2026 14:52
राहु	27/01/2026 14:28
गुरु	28/01/2026 11:26
शनि	29/01/2026 12:20
बुध	30/01/2026 10:38
केतु	30/01/2026 19:48
शुक्र	31/01/2026 22:01

शनि - बुध - गुरु - चंद्र	
31/01/2026 22:01	
11/02/2026 20:11	
चंद्र	01/02/2026 19:52
मंगल	02/02/2026 11:09
राहु	04/02/2026 02:29
गुरु	05/02/2026 13:26
शनि	07/02/2026 06:57
बुध	08/02/2026 20:05
केतु	09/02/2026 11:23
शुक्र	11/02/2026 07:05
सूर्य	11/02/2026 20:11

शनि - बुध - गुरु - मंगल	
11/02/2026 20:11	
19/02/2026 11:42	
मंगल	12/02/2026 06:53
राहु	13/02/2026 10:25
गुरु	14/02/2026 10:53
शनि	15/02/2026 15:57
बुध	16/02/2026 17:57
केतु	17/02/2026 04:39
शुक्र	18/02/2026 11:14
सूर्य	18/02/2026 20:25
चंद्र	19/02/2026 11:42

शनि - बुध - गुरु - राहु	
19/02/2026 11:42	
11/03/2026 03:36	
राहु	22/02/2026 10:29
गुरु	25/02/2026 01:25
शनि	28/02/2026 04:08
बुध	02/03/2026 22:59
केतु	04/03/2026 02:31
शुक्र	07/03/2026 09:10
सूर्य	08/03/2026 08:45
चंद्र	10/03/2026 00:05
मंगल	11/03/2026 03:36

शनि - बुध - शनि - शनि	
11/03/2026 03:36	
04/04/2026 19:07	
शनि	15/03/2026 01:16
बुध	18/03/2026 13:04
केतु	19/03/2026 23:34
शुक्र	24/03/2026 02:09
सूर्य	25/03/2026 07:44
चंद्र	27/03/2026 09:01
मंगल	28/03/2026 19:32
राहु	01/04/2026 12:15
गुरु	04/04/2026 19:07

शनि - बुध - शनि - बुध	
04/04/2026 19:07	
26/04/2026 20:23	
बुध	07/04/2026 22:06
केतु	09/04/2026 04:58
शुक्र	12/04/2026 21:11
सूर्य	13/04/2026 23:39
चंद्र	15/04/2026 19:45
मंगल	17/04/2026 02:37
राहु	20/04/2026 10:01
गुरु	23/04/2026 08:35
शनि	26/04/2026 20:23

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - बुध - शनि - केतु	
26/04/2026 20:23	
05/05/2026 22:18	
केतु	27/04/2026 09:05
शुक्र	28/04/2026 21:25
सूर्य	29/04/2026 08:18
चंद्र	30/04/2026 02:28
मंगल	30/04/2026 15:11
राहु	01/05/2026 23:52
गुरु	03/05/2026 04:56
शनि	04/05/2026 15:26
बुध	05/05/2026 22:18

शनि - बुध - शनि - शुक्र	
05/05/2026 22:18	
31/05/2026 20:57	
शुक्र	10/05/2026 06:05
सूर्य	11/05/2026 13:13
चंद्र	13/05/2026 17:06
मंगल	15/05/2026 05:25
राहु	19/05/2026 02:49
गुरु	22/05/2026 13:50
शनि	26/05/2026 16:25
बुध	30/05/2026 08:38
केतु	31/05/2026 20:57

शनि - बुध - शनि - सूर्य	
31/05/2026 20:57	
08/06/2026 15:45	
सूर्य	01/06/2026 06:18
चंद्र	01/06/2026 21:52
मंगल	02/06/2026 08:45
राहु	03/06/2026 12:47
गुरु	04/06/2026 13:41
शनि	05/06/2026 19:15
बुध	06/06/2026 21:43
केतु	07/06/2026 08:37
शुक्र	08/06/2026 15:45

शनि - बुध - शनि - चंद्र	
08/06/2026 15:45	
21/06/2026 15:04	
चंद्र	09/06/2026 17:42
मंगल	10/06/2026 11:51
राहु	12/06/2026 10:33
गुरु	14/06/2026 04:04
शनि	16/06/2026 05:21
बुध	18/06/2026 01:28
केतु	18/06/2026 19:37
शुक्र	20/06/2026 23:30
सूर्य	21/06/2026 15:04

शनि - बुध - शनि - मंगल	
21/06/2026 15:04	
30/06/2026 17:00	
मंगल	22/06/2026 03:47
राहु	23/06/2026 12:29
गुरु	24/06/2026 17:32
शनि	26/06/2026 04:02
बुध	27/06/2026 10:55
केतु	27/06/2026 23:37
शुक्र	29/06/2026 11:57
सूर्य	29/06/2026 22:50
चंद्र	30/06/2026 17:00

शनि - बुध - शनि - राहु	
30/06/2026 17:00	
24/07/2026 01:23	
राहु	04/07/2026 05:04
गुरु	07/07/2026 07:47
शनि	11/07/2026 00:30
बुध	14/07/2026 07:54
केतु	15/07/2026 16:35
शुक्र	19/07/2026 13:59
सूर्य	20/07/2026 18:00
चंद्र	22/07/2026 16:42
मंगल	24/07/2026 01:23

शनि - बुध - शनि - गुरु	
24/07/2026 01:23	
13/08/2026 19:30	
गुरु	26/07/2026 19:48
शनि	30/07/2026 02:40
बुध	02/08/2026 01:14
केतु	03/08/2026 06:18
शुक्र	06/08/2026 17:19
सूर्य	07/08/2026 18:13
चंद्र	09/08/2026 11:44
मंगल	10/08/2026 16:47
राहु	13/08/2026 19:30

शनि - केतु - केतु - केतु	
13/08/2026 19:30	
15/08/2026 04:34	
केतु	13/08/2026 21:26
शुक्र	14/08/2026 02:57
सूर्य	14/08/2026 04:36
चंद्र	14/08/2026 07:21
मंगल	14/08/2026 09:17
राहु	14/08/2026 14:14
गुरु	14/08/2026 18:39
शनि	14/08/2026 23:53
बुध	15/08/2026 04:34

शनि - केतु - केतु - शुक्र	
15/08/2026 04:34	
19/08/2026 03:01	
शुक्र	15/08/2026 20:19
सूर्य	16/08/2026 01:02
चंद्र	16/08/2026 08:54
मंगल	16/08/2026 14:25
राहु	17/08/2026 04:35
गुरु	17/08/2026 17:11
शनि	18/08/2026 08:08
बुध	18/08/2026 21:31
केतु	19/08/2026 03:01

शनि - केतु - केतु - सूर्य	
19/08/2026 03:01	
20/08/2026 07:22	
सूर्य	19/08/2026 04:26
चंद्र	19/08/2026 06:48
मंगल	19/08/2026 08:27
राहु	19/08/2026 12:42
गुरु	19/08/2026 16:29
शनि	19/08/2026 20:58
बुध	20/08/2026 00:59
केतु	20/08/2026 02:38
शुक्र	20/08/2026 07:22

शनि - केतु - केतु - चंद्र	
20/08/2026 07:22	
22/08/2026 06:35	
चंद्र	20/08/2026 11:18
मंगल	20/08/2026 14:03
राहु	20/08/2026 21:08
गुरु	21/08/2026 03:26
शनि	21/08/2026 10:55
बुध	21/08/2026 17:36
केतु	21/08/2026 20:21
शुक्र	22/08/2026 04:14
सूर्य	22/08/2026 06:35

शनि - केतु - केतु - मंगल	
22/08/2026 06:35	
23/08/2026 15:39	
मंगल	22/08/2026 08:31
राहु	22/08/2026 13:29
गुरु	22/08/2026 17:53
शनि	22/08/2026 23:07
बुध	23/08/2026 03:48
केतु	23/08/2026 05:44
शुक्र	23/08/2026 11:15
सूर्य	23/08/2026 12:54
चंद्र	23/08/2026 15:39

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 6 वर्ष 9 मास 22 दिन

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
01/11/1954		24/08/1961		24/08/1977		24/08/1994		24/08/2012	
24/08/1961		24/08/1977		24/08/1994		24/08/2012		24/08/2023	
	00/00/0000	चंद्र	08/11/1963	बुध	20/02/1980	शुक्र	09/06/1997	सूर्य	09/09/2013
	00/00/0000	बुध	13/03/1966	शुक्र	10/10/1982	सूर्य	23/02/1999	मंगल	29/10/2014
	01/11/1954	शुक्र	05/09/1968	सूर्य	21/05/1984	मंगल	03/01/2001	गुरु	23/01/2016
शुक्र	07/03/1955	सूर्य	13/03/1970	मंगल	23/02/1986	गुरु	10/01/2003	शनि	22/05/2017
सूर्य	08/08/1956	मंगल	08/11/1971	गुरु	19/01/1988	शनि	13/03/2005	केतु	23/10/2018
मंगल	26/02/1958	गुरु	24/08/1973	शनि	07/02/1990	केतु	11/07/2007	चंद्र	29/04/2020
गुरु	02/11/1959	शनि	30/07/1975	केतु	20/04/1992	चंद्र	03/01/2010	बुध	09/12/2021
शनि	24/08/1961	केतु	24/08/1977	चंद्र	24/08/1994	बुध	24/08/2012	शुक्र	24/08/2023

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
24/08/2023		24/08/2035		24/08/2048		24/08/2062	
24/08/2035		24/08/2048		24/08/2062		00/00/0000	
मंगल	20/11/2024	गुरु	07/02/2037	शनि	03/05/2050	केतु	02/08/2064
गुरु	26/03/2026	शनि	03/09/2038	केतु	23/02/2052	चंद्र	27/08/2066
शनि	06/09/2027	केतु	09/05/2040	चंद्र	28/01/2054	बुध	07/11/2068
केतु	26/03/2029	चंद्र	23/02/2042	बुध	17/02/2056	शुक्र	01/11/2070
चंद्र	20/11/2030	बुध	19/01/2044	शुक्र	20/04/2058		00/00/0000
बुध	24/08/2032	शुक्र	25/01/2046	सूर्य	18/08/2059		00/00/0000
शुक्र	05/07/2034	सूर्य	21/04/2047	मंगल	28/01/2061		00/00/0000
सूर्य	24/08/2035	मंगल	24/08/2048	गुरु	24/08/2062		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
01/11/1954		07/03/1955		08/08/1956		26/02/1958		02/11/1959	
07/03/1955		08/08/1956		26/02/1958		02/11/1959		24/08/1961	
	00/00/0000	सूर्य	26/04/1955	मंगल	06/10/1956	गुरु	06/05/1958	शनि	21/01/1960
	00/00/0000	मंगल	18/06/1955	गुरु	08/12/1956	शनि	19/07/1958	केतु	15/04/1960
	00/00/0000	गुरु	16/08/1955	शनि	15/02/1957	केतु	06/10/1958	चंद्र	15/07/1960
	00/00/0000	शनि	17/10/1955	केतु	29/04/1957	चंद्र	30/12/1958	बुध	20/10/1960
	00/00/0000	केतु	24/12/1955	चंद्र	16/07/1957	बुध	30/03/1959	शुक्र	31/01/1961
	01/11/1954	चंद्र	04/03/1956	बुध	07/10/1957	शुक्र	03/07/1959	सूर्य	03/04/1961
चंद्र	03/11/1954	बुध	19/05/1956	शुक्र	03/01/1958	सूर्य	30/08/1959	मंगल	11/06/1961
बुध	07/03/1955	शुक्र	08/08/1956	सूर्य	26/02/1958	मंगल	02/11/1959	गुरु	24/08/1961

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
24/08/1961		08/11/1963		13/03/1966		05/09/1968		13/03/1970	
08/11/1963		13/03/1966		05/09/1968		13/03/1970		08/11/1971	
चंद्र	13/12/1961	बुध	13/03/1964	शुक्र	01/08/1966	सूर्य	28/10/1968	मंगल	15/05/1970
बुध	10/04/1962	शुक्र	23/07/1964	सूर्य	26/10/1966	मंगल	24/12/1968	गुरु	22/07/1970
शुक्र	13/08/1962	सूर्य	13/10/1964	मंगल	28/01/1967	गुरु	24/02/1969	शनि	03/10/1970
सूर्य	29/10/1962	मंगल	09/01/1965	गुरु	10/05/1967	शनि	02/05/1969	केतु	20/12/1970
मंगल	20/01/1963	गुरु	15/04/1965	शनि	27/08/1967	केतु	13/07/1969	चंद्र	13/03/1971
गुरु	21/04/1963	शनि	28/07/1965	केतु	22/12/1967	चंद्र	27/09/1969	बुध	10/06/1971
शनि	27/07/1963	केतु	15/11/1965	चंद्र	25/04/1968	बुध	17/12/1969	शुक्र	12/09/1971
केतु	08/11/1963	चंद्र	13/03/1966	बुध	05/09/1968	शुक्र	13/03/1970	सूर्य	08/11/1971

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
08/11/1971		24/08/1973		30/07/1975		24/08/1977		20/02/1980	
24/08/1973		30/07/1975		24/08/1977		20/02/1980		10/10/1982	
गुरु	20/01/1972	शनि	17/11/1973	केतु	05/11/1975	बुध	04/01/1978	शुक्र	18/07/1980
शनि	08/04/1972	केतु	16/02/1974	चंद्र	17/02/1976	शुक्र	26/05/1978	सूर्य	18/10/1980
केतु	02/07/1972	चंद्र	25/05/1974	बुध	07/06/1976	सूर्य	20/08/1978	मंगल	25/01/1981
चंद्र	30/09/1972	बुध	05/09/1974	शुक्र	02/10/1976	मंगल	22/11/1978	गुरु	13/05/1981
बुध	04/01/1973	शुक्र	23/12/1974	सूर्य	13/12/1976	गुरु	04/03/1979	शनि	07/09/1981
शुक्र	16/04/1973	सूर्य	28/02/1975	मंगल	01/03/1977	शनि	22/06/1979	केतु	09/01/1982
सूर्य	17/06/1973	मंगल	12/05/1975	गुरु	25/05/1977	केतु	17/10/1979	चंद्र	22/05/1982
मंगल	24/08/1973	गुरु	30/07/1975	शनि	24/08/1977	चंद्र	20/02/1980	बुध	10/10/1982

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु	
10/10/1982		21/05/1984		23/02/1986		19/01/1988		07/02/1990	
21/05/1984		23/02/1986		19/01/1988		07/02/1990		20/04/1992	
सूर्य	05/12/1982	मंगल	27/07/1984	गुरु	12/05/1986	शनि	19/04/1988	केतु	22/05/1990
मंगल	04/02/1983	गुरु	07/10/1984	शनि	04/08/1986	केतु	25/07/1988	चंद्र	09/09/1990
गुरु	11/04/1983	शनि	23/12/1984	केतु	02/11/1986	चंद्र	05/11/1988	बुध	05/01/1991
शनि	21/06/1983	केतु	16/03/1985	चंद्र	06/02/1987	बुध	23/02/1989	शुक्र	10/05/1991
केतु	05/09/1983	चंद्र	13/06/1985	बुध	19/05/1987	शुक्र	19/06/1989	सूर्य	25/07/1991
चंद्र	26/11/1983	बुध	15/09/1985	शुक्र	03/09/1987	सूर्य	29/08/1989	मंगल	16/10/1991
बुध	20/02/1984	शुक्र	24/12/1985	सूर्य	08/11/1987	मंगल	15/11/1989	गुरु	14/01/1992
शुक्र	21/05/1984	सूर्य	23/02/1986	मंगल	19/01/1988	गुरु	07/02/1990	शनि	20/04/1992

बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु	
20/04/1992		24/08/1994		09/06/1997		23/02/1999		03/01/2001	
24/08/1994		09/06/1997		23/02/1999		03/01/2001		10/01/2003	
चंद्र	16/08/1992	शुक्र	30/01/1995	सूर्य	08/08/1997	मंगल	04/05/1999	गुरु	27/03/2001
बुध	19/12/1992	सूर्य	06/05/1995	मंगल	11/10/1997	गुरु	19/07/1999	शनि	23/06/2001
शुक्र	01/05/1993	मंगल	20/08/1995	गुरु	20/12/1997	शनि	09/10/1999	केतु	27/09/2001
सूर्य	22/07/1993	गुरु	12/12/1995	शनि	05/03/1998	केतु	05/01/2000	चंद्र	06/01/2002
मंगल	18/10/1993	शनि	13/04/1996	केतु	25/05/1998	चंद्र	08/04/2000	बुध	24/04/2002
गुरु	22/01/1994	केतु	23/08/1996	चंद्र	19/08/1998	बुध	17/07/2000	शुक्र	17/08/2002
शनि	05/05/1994	चंद्र	11/01/1997	बुध	18/11/1998	शुक्र	30/10/2000	सूर्य	26/10/2002
केतु	24/08/1994	बुध	09/06/1997	शुक्र	23/02/1999	सूर्य	03/01/2001	मंगल	10/01/2003

शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य	
10/01/2003		13/03/2005		11/07/2007		03/01/2010		24/08/2012	
13/03/2005		11/07/2007		03/01/2010		24/08/2012		09/09/2013	
शनि	16/04/2003	केतु	01/07/2005	चंद्र	13/11/2007	बुध	24/05/2010	सूर्य	29/09/2012
केतु	27/07/2003	चंद्र	26/10/2005	बुध	25/03/2008	शुक्र	21/10/2010	मंगल	07/11/2012
चंद्र	14/11/2003	बुध	28/02/2006	शुक्र	13/08/2008	सूर्य	20/01/2011	गुरु	20/12/2012
बुध	09/03/2004	शुक्र	10/07/2006	सूर्य	07/11/2008	मंगल	30/04/2011	शनि	04/02/2013
शुक्र	10/07/2004	सूर्य	29/09/2006	मंगल	09/02/2009	गुरु	16/08/2011	केतु	25/03/2013
सूर्य	23/09/2004	मंगल	26/12/2006	गुरु	22/05/2009	शनि	10/12/2011	चंद्र	17/05/2013
मंगल	14/12/2004	गुरु	31/03/2007	शनि	08/09/2009	केतु	13/04/2012	बुध	12/07/2013
गुरु	13/03/2005	शनि	11/07/2007	केतु	03/01/2010	चंद्र	24/08/2012	शुक्र	09/09/2013

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
09/09/2013		29/10/2014		23/01/2016		22/05/2017		23/10/2018	
29/10/2014		23/01/2016		22/05/2017		23/10/2018		29/04/2020	
मंगल	22/10/2013	गुरु	19/12/2014	शनि	21/03/2016	केतु	28/07/2017	चंद्र	07/01/2019
गुरु	07/12/2013	शनि	11/02/2015	केतु	23/05/2016	चंद्र	07/10/2017	बुध	30/03/2019
शनि	26/01/2014	केतु	10/04/2015	चंद्र	29/07/2016	बुध	22/12/2017	शुक्र	24/06/2019
केतु	21/03/2014	चंद्र	11/06/2015	बुध	08/10/2016	शुक्र	13/03/2018	सूर्य	15/08/2019
चंद्र	18/05/2014	बुध	16/08/2015	शुक्र	22/12/2016	सूर्य	01/05/2018	मंगल	12/10/2019
बुध	17/07/2014	शुक्र	25/10/2015	सूर्य	06/02/2017	मंगल	24/06/2018	गुरु	13/12/2019
शुक्र	20/09/2014	सूर्य	07/12/2015	मंगल	28/03/2017	गुरु	21/08/2018	शनि	18/02/2020
सूर्य	29/10/2014	मंगल	23/01/2016	गुरु	22/05/2017	शनि	23/10/2018	केतु	29/04/2020

सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
29/04/2020		09/12/2021		24/08/2023		20/11/2024		26/03/2026	
09/12/2021		24/08/2023		20/11/2024		26/03/2026		06/09/2027	
बुध	25/07/2020	शुक्र	16/03/2022	मंगल	10/10/2023	गुरु	14/01/2025	शनि	29/05/2026
शुक्र	24/10/2020	सूर्य	14/05/2022	गुरु	30/11/2023	शनि	14/03/2025	केतु	05/08/2026
सूर्य	19/12/2020	मंगल	17/07/2022	शनि	24/01/2024	केतु	17/05/2025	चंद्र	17/10/2026
मंगल	18/02/2021	गुरु	25/09/2022	केतु	23/03/2024	चंद्र	23/07/2025	बुध	03/01/2027
गुरु	25/04/2021	शनि	09/12/2022	चंद्र	24/05/2024	बुध	03/10/2025	शुक्र	26/03/2027
शनि	05/07/2021	केतु	28/02/2023	बुध	30/07/2024	शुक्र	19/12/2025	सूर्य	15/05/2027
केतु	19/09/2021	चंद्र	25/05/2023	शुक्र	08/10/2024	सूर्य	03/02/2026	मंगल	09/07/2027
चंद्र	09/12/2021	बुध	24/08/2023	सूर्य	20/11/2024	मंगल	26/03/2026	गुरु	06/09/2027

मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
06/09/2027		26/03/2029		20/11/2030		24/08/2032		05/07/2034	
26/03/2029		20/11/2030		24/08/2032		05/07/2034		24/08/2035	
केतु	18/11/2027	चंद्र	17/06/2029	बुध	23/02/2031	शुक्र	07/12/2032	सूर्य	13/08/2034
चंद्र	05/02/2028	बुध	14/09/2029	शुक्र	02/06/2031	सूर्य	10/02/2033	मंगल	25/09/2034
बुध	28/04/2028	शुक्र	17/12/2029	सूर्य	02/08/2031	मंगल	21/04/2033	गुरु	11/11/2034
शुक्र	25/07/2028	सूर्य	12/02/2030	मंगल	08/10/2031	गुरु	06/07/2033	शनि	31/12/2034
सूर्य	16/09/2028	मंगल	15/04/2030	गुरु	19/12/2031	शनि	26/09/2033	केतु	23/02/2035
मंगल	14/11/2028	गुरु	22/06/2030	शनि	05/03/2032	केतु	23/12/2033	चंद्र	21/04/2035
गुरु	16/01/2029	शनि	03/09/2030	केतु	27/05/2032	चंद्र	27/03/2034	बुध	21/06/2035
शनि	26/03/2029	केतु	20/11/2030	चंद्र	24/08/2032	बुध	05/07/2034	शुक्र	24/08/2035

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध	
24/08/2035		07/02/2037		03/09/2038		09/05/2040		23/02/2042	
07/02/2037		03/09/2038		09/05/2040		23/02/2042		19/01/2044	
गुरु	23/10/2035	शनि	17/04/2037	केतु	21/11/2038	चंद्र	07/08/2040	बुध	05/06/2042
शनि	26/12/2035	केतु	30/06/2037	चंद्र	14/02/2039	बुध	11/11/2040	शुक्र	21/09/2042
केतु	04/03/2036	चंद्र	17/09/2037	बुध	15/05/2039	शुक्र	21/02/2041	सूर्य	26/11/2042
चंद्र	17/05/2036	बुध	10/12/2037	शुक्र	18/08/2039	सूर्य	24/04/2041	मंगल	06/02/2043
बुध	03/08/2036	शुक्र	09/03/2038	सूर्य	15/10/2039	मंगल	30/06/2041	गुरु	25/04/2043
शुक्र	24/10/2036	सूर्य	02/05/2038	मंगल	18/12/2039	गुरु	12/09/2041	शनि	17/07/2043
सूर्य	14/12/2036	मंगल	30/06/2038	गुरु	25/02/2040	शनि	30/11/2041	केतु	15/10/2043
मंगल	07/02/2037	गुरु	03/09/2038	शनि	09/05/2040	केतु	23/02/2042	चंद्र	19/01/2044

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
19/01/2044		25/01/2046		21/04/2047		24/08/2048		03/05/2050	
25/01/2046		21/04/2047		24/08/2048		03/05/2050		23/02/2052	
शुक्र	13/05/2044	सूर्य	09/03/2046	मंगल	10/06/2047	शनि	06/11/2048	केतु	27/07/2050
सूर्य	22/07/2044	मंगल	25/04/2046	गुरु	04/08/2047	केतु	25/01/2049	चंद्र	27/10/2050
मंगल	06/10/2044	गुरु	14/06/2046	शनि	03/10/2047	चंद्र	20/04/2049	बुध	31/01/2051
गुरु	27/12/2044	शनि	07/08/2046	केतु	05/12/2047	बुध	20/07/2049	शुक्र	14/05/2051
शनि	26/03/2045	केतु	05/10/2046	चंद्र	11/02/2048	शुक्र	23/10/2049	सूर्य	16/07/2051
केतु	30/06/2045	चंद्र	06/12/2046	बुध	23/04/2048	सूर्य	21/12/2049	मंगल	22/09/2051
चंद्र	09/10/2045	बुध	10/02/2047	शुक्र	08/07/2048	मंगल	23/02/2050	गुरु	05/12/2051
बुध	25/01/2046	शुक्र	21/04/2047	सूर्य	24/08/2048	गुरु	03/05/2050	शनि	23/02/2052

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
23/02/2052		28/01/2054		17/02/2056		20/04/2058		18/08/2059	
28/01/2054		17/02/2056		20/04/2058		18/08/2059		28/01/2061	
चंद्र	30/05/2052	बुध	18/05/2054	शुक्र	19/06/2056	सूर्य	05/06/2058	मंगल	12/10/2059
बुध	11/09/2052	शुक्र	12/09/2054	सूर्य	02/09/2056	मंगल	25/07/2058	गुरु	10/12/2059
शुक्र	29/12/2052	सूर्य	22/11/2054	मंगल	23/11/2056	गुरु	18/09/2058	शनि	12/02/2060
सूर्य	06/03/2053	मंगल	07/02/2055	गुरु	20/02/2057	शनि	15/11/2058	केतु	20/04/2060
मंगल	18/05/2053	गुरु	02/05/2055	शनि	27/05/2057	केतु	17/01/2059	चंद्र	02/07/2060
गुरु	05/08/2053	शनि	01/08/2055	केतु	07/09/2057	चंद्र	25/03/2059	बुध	18/09/2060
शनि	29/10/2053	केतु	05/11/2055	चंद्र	25/12/2057	बुध	04/06/2059	शुक्र	09/12/2060
केतु	28/01/2054	चंद्र	17/02/2056	बुध	20/04/2058	शुक्र	18/08/2059	सूर्य	28/01/2061

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 6 वर्ष 0 मास 19 दिन

शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
01/11/1954		21/11/1960		21/11/1964		23/07/1971		22/03/1976	
21/11/1960		21/11/1964		23/07/1971		22/03/1976		22/03/1988	
	00/00/0000	सूर्य	02/02/1961	चंद्र	11/06/1965	मंगल	30/10/1971	राहु	09/01/1978
	00/00/0000	चंद्र	03/06/1961	मंगल	01/11/1965	राहु	12/07/1972	गुरु	16/08/1979
	00/00/0000	मंगल	28/08/1961	राहु	01/11/1966	गुरु	24/02/1973	शनि	10/07/1981
	00/00/0000	राहु	04/04/1962	गुरु	21/09/1967	शनि	21/11/1973	बुध	23/03/1983
	01/11/1954	गुरु	16/10/1962	शनि	11/10/1968	बुध	20/07/1974	केतु	03/12/1983
गुरु	10/02/1956	शनि	04/06/1963	बुध	21/09/1969	केतु	28/10/1974	शुक्र	03/12/1985
शनि	23/03/1958	बुध	28/12/1963	केतु	10/02/1970	शुक्र	08/08/1975	सूर्य	10/07/1986
बुध	10/02/1960	केतु	22/03/1964	शुक्र	23/03/1971	सूर्य	01/11/1975	चंद्र	10/07/1987
केतु	21/11/1960	शुक्र	21/11/1964	सूर्य	23/07/1971	चंद्र	22/03/1976	मंगल	22/03/1988

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
22/03/1988		21/11/1998		23/07/2011		21/11/2022		23/07/2027	
21/11/1998		23/07/2011		21/11/2022		23/07/2027		00/00/0000	
गुरु	24/08/1989	शनि	23/11/2000	बुध	28/02/2013	केतु	01/03/2023	शुक्र	11/10/2029
शनि	02/05/1991	बुध	09/09/2002	केतु	27/10/2013	शुक्र	10/12/2023	सूर्य	12/06/2030
बुध	04/11/1992	केतु	06/06/2003	शुक्र	17/09/2015	सूर्य	04/03/2024	चंद्र	23/07/2031
केतु	20/06/1993	शुक्र	16/07/2005	सूर्य	11/04/2016	चंद्र	24/07/2024	मंगल	02/05/2032
शुक्र	31/03/1995	सूर्य	04/03/2006	चंद्र	22/03/2017	मंगल	31/10/2024	राहु	02/05/2034
सूर्य	12/10/1995	चंद्र	25/03/2007	मंगल	19/11/2017	राहु	14/07/2025	गुरु	01/11/2034
चंद्र	31/08/1996	मंगल	20/12/2007	राहु	02/08/2019	गुरु	26/02/2026		00/00/0000
मंगल	16/04/1997	राहु	13/11/2009	गुरु	04/02/2021	शनि	23/11/2026		00/00/0000
राहु	21/11/1998	गुरु	23/07/2011	शनि	21/11/2022	बुध	23/07/2027		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
01/11/1954		10/02/1956		23/03/1958		10/02/1960		21/11/1960	
10/02/1956		23/03/1958		10/02/1960		21/11/1960		02/02/1961	
	01/11/1954	शनि	12/06/1956	बुध	28/06/1958	केतु	27/02/1960	सूर्य	24/11/1960
शनि	08/11/1954	बुध	29/09/1956	केतु	08/08/1958	शुक्र	14/04/1960	चंद्र	30/11/1960
बुध	08/02/1955	केतु	13/11/1956	शुक्र	01/12/1958	सूर्य	29/04/1960	मंगल	05/12/1960
केतु	17/03/1955	शुक्र	21/03/1957	सूर्य	04/01/1959	चंद्र	22/05/1960	राहु	16/12/1960
शुक्र	04/07/1955	सूर्य	29/04/1957	चंद्र	03/03/1959	मंगल	08/06/1960	गुरु	25/12/1960
सूर्य	05/08/1955	चंद्र	02/07/1957	मंगल	12/04/1959	राहु	20/07/1960	शनि	06/01/1961
चंद्र	28/09/1955	मंगल	16/08/1957	राहु	24/07/1959	गुरु	27/08/1960	बुध	16/01/1961
मंगल	05/11/1955	राहु	10/12/1957	गुरु	24/10/1959	शनि	11/10/1960	केतु	20/01/1961
राहु	10/02/1956	गुरु	23/03/1958	शनि	10/02/1960	बुध	21/11/1960	शुक्र	02/02/1961

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
02/02/1961		03/06/1961		28/08/1961		04/04/1962		16/10/1962	
03/06/1961		28/08/1961		04/04/1962		16/10/1962		04/06/1963	
चंद्र	12/02/1961	मंगल	08/06/1961	राहु	29/09/1961	गुरु	30/04/1962	शनि	21/11/1962
मंगल	19/02/1961	राहु	21/06/1961	गुरु	29/10/1961	शनि	31/05/1962	बुध	24/12/1962
राहु	09/03/1961	गुरु	02/07/1961	शनि	02/12/1961	बुध	27/06/1962	केतु	06/01/1963
गुरु	25/03/1961	शनि	16/07/1961	बुध	02/01/1962	केतु	09/07/1962	शुक्र	14/02/1963
शनि	14/04/1961	बुध	28/07/1961	केतु	15/01/1962	शुक्र	10/08/1962	सूर्य	26/02/1963
बुध	01/05/1961	केतु	02/08/1961	शुक्र	21/02/1962	सूर्य	20/08/1962	चंद्र	17/03/1963
केतु	08/05/1961	शुक्र	16/08/1961	सूर्य	04/03/1962	चंद्र	05/09/1962	मंगल	30/03/1963
शुक्र	28/05/1961	सूर्य	20/08/1961	चंद्र	22/03/1962	मंगल	16/09/1962	राहु	04/05/1963
सूर्य	03/06/1961	चंद्र	28/08/1961	मंगल	04/04/1962	राहु	16/10/1962	गुरु	04/06/1963

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
04/06/1963		28/12/1963		22/03/1964		21/11/1964		11/06/1965	
28/12/1963		22/03/1964		21/11/1964		11/06/1965		01/11/1965	
बुध	03/07/1963	केतु	02/01/1964	शुक्र	02/05/1964	चंद्र	07/12/1964	मंगल	20/06/1965
केतु	15/07/1963	शुक्र	16/01/1964	सूर्य	14/05/1964	मंगल	19/12/1964	राहु	11/07/1965
शुक्र	19/08/1963	सूर्य	20/01/1964	चंद्र	03/06/1964	राहु	19/01/1965	गुरु	30/07/1965
सूर्य	29/08/1963	चंद्र	27/01/1964	मंगल	17/06/1964	गुरु	15/02/1965	शनि	22/08/1965
चंद्र	15/09/1963	मंगल	01/02/1964	राहु	24/07/1964	शनि	19/03/1965	बुध	11/09/1965
मंगल	27/09/1963	राहु	14/02/1964	गुरु	25/08/1964	बुध	17/04/1965	केतु	19/09/1965
राहु	28/10/1963	गुरु	26/02/1964	शनि	03/10/1964	केतु	29/04/1965	शुक्र	13/10/1965
गुरु	25/11/1963	शनि	10/03/1964	बुध	06/11/1964	शुक्र	01/06/1965	सूर्य	20/10/1965
शनि	28/12/1963	बुध	22/03/1964	केतु	21/11/1964	सूर्य	11/06/1965	चंद्र	01/11/1965

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
01/11/1965		01/11/1966		21/09/1967		11/10/1968		21/09/1969	
01/11/1966		21/09/1967		11/10/1968		21/09/1969		10/02/1970	
राहु	25/12/1965	गुरु	14/12/1966	शनि	21/11/1967	बुध	29/11/1968	केतु	29/09/1969
गुरु	12/02/1966	शनि	03/02/1967	बुध	15/01/1968	केतु	19/12/1968	शुक्र	23/10/1969
शनि	11/04/1966	बुध	21/03/1967	केतु	07/02/1968	शुक्र	14/02/1969	सूर्य	30/10/1969
बुध	02/06/1966	केतु	09/04/1967	शुक्र	11/04/1968	सूर्य	04/03/1969	चंद्र	11/11/1969
केतु	23/06/1966	शुक्र	03/06/1967	सूर्य	30/04/1968	चंद्र	01/04/1969	मंगल	19/11/1969
शुक्र	23/08/1966	सूर्य	19/06/1967	चंद्र	01/06/1968	मंगल	22/04/1969	राहु	10/12/1969
सूर्य	10/09/1966	चंद्र	16/07/1967	मंगल	24/06/1968	राहु	12/06/1969	गुरु	29/12/1969
चंद्र	10/10/1966	मंगल	04/08/1967	राहु	21/08/1968	गुरु	28/07/1969	शनि	21/01/1970
मंगल	01/11/1966	राहु	21/09/1967	गुरु	11/10/1968	शनि	21/09/1969	बुध	10/02/1970

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
10/02/1970		23/03/1971		23/07/1971		30/10/1971		12/07/1972	
23/03/1971		23/07/1971		30/10/1971		12/07/1972		24/02/1973	
शुक्र	19/04/1970	सूर्य	29/03/1971	मंगल	28/07/1971	राहु	07/12/1971	गुरु	11/08/1972
सूर्य	09/05/1970	चंद्र	08/04/1971	राहु	12/08/1971	गुरु	10/01/1972	शनि	16/09/1972
चंद्र	12/06/1970	मंगल	15/04/1971	गुरु	26/08/1971	शनि	20/02/1972	बुध	18/10/1972
मंगल	05/07/1970	राहु	03/05/1971	शनि	10/09/1971	बुध	27/03/1972	केतु	31/10/1972
राहु	04/09/1970	गुरु	20/05/1971	बुध	24/09/1971	केतु	11/04/1972	शुक्र	08/12/1972
गुरु	28/10/1970	शनि	08/06/1971	केतु	30/09/1971	शुक्र	24/05/1972	सूर्य	20/12/1972
शनि	01/01/1971	बुध	25/06/1971	शुक्र	17/10/1971	सूर्य	05/06/1972	चंद्र	08/01/1973
बुध	27/02/1971	केतु	02/07/1971	सूर्य	22/10/1971	चंद्र	27/06/1972	मंगल	21/01/1973
केतु	23/03/1971	शुक्र	23/07/1971	चंद्र	30/10/1971	मंगल	12/07/1972	राहु	24/02/1973

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
24/02/1973		21/11/1973		20/07/1974		28/10/1974		08/08/1975	
21/11/1973		20/07/1974		28/10/1974		08/08/1975		01/11/1975	
शनि	08/04/1973	बुध	25/12/1973	केतु	26/07/1974	शुक्र	14/12/1974	सूर्य	12/08/1975
बुध	16/05/1973	केतु	08/01/1974	शुक्र	12/08/1974	सूर्य	28/12/1974	चंद्र	19/08/1975
केतु	01/06/1973	शुक्र	17/02/1974	सूर्य	17/08/1974	चंद्र	21/01/1975	मंगल	24/08/1975
शुक्र	16/07/1973	सूर्य	01/03/1974	चंद्र	25/08/1974	मंगल	07/02/1975	राहु	06/09/1975
सूर्य	29/07/1973	चंद्र	22/03/1974	मंगल	31/08/1974	राहु	21/03/1975	गुरु	17/09/1975
चंद्र	21/08/1973	मंगल	05/04/1974	राहु	15/09/1974	गुरु	28/04/1975	शनि	01/10/1975
मंगल	05/09/1973	राहु	11/05/1974	गुरु	28/09/1974	शनि	12/06/1975	बुध	13/10/1975
राहु	16/10/1973	गुरु	12/06/1974	शनि	14/10/1974	बुध	22/07/1975	केतु	18/10/1975
गुरु	21/11/1973	शनि	20/07/1974	बुध	28/10/1974	केतु	08/08/1975	शुक्र	01/11/1975

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
01/11/1975		22/03/1976		09/01/1978		16/08/1979		10/07/1981	
22/03/1976		09/01/1978		16/08/1979		10/07/1981		23/03/1983	
चंद्र	13/11/1975	राहु	29/06/1976	गुरु	27/03/1978	शनि	04/12/1979	बुध	06/10/1981
मंगल	21/11/1975	गुरु	24/09/1976	शनि	28/06/1978	बुध	11/03/1980	केतु	11/11/1981
राहु	12/12/1975	शनि	06/01/1977	बुध	19/09/1978	केतु	21/04/1980	शुक्र	23/02/1982
गुरु	31/12/1975	बुध	10/04/1977	केतु	23/10/1978	शुक्र	14/08/1980	सूर्य	26/03/1982
शनि	23/01/1976	केतु	18/05/1977	शुक्र	28/01/1979	सूर्य	18/09/1980	चंद्र	16/05/1982
बुध	12/02/1976	शुक्र	05/09/1977	सूर्य	26/02/1979	चंद्र	15/11/1980	मंगल	22/06/1982
केतु	20/02/1976	सूर्य	07/10/1977	चंद्र	16/04/1979	मंगल	25/12/1980	राहु	23/09/1982
शुक्र	15/03/1976	चंद्र	01/12/1977	मंगल	20/05/1979	राहु	08/04/1981	गुरु	15/12/1982
सूर्य	22/03/1976	मंगल	09/01/1978	राहु	16/08/1979	गुरु	10/07/1981	शनि	23/03/1983

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
23/03/1983		03/12/1983		03/12/1985		10/07/1986		10/07/1987	
03/12/1983		03/12/1985		10/07/1986		10/07/1987		22/03/1988	
केतु	07/04/1983	शुक्र	03/04/1984	सूर्य	14/12/1985	चंद्र	10/08/1986	मंगल	25/07/1987
शुक्र	19/05/1983	सूर्य	10/05/1984	चंद्र	01/01/1986	मंगल	31/08/1986	राहु	02/09/1987
सूर्य	01/06/1983	चंद्र	10/07/1984	मंगल	14/01/1986	राहु	25/10/1986	गुरु	06/10/1987
चंद्र	22/06/1983	मंगल	21/08/1984	राहु	16/02/1986	गुरु	12/12/1986	शनि	15/11/1987
मंगल	07/07/1983	राहु	09/12/1984	गुरु	17/03/1986	शनि	08/02/1987	बुध	21/12/1987
राहु	15/08/1983	गुरु	16/03/1985	शनि	21/04/1986	बुध	01/04/1987	केतु	05/01/1988
गुरु	18/09/1983	शनि	10/07/1985	बुध	22/05/1986	केतु	22/04/1987	शुक्र	17/02/1988
शनि	28/10/1983	बुध	21/10/1985	केतु	04/06/1986	शुक्र	22/06/1987	सूर्य	01/03/1988
बुध	03/12/1983	केतु	03/12/1985	शुक्र	10/07/1986	सूर्य	10/07/1987	चंद्र	22/03/1988

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
22/03/1988		24/08/1989		02/05/1991		04/11/1992		20/06/1993	
24/08/1989		02/05/1991		04/11/1992		20/06/1993		31/03/1995	
गुरु	30/05/1988	शनि	29/11/1989	बुध	20/07/1991	केतु	18/11/1992	शुक्र	06/10/1993
शनि	21/08/1988	बुध	25/02/1990	केतु	21/08/1991	शुक्र	25/12/1992	सूर्य	07/11/1993
बुध	02/11/1988	केतु	02/04/1990	शुक्र	21/11/1991	सूर्य	06/01/1993	चंद्र	31/12/1993
केतु	02/12/1988	शुक्र	13/07/1990	सूर्य	18/12/1991	चंद्र	25/01/1993	मंगल	07/02/1994
शुक्र	27/02/1989	सूर्य	13/08/1990	चंद्र	02/02/1992	मंगल	07/02/1993	राहु	16/05/1994
सूर्य	25/03/1989	चंद्र	04/10/1990	मंगल	06/03/1992	राहु	13/03/1993	गुरु	10/08/1994
चंद्र	07/05/1989	मंगल	09/11/1990	राहु	27/05/1992	गुरु	12/04/1993	शनि	21/11/1994
मंगल	07/06/1989	राहु	09/02/1991	गुरु	09/08/1992	शनि	18/05/1993	बुध	21/02/1995
राहु	24/08/1989	गुरु	02/05/1991	शनि	04/11/1992	बुध	20/06/1993	केतु	31/03/1995

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
31/03/1995		12/10/1995		31/08/1996		16/04/1997		21/11/1998	
12/10/1995		31/08/1996		16/04/1997		21/11/1998		23/11/2000	
सूर्य	10/04/1995	चंद्र	08/11/1995	मंगल	14/09/1996	राहु	12/07/1997	शनि	17/03/1999
चंद्र	26/04/1995	मंगल	27/11/1995	राहु	18/10/1996	गुरु	28/09/1997	बुध	29/06/1999
मंगल	07/05/1995	राहु	14/01/1996	गुरु	17/11/1996	शनि	30/12/1997	केतु	11/08/1999
राहु	05/06/1995	गुरु	27/02/1996	शनि	23/12/1996	बुध	23/03/1998	शुक्र	11/12/1999
गुरु	01/07/1995	शनि	18/04/1996	बुध	24/01/1997	केतु	26/04/1998	सूर्य	16/01/2000
शनि	01/08/1995	बुध	03/06/1996	केतु	06/02/1997	शुक्र	01/08/1998	चंद्र	17/03/2000
बुध	29/08/1995	केतु	22/06/1996	शुक्र	16/03/1997	सूर्य	30/08/1998	मंगल	29/04/2000
केतु	09/09/1995	शुक्र	15/08/1996	सूर्य	28/03/1997	चंद्र	18/10/1998	राहु	17/08/2000
शुक्र	12/10/1995	सूर्य	31/08/1996	चंद्र	16/04/1997	मंगल	21/11/1998	गुरु	23/11/2000

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
23/11/2000		09/09/2002		06/06/2003		16/07/2005		04/03/2006	
09/09/2002		06/06/2003		16/07/2005		04/03/2006		25/03/2007	
बुध	23/02/2001	केतु	25/09/2002	शुक्र	12/10/2003	सूर्य	28/07/2005	चंद्र	05/04/2006
केतु	03/04/2001	शुक्र	09/11/2002	सूर्य	20/11/2003	चंद्र	16/08/2005	मंगल	28/04/2006
शुक्र	21/07/2001	सूर्य	22/11/2002	चंद्र	23/01/2004	मंगल	29/08/2005	राहु	25/06/2006
सूर्य	23/08/2001	चंद्र	15/12/2002	मंगल	08/03/2004	राहु	03/10/2005	गुरु	15/08/2006
चंद्र	16/10/2001	मंगल	30/12/2002	राहु	02/07/2004	गुरु	03/11/2005	शनि	15/10/2006
मंगल	24/11/2001	राहु	09/02/2003	गुरु	13/10/2004	शनि	09/12/2005	बुध	09/12/2006
राहु	02/03/2002	गुरु	17/03/2003	शनि	12/02/2005	बुध	11/01/2006	केतु	31/12/2006
गुरु	28/05/2002	शनि	29/04/2003	बुध	01/06/2005	केतु	25/01/2006	शुक्र	06/03/2007
शनि	09/09/2002	बुध	06/06/2003	केतु	16/07/2005	शुक्र	04/03/2006	सूर्य	25/03/2007

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
25/03/2007		20/12/2007		13/11/2009		23/07/2011		28/02/2013	
20/12/2007		13/11/2009		23/07/2011		28/02/2013		27/10/2013	
मंगल	10/04/2007	राहु	02/04/2008	गुरु	03/02/2010	बुध	14/10/2011	केतु	14/03/2013
राहु	20/05/2007	गुरु	03/07/2008	शनि	12/05/2010	केतु	17/11/2011	शुक्र	23/04/2013
गुरु	25/06/2007	शनि	21/10/2008	बुध	07/08/2010	शुक्र	23/02/2012	सूर्य	05/05/2013
शनि	07/08/2007	बुध	28/01/2009	केतु	12/09/2010	सूर्य	23/03/2012	चंद्र	26/05/2013
बुध	14/09/2007	केतु	09/03/2009	शुक्र	24/12/2010	चंद्र	11/05/2012	मंगल	09/06/2013
केतु	30/09/2007	शुक्र	03/07/2009	सूर्य	24/01/2011	मंगल	14/06/2012	राहु	15/07/2013
शुक्र	14/11/2007	सूर्य	06/08/2009	चंद्र	16/03/2011	राहु	10/09/2012	गुरु	16/08/2013
सूर्य	27/11/2007	चंद्र	03/10/2009	मंगल	21/04/2011	गुरु	27/11/2012	शनि	23/09/2013
चंद्र	20/12/2007	मंगल	13/11/2009	राहु	23/07/2011	शनि	28/02/2013	बुध	27/10/2013

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
27/10/2013		17/09/2015		11/04/2016		22/03/2017		19/11/2017	
17/09/2015		11/04/2016		22/03/2017		19/11/2017		02/08/2019	
शुक्र	19/02/2014	सूर्य	28/09/2015	चंद्र	10/05/2016	मंगल	05/04/2017	राहु	20/02/2018
सूर्य	26/03/2014	चंद्र	15/10/2015	मंगल	30/05/2016	राहु	12/05/2017	गुरु	14/05/2018
चंद्र	22/05/2014	मंगल	27/10/2015	राहु	21/07/2016	गुरु	13/06/2017	शनि	20/08/2018
मंगल	02/07/2014	राहु	27/11/2015	गुरु	05/09/2016	शनि	21/07/2017	बुध	16/11/2018
राहु	13/10/2014	गुरु	25/12/2015	शनि	30/10/2016	बुध	24/08/2017	केतु	22/12/2018
गुरु	13/01/2015	शनि	26/01/2016	बुध	17/12/2016	केतु	07/09/2017	शुक्र	05/04/2019
शनि	02/05/2015	बुध	25/02/2016	केतु	07/01/2017	शुक्र	18/10/2017	सूर्य	06/05/2019
बुध	08/08/2015	केतु	08/03/2016	शुक्र	05/03/2017	सूर्य	30/10/2017	चंद्र	26/06/2019
केतु	17/09/2015	शुक्र	11/04/2016	सूर्य	22/03/2017	चंद्र	19/11/2017	मंगल	02/08/2019

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
02/08/2019		04/02/2021		21/11/2022		01/03/2023		10/12/2023	
04/02/2021		21/11/2022		01/03/2023		10/12/2023		04/03/2024	
गुरु	14/10/2019	शनि	18/05/2021	केतु	27/11/2022	शुक्र	17/04/2023	सूर्य	14/12/2023
शनि	10/01/2020	बुध	19/08/2021	शुक्र	13/12/2022	सूर्य	01/05/2023	चंद्र	21/12/2023
बुध	28/03/2020	केतु	27/09/2021	सूर्य	18/12/2022	चंद्र	25/05/2023	मंगल	26/12/2023
केतु	29/04/2020	शुक्र	14/01/2022	चंद्र	27/12/2022	मंगल	10/06/2023	राहु	08/01/2024
शुक्र	30/07/2020	सूर्य	16/02/2022	मंगल	02/01/2023	राहु	23/07/2023	गुरु	19/01/2024
सूर्य	27/08/2020	चंद्र	11/04/2022	राहु	16/01/2023	गुरु	30/08/2023	शनि	02/02/2024
चंद्र	12/10/2020	मंगल	19/05/2022	गुरु	30/01/2023	शनि	14/10/2023	बुध	14/02/2024
मंगल	13/11/2020	राहु	26/08/2022	शनि	14/02/2023	बुध	23/11/2023	केतु	19/02/2024
राहु	04/02/2021	गुरु	21/11/2022	बुध	01/03/2023	केतु	10/12/2023	शुक्र	04/03/2024

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
04/03/2024		24/07/2024		31/10/2024		14/07/2025		26/02/2026	
24/07/2024		31/10/2024		14/07/2025		26/02/2026		23/11/2026	
चंद्र	16/03/2024	मंगल	30/07/2024	राहु	09/12/2024	गुरु	13/08/2025	शनि	10/04/2026
मंगल	24/03/2024	राहु	14/08/2024	गुरु	12/01/2025	शनि	18/09/2025	बुध	18/05/2026
राहु	14/04/2024	गुरु	27/08/2024	शनि	21/02/2025	बुध	20/10/2025	केतु	03/06/2026
गुरु	03/05/2024	शनि	12/09/2024	बुध	29/03/2025	केतु	03/11/2025	शुक्र	18/07/2026
शनि	26/05/2024	बुध	26/09/2024	केतु	13/04/2025	शुक्र	11/12/2025	सूर्य	31/07/2026
बुध	15/06/2024	केतु	01/10/2024	शुक्र	26/05/2025	सूर्य	22/12/2025	चंद्र	23/08/2026
केतु	23/06/2024	शुक्र	18/10/2024	सूर्य	08/06/2025	चंद्र	10/01/2026	मंगल	08/09/2026
शुक्र	17/07/2024	सूर्य	23/10/2024	चंद्र	29/06/2025	मंगल	23/01/2026	राहु	18/10/2026
सूर्य	24/07/2024	चंद्र	31/10/2024	मंगल	14/07/2025	राहु	26/02/2026	गुरु	23/11/2026

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 8 वर्ष 2 मास 4 दिन

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
01/11/1954		06/01/1963		06/01/1982		06/01/1994		06/01/2015	
06/01/1963		06/01/1982		06/01/1994		06/01/2015		06/01/2021	
	01/11/1954	गुरु	11/05/1966	राहु	08/05/1983	शुक्र	05/02/1998	सूर्य	08/05/2015
गुरु	13/09/1955	राहु	20/06/1968	शुक्र	06/09/1985	सूर्य	08/04/1999	चंद्र	07/03/2016
राहु	23/10/1956	शुक्र	01/03/1972	सूर्य	08/05/1986	चंद्र	08/03/2002	मंगल	17/08/2016
शुक्र	04/10/1958	सूर्य	21/03/1973	चंद्र	06/01/1988	मंगल	27/09/2003	बुध	28/07/2017
सूर्य	24/04/1959	चंद्र	10/11/1975	मंगल	26/11/1988	बुध	16/01/2007	शनि	16/02/2018
चंद्र	13/09/1960	मंगल	07/04/1977	बुध	17/10/1990	शनि	27/12/2008	गुरु	08/03/2019
मंगल	10/06/1961	बुध	03/04/1980	शनि	27/11/1991	गुरु	06/09/2012	राहु	07/11/2019
बुध	06/01/1963	शनि	06/01/1982	गुरु	06/01/1994	राहु	06/01/2015	शुक्र	06/01/2021

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष	
06/01/2021		06/01/2036		06/01/2044		06/01/2061	
06/01/2036		06/01/2044		06/01/2061		00/00/0000	
चंद्र	06/02/2023	मंगल	10/08/2036	बुध	10/09/2046	शनि	10/12/2061
मंगल	17/03/2024	बुध	13/11/2037	शनि	07/04/2048	गुरु	01/11/2062
बुध	28/07/2026	शनि	10/08/2038	गुरु	04/04/2051		00/00/0000
शनि	17/12/2027	गुरु	06/01/2040	राहु	22/02/2053		00/00/0000
गुरु	07/08/2030	राहु	26/11/2040	शुक्र	13/06/2056		00/00/0000
राहु	07/04/2032	शुक्र	17/06/2042	सूर्य	24/05/2057		00/00/0000
शुक्र	08/03/2035	सूर्य	27/11/2042	चंद्र	04/10/2059		00/00/0000
सूर्य	06/01/2036	चंद्र	06/01/2044	मंगल	06/01/2061		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
01/11/1954		13/09/1955		23/10/1956		04/10/1958		24/04/1959	
13/09/1955		23/10/1956		04/10/1958		24/04/1959		13/09/1960	
	00/00/0000	राहु	29/10/1955	शुक्र	10/03/1957	सूर्य	15/10/1958	चंद्र	04/07/1959
	00/00/0000	शुक्र	15/01/1956	सूर्य	19/04/1957	चंद्र	12/11/1958	मंगल	10/08/1959
	01/11/1954	सूर्य	07/02/1956	चंद्र	27/07/1957	मंगल	27/11/1958	बुध	29/10/1959
सूर्य	20/11/1954	चंद्र	03/04/1956	मंगल	17/09/1957	बुध	29/12/1958	शनि	15/12/1959
चंद्र	17/02/1955	मंगल	03/05/1956	बुध	07/01/1958	शनि	17/01/1959	गुरु	14/03/1960
मंगल	06/04/1955	बुध	06/07/1956	शनि	14/03/1958	गुरु	21/02/1959	राहु	09/05/1960
बुध	16/07/1955	शनि	13/08/1956	गुरु	17/07/1958	राहु	16/03/1959	शुक्र	16/08/1960
शनि	13/09/1955	गुरु	23/10/1956	राहु	04/10/1958	शुक्र	24/04/1959	सूर्य	13/09/1960

शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र	
13/09/1960		10/06/1961		06/01/1963		11/05/1966		20/06/1968	
10/06/1961		06/01/1963		11/05/1966		20/06/1968		01/03/1972	
मंगल	03/10/1960	बुध	09/09/1961	गुरु	09/08/1963	राहु	05/08/1966	शुक्र	10/03/1969
बुध	14/11/1960	शनि	01/11/1961	राहु	23/12/1963	शुक्र	02/01/1967	सूर्य	24/05/1969
शनि	09/12/1960	गुरु	10/02/1962	शुक्र	16/08/1964	सूर्य	14/02/1967	चंद्र	27/11/1969
गुरु	26/01/1961	राहु	15/04/1962	सूर्य	23/10/1964	चंद्र	01/06/1967	मंगल	07/03/1970
राहु	25/02/1961	शुक्र	05/08/1962	चंद्र	10/04/1965	मंगल	28/07/1967	बुध	05/10/1970
शुक्र	19/04/1961	सूर्य	06/09/1962	मंगल	10/07/1965	बुध	26/11/1967	शनि	07/02/1971
सूर्य	04/05/1961	चंद्र	25/11/1962	बुध	18/01/1966	शनि	06/02/1968	गुरु	03/10/1971
चंद्र	10/06/1961	मंगल	06/01/1963	शनि	11/05/1966	गुरु	20/06/1968	राहु	01/03/1972

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि	
01/03/1972		21/03/1973		10/11/1975		07/04/1977		03/04/1980	
21/03/1973		10/11/1975		07/04/1977		03/04/1980		06/01/1982	
सूर्य	22/03/1972	चंद्र	02/08/1973	मंगल	18/12/1975	बुध	26/09/1977	शनि	02/06/1980
चंद्र	15/05/1972	मंगल	12/10/1973	बुध	08/03/1976	शनि	05/01/1978	गुरु	23/09/1980
मंगल	12/06/1972	बुध	13/03/1974	शनि	25/04/1976	गुरु	16/07/1978	राहु	03/12/1980
बुध	12/08/1972	शनि	10/06/1974	गुरु	24/07/1976	राहु	15/11/1978	शुक्र	07/04/1981
शनि	16/09/1972	गुरु	27/11/1974	राहु	19/09/1976	शुक्र	15/06/1979	सूर्य	13/05/1981
गुरु	23/11/1972	राहु	14/03/1975	शुक्र	28/12/1976	सूर्य	15/08/1979	चंद्र	10/08/1981
राहु	05/01/1973	शुक्र	17/09/1975	सूर्य	26/01/1977	चंद्र	13/01/1980	मंगल	27/09/1981
शुक्र	21/03/1973	सूर्य	10/11/1975	चंद्र	07/04/1977	मंगल	03/04/1980	बुध	06/01/1982

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु	
06/01/1982	
08/05/1983	
राहु	01/03/1982
शुक्र	04/06/1982
सूर्य	01/07/1982
चंद्र	06/09/1982
मंगल	13/10/1982
बुध	28/12/1982
शनि	11/02/1983
गुरु	08/05/1983

राहु - शुक्र	
08/05/1983	
06/09/1985	
शुक्र	21/10/1983
सूर्य	07/12/1983
चंद्र	03/04/1984
मंगल	06/06/1984
बुध	18/10/1984
शनि	05/01/1985
गुरु	04/06/1985
राहु	06/09/1985

राहु - सूर्य	
06/09/1985	
08/05/1986	
सूर्य	20/09/1985
चंद्र	24/10/1985
मंगल	11/11/1985
बुध	19/12/1985
शनि	10/01/1986
गुरु	22/02/1986
राहु	21/03/1986
शुक्र	08/05/1986

राहु - चंद्र	
08/05/1986	
06/01/1988	
चंद्र	31/07/1986
मंगल	14/09/1986
बुध	19/12/1986
शनि	14/02/1987
गुरु	01/06/1987
राहु	07/08/1987
शुक्र	04/12/1987
सूर्य	06/01/1988

राहु - मंगल	
06/01/1988	
26/11/1988	
मंगल	31/01/1988
बुध	22/03/1988
शनि	21/04/1988
गुरु	17/06/1988
राहु	23/07/1988
शुक्र	24/09/1988
सूर्य	12/10/1988
चंद्र	26/11/1988

राहु - बुध	
26/11/1988	
17/10/1990	
बुध	15/03/1989
शनि	18/05/1989
गुरु	16/09/1989
राहु	02/12/1989
शुक्र	15/04/1990
सूर्य	23/05/1990
चंद्र	27/08/1990
मंगल	17/10/1990

राहु - शनि	
17/10/1990	
27/11/1991	
शनि	24/11/1990
गुरु	03/02/1991
राहु	20/03/1991
शुक्र	07/06/1991
सूर्य	30/06/1991
चंद्र	25/08/1991
मंगल	24/09/1991
बुध	27/11/1991

राहु - गुरु	
27/11/1991	
06/01/1994	
गुरु	11/04/1992
राहु	05/07/1992
शुक्र	02/12/1992
सूर्य	14/01/1993
चंद्र	01/05/1993
मंगल	27/06/1993
बुध	27/10/1993
शनि	06/01/1994

शुक्र - शुक्र	
06/01/1994	
05/02/1998	
शुक्र	23/10/1994
सूर्य	14/01/1995
चंद्र	09/08/1995
मंगल	27/11/1995
बुध	19/07/1996
शनि	04/12/1996
गुरु	24/08/1997
राहु	05/02/1998

शुक्र - सूर्य	
05/02/1998	
08/04/1999	
सूर्य	01/03/1998
चंद्र	29/04/1998
मंगल	31/05/1998
बुध	06/08/1998
शनि	14/09/1998
गुरु	28/11/1998
राहु	15/01/1999
शुक्र	08/04/1999

शुक्र - चंद्र	
08/04/1999	
08/03/2002	
चंद्र	02/09/1999
मंगल	20/11/1999
बुध	06/05/2000
शनि	13/08/2000
गुरु	16/02/2001
राहु	15/06/2001
शुक्र	08/01/2002
सूर्य	08/03/2002

शुक्र - मंगल	
08/03/2002	
27/09/2003	
मंगल	19/04/2002
बुध	17/07/2002
शनि	08/09/2002
गुरु	17/12/2002
राहु	18/02/2003
शुक्र	09/06/2003
सूर्य	10/07/2003
चंद्र	27/09/2003

शुक्र - बुध	
27/09/2003	
16/01/2007	
बुध	04/04/2004
शनि	25/07/2004
गुरु	22/02/2005
राहु	06/07/2005
शुक्र	26/02/2006
सूर्य	04/05/2006
चंद्र	19/10/2006
मंगल	16/01/2007

शुक्र - शनि	
16/01/2007	
27/12/2008	
शनि	23/03/2007
गुरु	26/07/2007
राहु	13/10/2007
शुक्र	28/02/2008
सूर्य	08/04/2008
चंद्र	15/07/2008
मंगल	06/09/2008
बुध	27/12/2008

शुक्र - गुरु	
27/12/2008	
06/09/2012	
गुरु	21/08/2009
राहु	18/01/2010
शुक्र	07/10/2010
सूर्य	21/12/2010
चंद्र	27/06/2011
मंगल	05/10/2011
बुध	04/05/2012
शनि	06/09/2012

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध	
06/09/2012		06/01/2015		08/05/2015		07/03/2016		17/08/2016	
06/01/2015		08/05/2015		07/03/2016		17/08/2016		28/07/2017	
राहु	10/12/2012	सूर्य	13/01/2015	चंद्र	19/06/2015	मंगल	19/03/2016	बुध	10/10/2016
शुक्र	24/05/2013	चंद्र	30/01/2015	मंगल	12/07/2015	बुध	14/04/2016	शनि	11/11/2016
सूर्य	11/07/2013	मंगल	08/02/2015	बुध	29/08/2015	शनि	29/04/2016	गुरु	11/01/2017
चंद्र	06/11/2013	बुध	27/02/2015	शनि	26/09/2015	गुरु	28/05/2016	राहु	18/02/2017
मंगल	08/01/2014	शनि	10/03/2015	गुरु	18/11/2015	राहु	15/06/2016	शुक्र	26/04/2017
बुध	22/05/2014	गुरु	01/04/2015	राहु	22/12/2015	शुक्र	16/07/2016	सूर्य	15/05/2017
शनि	09/08/2014	राहु	14/04/2015	शुक्र	19/02/2016	सूर्य	25/07/2016	चंद्र	02/07/2017
गुरु	06/01/2015	शुक्र	08/05/2015	सूर्य	07/03/2016	चंद्र	17/08/2016	मंगल	28/07/2017

सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
28/07/2017		16/02/2018		08/03/2019		07/11/2019		06/01/2021	
16/02/2018		08/03/2019		07/11/2019		06/01/2021		06/02/2023	
शनि	15/08/2017	गुरु	24/04/2018	राहु	04/04/2019	शुक्र	28/01/2020	चंद्र	21/04/2021
गुरु	20/09/2017	राहु	06/06/2018	शुक्र	22/05/2019	सूर्य	21/02/2020	मंगल	17/06/2021
राहु	13/10/2017	शुक्र	20/08/2018	सूर्य	04/06/2019	चंद्र	20/04/2020	बुध	15/10/2021
शुक्र	21/11/2017	सूर्य	11/09/2018	चंद्र	08/07/2019	मंगल	22/05/2020	शनि	24/12/2021
सूर्य	02/12/2017	चंद्र	03/11/2018	मंगल	26/07/2019	बुध	28/07/2020	गुरु	07/05/2022
चंद्र	31/12/2017	मंगल	02/12/2018	बुध	02/09/2019	शनि	05/09/2020	राहु	30/07/2022
मंगल	15/01/2018	बुध	31/01/2019	शनि	25/09/2019	गुरु	19/11/2020	शुक्र	25/12/2022
बुध	16/02/2018	शनि	08/03/2019	गुरु	07/11/2019	राहु	06/01/2021	सूर्य	06/02/2023

चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु	
06/02/2023		17/03/2024		28/07/2026		17/12/2027		07/08/2030	
17/03/2024		28/07/2026		17/12/2027		07/08/2030		07/04/2032	
मंगल	08/03/2023	बुध	31/07/2024	शनि	13/09/2026	गुरु	04/06/2028	राहु	14/10/2030
बुध	11/05/2023	शनि	19/10/2024	गुरु	11/12/2026	राहु	19/09/2028	शुक्र	09/02/2031
शनि	17/06/2023	गुरु	20/03/2025	राहु	05/02/2027	शुक्र	25/03/2029	सूर्य	15/03/2031
गुरु	28/08/2023	राहु	24/06/2025	शुक्र	15/05/2027	सूर्य	18/05/2029	चंद्र	07/06/2031
राहु	12/10/2023	शुक्र	08/12/2025	सूर्य	12/06/2027	चंद्र	29/09/2029	मंगल	23/07/2031
शुक्र	30/12/2023	सूर्य	25/01/2026	चंद्र	22/08/2027	मंगल	09/12/2029	बुध	26/10/2031
सूर्य	21/01/2024	चंद्र	25/05/2026	मंगल	28/09/2027	बुध	10/05/2030	शनि	22/12/2031
चंद्र	17/03/2024	मंगल	28/07/2026	बुध	17/12/2027	शनि	07/08/2030	गुरु	07/04/2032

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि	
07/04/2032		08/03/2035		06/01/2036		10/08/2036		13/11/2037	
08/03/2035		06/01/2036		10/08/2036		13/11/2037		10/08/2038	
शुक्र	31/10/2032	सूर्य	25/03/2035	मंगल	23/01/2036	बुध	21/10/2036	शनि	08/12/2037
सूर्य	29/12/2032	चंद्र	06/05/2035	बुध	26/02/2036	शनि	03/12/2036	गुरु	25/01/2038
चंद्र	26/05/2033	मंगल	29/05/2035	शनि	17/03/2036	गुरु	22/02/2037	राहु	24/02/2038
मंगल	13/08/2033	बुध	16/07/2035	गुरु	24/04/2036	राहु	14/04/2037	शुक्र	17/04/2038
बुध	28/01/2034	शनि	13/08/2035	राहु	18/05/2036	शुक्र	12/07/2037	सूर्य	02/05/2038
शनि	06/05/2034	गुरु	05/10/2035	शुक्र	29/06/2036	सूर्य	07/08/2037	चंद्र	09/06/2038
गुरु	10/11/2034	राहु	08/11/2035	सूर्य	11/07/2036	चंद्र	10/10/2037	मंगल	29/06/2038
राहु	08/03/2035	शुक्र	06/01/2036	चंद्र	10/08/2036	मंगल	13/11/2037	बुध	10/08/2038

मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
10/08/2038		06/01/2040		26/11/2040		17/06/2042		27/11/2042	
06/01/2040		26/11/2040		17/06/2042		27/11/2042		06/01/2044	
गुरु	09/11/2038	राहु	12/02/2040	शुक्र	17/03/2041	सूर्य	26/06/2042	चंद्र	22/01/2043
राहु	05/01/2039	शुक्र	15/04/2040	सूर्य	17/04/2041	चंद्र	19/07/2042	मंगल	21/02/2043
शुक्र	15/04/2039	सूर्य	03/05/2040	चंद्र	05/07/2041	मंगल	31/07/2042	बुध	26/04/2043
सूर्य	13/05/2039	चंद्र	17/06/2040	मंगल	16/08/2041	बुध	25/08/2042	शनि	03/06/2043
चंद्र	24/07/2039	मंगल	11/07/2040	बुध	14/11/2041	शनि	09/09/2042	गुरु	13/08/2043
मंगल	31/08/2039	बुध	31/08/2040	शनि	05/01/2042	गुरु	08/10/2042	राहु	27/09/2043
बुध	20/11/2039	शनि	30/09/2040	गुरु	15/04/2042	राहु	26/10/2042	शुक्र	15/12/2043
शनि	06/01/2040	गुरु	26/11/2040	राहु	17/06/2042	शुक्र	27/11/2042	सूर्य	06/01/2044

बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र	
06/01/2044		10/09/2046		07/04/2048		04/04/2051		22/02/2053	
10/09/2046		07/04/2048		04/04/2051		22/02/2053		13/06/2056	
बुध	08/06/2044	शनि	02/11/2046	गुरु	16/10/2048	राहु	20/06/2051	शुक्र	15/10/2053
शनि	07/09/2044	गुरु	11/02/2047	राहु	14/02/2049	शुक्र	01/11/2051	सूर्य	21/12/2053
गुरु	26/02/2045	राहु	16/04/2047	शुक्र	15/09/2049	सूर्य	09/12/2051	चंद्र	07/06/2054
राहु	14/06/2045	शुक्र	06/08/2047	सूर्य	14/11/2049	चंद्र	14/03/2052	मंगल	04/09/2054
शुक्र	21/12/2045	सूर्य	07/09/2047	चंद्र	15/04/2050	मंगल	04/05/2052	बुध	13/03/2055
सूर्य	14/02/2046	चंद्र	26/11/2047	मंगल	05/07/2050	बुध	21/08/2052	शनि	03/07/2055
चंद्र	29/06/2046	मंगल	07/01/2048	बुध	24/12/2050	शनि	24/10/2052	गुरु	31/01/2056
मंगल	10/09/2046	बुध	07/04/2048	शनि	04/04/2051	गुरु	22/02/2053	राहु	13/06/2056

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 3 वर्ष 2 मास 4 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
01/11/1954		05/01/1958		05/01/1966		06/01/1967		05/01/1969	
05/01/1958		05/01/1966		06/01/1967		05/01/1969		06/01/1972	
	00/00/0000	संक	17/10/1959	मंग	15/01/1966	पिंग	15/02/1967	धांय	06/04/1969
	00/00/0000	मंग	06/01/1960	पिंग	05/02/1966	धांय	17/04/1967	भ्राम	06/08/1969
	00/00/0000	पिंग	16/06/1960	धांय	07/03/1966	भ्राम	07/07/1967	भद्रि	05/01/1970
	01/11/1954	धांय	15/02/1961	भ्राम	17/04/1966	भद्रि	17/10/1967	उल्क	07/07/1970
धांय	05/02/1955	भ्राम	05/01/1962	भद्रि	06/06/1966	उल्क	15/02/1968	सिद्ध	05/02/1971
भ्राम	16/11/1955	भद्रि	15/02/1963	उल्क	06/08/1966	सिद्ध	06/07/1968	संक	06/10/1971
भद्रि	05/11/1956	उल्क	16/06/1964	सिद्ध	16/10/1966	संक	16/12/1968	मंग	06/11/1971
उल्क	05/01/1958	सिद्ध	05/01/1966	संक	06/01/1967	मंग	05/01/1969	पिंग	06/01/1972

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
06/01/1972		06/01/1976		05/01/1981		06/01/1987		05/01/1994	
06/01/1976		05/01/1981		06/01/1987		05/01/1994		05/01/2002	
भ्राम	16/06/1972	भद्रि	15/09/1976	उल्क	05/01/1982	सिद्ध	17/05/1988	संक	17/10/1995
भद्रि	05/01/1973	उल्क	17/07/1977	सिद्ध	07/03/1983	संक	06/12/1989	मंग	06/01/1996
उल्क	06/09/1973	सिद्ध	07/07/1978	संक	06/07/1984	मंग	15/02/1990	पिंग	16/06/1996
सिद्ध	17/06/1974	संक	17/08/1979	मंग	05/09/1984	पिंग	07/07/1990	धांय	15/02/1997
संक	07/05/1975	मंग	06/10/1979	पिंग	05/01/1985	धांय	05/02/1991	भ्राम	05/01/1998
मंग	17/06/1975	पिंग	16/01/1980	धांय	07/07/1985	भ्राम	16/11/1991	भद्रि	15/02/1999
पिंग	06/09/1975	धांय	16/06/1980	भ्राम	07/03/1986	भद्रि	05/11/1992	उल्क	16/06/2000
धांय	06/01/1976	भ्राम	05/01/1981	भद्रि	06/01/1987	उल्क	05/01/1994	सिद्ध	05/01/2002

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
05/01/2002		06/01/2003		05/01/2005		06/01/2008		06/01/2012	
06/01/2003		05/01/2005		06/01/2008		06/01/2012		05/01/2017	
मंग	15/01/2002	पिंग	15/02/2003	धांय	06/04/2005	भ्राम	16/06/2008	भद्रि	15/09/2012
पिंग	05/02/2002	धांय	17/04/2003	भ्राम	06/08/2005	भद्रि	05/01/2009	उल्क	17/07/2013
धांय	07/03/2002	भ्राम	07/07/2003	भद्रि	05/01/2006	उल्क	06/09/2009	सिद्ध	07/07/2014
भ्राम	17/04/2002	भद्रि	17/10/2003	उल्क	07/07/2006	सिद्ध	17/06/2010	संक	17/08/2015
भद्रि	06/06/2002	उल्क	15/02/2004	सिद्ध	05/02/2007	संक	07/05/2011	मंग	06/10/2015
उल्क	06/08/2002	सिद्ध	06/07/2004	संक	06/10/2007	मंग	17/06/2011	पिंग	16/01/2016
सिद्ध	16/10/2002	संक	16/12/2004	मंग	06/11/2007	पिंग	06/09/2011	धांय	16/06/2016
संक	06/01/2003	मंग	05/01/2005	पिंग	06/01/2008	धांय	06/01/2012	भ्राम	05/01/2017

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
05/01/2017		06/01/2023		05/01/2030		05/01/2038		06/01/2039	
06/01/2023		05/01/2030		05/01/2038		06/01/2039		05/01/2041	
उल्क	05/01/2018	सिद्ध	17/05/2024	संक	17/10/2031	मंग	15/01/2038	पिंग	15/02/2039
सिद्ध	07/03/2019	संक	06/12/2025	मंग	06/01/2032	पिंग	05/02/2038	धांय	17/04/2039
संक	06/07/2020	मंग	15/02/2026	पिंग	16/06/2032	धांय	07/03/2038	भ्राम	07/07/2039
मंग	05/09/2020	पिंग	07/07/2026	धांय	15/02/2033	भ्राम	17/04/2038	भद्रि	17/10/2039
पिंग	05/01/2021	धांय	05/02/2027	भ्राम	05/01/2034	भद्रि	06/06/2038	उल्क	15/02/2040
धांय	07/07/2021	भ्राम	16/11/2027	भद्रि	15/02/2035	उल्क	06/08/2038	सिद्ध	06/07/2040
भ्राम	07/03/2022	भद्रि	05/11/2028	उल्क	16/06/2036	सिद्ध	16/10/2038	संक	16/12/2040
भद्रि	06/01/2023	उल्क	05/01/2030	सिद्ध	05/01/2038	संक	06/01/2039	मंग	05/01/2041

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
05/01/2041		06/01/2044		06/01/2048		05/01/2053		06/01/2059	
06/01/2044		06/01/2048		05/01/2053		06/01/2059		00/00/0000	
धांय	06/04/2041	भ्राम	16/06/2044	भद्रि	15/09/2048	उल्क	05/01/2054	सिद्ध	17/05/2060
भ्राम	06/08/2041	भद्रि	05/01/2045	उल्क	17/07/2049	सिद्ध	07/03/2055	संक	06/12/2061
भद्रि	05/01/2042	उल्क	06/09/2045	सिद्ध	07/07/2050	संक	06/07/2056	मंग	15/02/2062
उल्क	07/07/2042	सिद्ध	17/06/2046	संक	17/08/2051	मंग	05/09/2056	पिंग	07/07/2062
सिद्ध	05/02/2043	संक	07/05/2047	मंग	06/10/2051	पिंग	05/01/2057	धांय	01/11/2062
संक	06/10/2043	मंग	17/06/2047	पिंग	16/01/2052	धांय	07/07/2057		00/00/0000
मंग	06/11/2043	पिंग	06/09/2047	धांय	16/06/2052	भ्राम	07/03/2058		00/00/0000
पिंग	06/01/2044	धांय	06/01/2048	भ्राम	05/01/2053	भद्रि	06/01/2059		00/00/0000

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम	
17/05/2024		06/12/2025		15/02/2026		07/07/2026		05/02/2027	
06/12/2025		15/02/2026		07/07/2026		05/02/2027		16/11/2027	
संक	20/09/2024	मंग	08/12/2025	पिंग	23/02/2026	धांय	25/07/2026	भ्राम	09/03/2027
मंग	06/10/2024	पिंग	12/12/2025	धांय	07/03/2026	भ्राम	17/08/2026	भद्रि	17/04/2027
पिंग	06/11/2024	धांय	18/12/2025	भ्राम	22/03/2026	भद्रि	16/09/2026	उल्क	03/06/2027
धांय	24/12/2024	भ्राम	26/12/2025	भद्रि	11/04/2026	उल्क	21/10/2026	सिद्ध	29/07/2027
भ्राम	25/02/2025	भद्रि	04/01/2026	उल्क	05/05/2026	सिद्ध	02/12/2026	संक	30/09/2027
भद्रि	15/05/2025	उल्क	16/01/2026	सिद्ध	01/06/2026	संक	18/01/2027	मंग	08/10/2027
उल्क	17/08/2025	सिद्ध	30/01/2026	संक	03/07/2026	मंग	24/01/2027	पिंग	23/10/2027
सिद्ध	06/12/2025	संक	15/02/2026	मंग	07/07/2026	पिंग	05/02/2027	धांय	16/11/2027

सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग		संक - पिंग	
16/11/2027		05/11/2028		05/01/2030		17/10/2031		06/01/2032	
05/11/2028		05/01/2030		17/10/2031		06/01/2032		16/06/2032	
भद्रि	04/01/2028	उल्क	15/01/2029	संक	30/05/2030	मंग	19/10/2031	पिंग	15/01/2032
उल्क	04/03/2028	सिद्ध	08/04/2029	मंग	17/06/2030	पिंग	23/10/2031	धांय	28/01/2032
सिद्ध	12/05/2028	संक	12/07/2029	पिंग	23/07/2030	धांय	30/10/2031	भ्राम	15/02/2032
संक	30/07/2028	मंग	24/07/2029	धांय	15/09/2030	भ्राम	08/11/2031	भद्रि	09/03/2032
मंग	08/08/2028	पिंग	16/08/2029	भ्राम	26/11/2030	भद्रि	19/11/2031	उल्क	05/04/2032
पिंग	28/08/2028	धांय	21/09/2029	भद्रि	24/02/2031	उल्क	03/12/2031	सिद्ध	07/05/2032
धांय	27/09/2028	भ्राम	07/11/2029	उल्क	12/06/2031	सिद्ध	19/12/2031	संक	12/06/2032
भ्राम	05/11/2028	भद्रि	05/01/2030	सिद्ध	17/10/2031	संक	06/01/2032	मंग	16/06/2032

संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध	
16/06/2032		15/02/2033		05/01/2034		15/02/2035		16/06/2036	
15/02/2033		05/01/2034		15/02/2035		16/06/2036		05/01/2038	
धांय	06/07/2032	भ्राम	23/03/2033	भद्रि	03/03/2034	उल्क	07/05/2035	सिद्ध	05/10/2036
भ्राम	02/08/2032	भद्रि	07/05/2033	उल्क	09/05/2034	सिद्ध	10/08/2035	संक	08/02/2037
भद्रि	05/09/2032	उल्क	30/06/2033	सिद्ध	27/07/2034	संक	26/11/2035	मंग	24/02/2037
उल्क	16/10/2032	सिद्ध	01/09/2033	संक	25/10/2034	मंग	10/12/2035	पिंग	27/03/2037
सिद्ध	02/12/2032	संक	12/11/2033	मंग	06/11/2034	पिंग	06/01/2036	धांय	14/05/2037
संक	25/01/2033	मंग	21/11/2033	पिंग	28/11/2034	धांय	15/02/2036	भ्राम	16/07/2037
मंग	01/02/2033	पिंग	09/12/2033	धांय	01/01/2035	भ्राम	09/04/2036	भद्रि	03/10/2037
पिंग	15/02/2033	धांय	05/01/2034	भ्राम	15/02/2035	भद्रि	16/06/2036	उल्क	05/01/2038

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि	
05/01/2038		15/01/2038		05/02/2038		07/03/2038		17/04/2038	
15/01/2038		05/02/2038		07/03/2038		17/04/2038		06/06/2038	
मंग	06/01/2038	पिंग	17/01/2038	धांय	07/02/2038	भ्राम	12/03/2038	भद्रि	24/04/2038
पिंग	06/01/2038	धांय	18/01/2038	भ्राम	11/02/2038	भद्रि	17/03/2038	उल्क	02/05/2038
धांय	07/01/2038	भ्राम	21/01/2038	भद्रि	15/02/2038	उल्क	24/03/2038	सिद्ध	12/05/2038
भ्राम	08/01/2038	भद्रि	23/01/2038	उल्क	20/02/2038	सिद्ध	01/04/2038	संक	23/05/2038
भद्रि	10/01/2038	उल्क	27/01/2038	सिद्ध	26/02/2038	संक	10/04/2038	मंग	25/05/2038
उल्क	11/01/2038	सिद्ध	31/01/2038	संक	05/03/2038	मंग	11/04/2038	पिंग	28/05/2038
सिद्ध	13/01/2038	संक	04/02/2038	मंग	05/03/2038	पिंग	13/04/2038	धांय	01/06/2038
संक	15/01/2038	मंग	05/02/2038	पिंग	07/03/2038	धांय	17/04/2038	भ्राम	06/06/2038

मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक		पिंग - पिंग		पिंग - धांय	
06/06/2038		06/08/2038		16/10/2038		06/01/2039		15/02/2039	
06/08/2038		16/10/2038		06/01/2039		15/02/2039		17/04/2039	
उल्क	17/06/2038	सिद्ध	20/08/2038	संक	03/11/2038	पिंग	08/01/2039	धांय	20/02/2039
सिद्ध	28/06/2038	संक	05/09/2038	मंग	06/11/2038	धांय	11/01/2039	भ्राम	27/02/2039
संक	12/07/2038	मंग	07/09/2038	पिंग	10/11/2038	भ्राम	16/01/2039	भद्रि	07/03/2039
मंग	14/07/2038	पिंग	11/09/2038	धांय	17/11/2038	भद्रि	21/01/2039	उल्क	18/03/2039
पिंग	17/07/2038	धांय	17/09/2038	भ्राम	26/11/2038	उल्क	28/01/2039	सिद्ध	29/03/2039
धांय	22/07/2038	भ्राम	25/09/2038	भद्रि	07/12/2038	सिद्ध	05/02/2039	संक	12/04/2039
भ्राम	29/07/2038	भद्रि	05/10/2038	उल्क	21/12/2038	संक	14/02/2039	मंग	14/04/2039
भद्रि	06/08/2038	उल्क	16/10/2038	सिद्ध	06/01/2039	मंग	15/02/2039	पिंग	17/04/2039

पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध		पिंग - संक	
17/04/2039		07/07/2039		17/10/2039		15/02/2040		06/07/2040	
07/07/2039		17/10/2039		15/02/2040		06/07/2040		16/12/2040	
भ्राम	26/04/2039	भद्रि	21/07/2039	उल्क	06/11/2039	सिद्ध	14/03/2040	संक	11/08/2040
भद्रि	07/05/2039	उल्क	07/08/2039	सिद्ध	30/11/2039	संक	15/04/2040	मंग	16/08/2040
उल्क	21/05/2039	सिद्ध	27/08/2039	संक	27/12/2039	मंग	18/04/2040	पिंग	25/08/2040
सिद्ध	06/06/2039	संक	18/09/2039	मंग	30/12/2039	पिंग	26/04/2040	धांय	08/09/2040
संक	24/06/2039	मंग	21/09/2039	पिंग	06/01/2040	धांय	08/05/2040	भ्राम	26/09/2040
मंग	26/06/2039	पिंग	27/09/2039	धांय	16/01/2040	भ्राम	24/05/2040	भद्रि	18/10/2040
पिंग	30/06/2039	धांय	05/10/2039	भ्राम	29/01/2040	भद्रि	13/06/2040	उल्क	14/11/2040
धांय	07/07/2039	भ्राम	17/10/2039	भद्रि	15/02/2040	उल्क	06/07/2040	सिद्ध	16/12/2040

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 0 वर्ष 8 मास 26 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : पूर्वाषाढ़ा - 3 सव्य
देह : वृष जीव : मिथुन

तुला 16 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष		मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष	
01/11/1954		29/07/1955		29/07/1962		28/07/1972		28/07/1976	
29/07/1955		29/07/1962		28/07/1972		28/07/1976		28/07/1980	
00/00/0000	वृश्चि	01/03/1956	धनु	12/10/1963	मक	07/10/1972	कुंभ	07/10/1976
00/00/0000	धनु	03/01/1957	मक	05/04/1964	कुंभ	16/12/1972	मीन	01/04/1977
00/00/0000	मक	06/05/1957	कुंभ	28/09/1964	मीन	10/06/1973	वृश्चि	02/08/1977
00/00/0000	कुंभ	06/09/1957	मीन	12/12/1965	वृश्चि	11/10/1973	तुला	11/05/1978
00/00/0000	मीन	11/07/1958	वृश्चि	16/10/1966	तुला	20/07/1974	कन्या	16/10/1978
00/00/0000	वृश्चि	12/02/1959	तुला	19/09/1968	कन्या	25/12/1974	तुला	25/07/1979
00/00/0000	तुला	19/06/1960	कन्या	20/10/1969	तुला	03/10/1975	वृश्चि	25/11/1979
01/11/1954	कन्या	23/03/1961	तुला	24/09/1971	वृश्चि	03/02/1976	धनु	19/05/1980
कन्या	29/07/1955	तुला	29/07/1962	वृश्चि	28/07/1972	धनु	28/07/1976	मक	28/07/1980

मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
28/07/1980		29/07/1990		29/07/1997		29/07/2013		29/07/2022	
29/07/1990		29/07/1997		29/07/2013		29/07/2022		01/11/2037	
मीन	11/10/1981	वृश्चि	01/03/1991	तुला	28/08/2000	कन्या	20/07/2014	तुला	28/08/2025
वृश्चि	15/08/1982	तुला	06/07/1992	कन्या	24/05/2002	तुला	14/04/2016	वृश्चि	03/01/2027
तुला	20/07/1984	कन्या	10/04/1993	तुला	23/06/2005	वृश्चि	16/01/2017	धनु	07/12/2028
कन्या	20/08/1985	तुला	15/08/1994	वृश्चि	29/10/2006	धनु	16/02/2018	मक	15/09/2029
तुला	25/07/1987	वृश्चि	19/03/1995	धनु	02/10/2008	मक	24/07/2018	कुंभ	24/06/2030
वृश्चि	28/05/1988	धनु	21/01/1996	मक	11/07/2009	कुंभ	30/12/2018	मीन	28/05/2032
धनु	11/08/1989	मक	23/05/1996	कुंभ	19/04/2010	मीन	30/01/2020	वृश्चि	03/10/2033
मक	03/02/1990	कुंभ	24/09/1996	मीन	23/03/2012	वृश्चि	02/11/2020	तुला	02/11/2036
कुंभ	29/07/1990	मीन	29/07/1997	वृश्चि	29/07/2013	तुला	29/07/2022	कन्या	01/11/2037

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - वृश्चि		तुला - धनु		तुला - मक		तुला - कुंभ		तुला - मीन	
28/08/2025		03/01/2027		07/12/2028		15/09/2029		24/06/2030	
03/01/2027		07/12/2028		15/09/2029		24/06/2030		28/05/2032	
वृश्चि	09/10/2025	धनु	29/03/2027	मक	21/12/2028	कुंभ	29/09/2029	मीन	16/09/2030
धनु	07/12/2025	मक	02/05/2027	कुंभ	04/01/2029	मीन	02/11/2029	वृश्चि	15/11/2030
मक	31/12/2025	कुंभ	05/06/2027	मीन	06/02/2029	वृश्चि	25/11/2029	तुला	31/03/2031
कुंभ	24/01/2026	मीन	29/08/2027	वृश्चि	02/03/2029	तुला	19/01/2030	कन्या	15/06/2031
मीन	24/03/2026	वृश्चि	27/10/2027	तुला	26/04/2029	कन्या	18/02/2030	तुला	29/10/2031
वृश्चि	05/05/2026	तुला	11/03/2028	कन्या	26/05/2029	तुला	13/04/2030	वृश्चि	27/12/2031
तुला	08/08/2026	कन्या	26/05/2028	तुला	19/07/2029	वृश्चि	07/05/2030	धनु	21/03/2032
कन्या	30/09/2026	तुला	09/10/2028	वृश्चि	12/08/2029	धनु	10/06/2030	मक	24/04/2032
तुला	03/01/2027	वृश्चि	07/12/2028	धनु	15/09/2029	मक	24/06/2030	कुंभ	28/05/2032

तुला - वृश्चि		तुला - तुला		तुला - कन्या	
28/05/2032		03/10/2033		02/11/2036	
03/10/2033		02/11/2036		00/00/0000	
वृश्चि	08/07/2032	तुला	08/05/2034	कन्या	10/01/2037
तुला	11/10/2032	कन्या	07/09/2034	तुला	12/05/2037
कन्या	04/12/2032	तुला	12/04/2035	वृश्चि	04/07/2037
तुला	09/03/2033	वृश्चि	16/07/2035	धनु	19/09/2037
वृश्चि	19/04/2033	धनु	29/11/2035	मक	19/10/2037
धनु	18/06/2033	मक	22/01/2036	कुंभ	01/11/2037
मक	11/07/2033	कुंभ	16/03/2036		00/00/0000
कुंभ	04/08/2033	मीन	30/07/2036		00/00/0000
मीन	03/10/2033	वृश्चि	02/11/2036		00/00/0000

चर दशा

भोग्य दशा काल : मिथुन 4 वर्ष 0 मास 0 दिन

मिथुन 4 वर्ष	
01/11/1954	
01/11/1958	
वृष	03/03/1955
मेष	03/07/1955
मीन	02/11/1955
कुंभ	02/03/1956
मक	02/07/1956
धनु	01/11/1956
वृश्चि	03/03/1957
तुला	02/07/1957
कन्या	01/11/1957
सिंह	03/03/1958
कर्क	03/07/1958
मिथु	01/11/1958

वृष 6 वर्ष	
01/11/1958	
01/11/1964	
मेष	03/05/1959
मीन	02/11/1959
कुंभ	02/05/1960
मक	01/11/1960
धनु	03/05/1961
वृश्चि	01/11/1961
तुला	03/05/1962
कन्या	01/11/1962
सिंह	03/05/1963
कर्क	02/11/1963
मिथु	02/05/1964
वृष	01/11/1964

मेष 9 वर्ष	
01/11/1964	
01/11/1973	
वृष	02/08/1965
मिथु	03/05/1966
कर्क	01/02/1967
सिंह	02/11/1967
कन्या	02/08/1968
तुला	03/05/1969
वृश्चि	01/02/1970
धनु	01/11/1970
मक	02/08/1971
कुंभ	02/05/1972
मीन	31/01/1973
मेष	01/11/1973

मीन 8 वर्ष	
01/11/1973	
01/11/1981	
मेष	03/07/1974
वृष	03/03/1975
मिथु	02/11/1975
कर्क	02/07/1976
सिंह	03/03/1977
कन्या	01/11/1977
तुला	03/07/1978
वृश्चि	03/03/1979
धनु	02/11/1979
मक	02/07/1980
कुंभ	03/03/1981
मीन	01/11/1981

कुम्भ 4 वर्ष	
01/11/1981	
01/11/1985	
मीन	03/03/1982
मेष	03/07/1982
वृष	01/11/1982
मिथु	03/03/1983
कर्क	03/07/1983
सिंह	02/11/1983
कन्या	02/03/1984
तुला	02/07/1984
वृश्चि	01/11/1984
धनु	03/03/1985
मक	02/07/1985
कुंभ	01/11/1985

मकर 3 वर्ष	
01/11/1985	
01/11/1988	
धनु	01/02/1986
वृश्चि	03/05/1986
तुला	02/08/1986
कन्या	01/11/1986
सिंह	01/02/1987
कर्क	03/05/1987
मिथु	02/08/1987
वृष	02/11/1987
मेष	01/02/1988
मीन	02/05/1988
कुंभ	02/08/1988
मक	01/11/1988

धनु 7 वर्ष	
01/11/1988	
02/11/1995	
वृश्चि	02/06/1989
तुला	01/01/1990
कन्या	02/08/1990
सिंह	03/03/1991
कर्क	02/10/1991
मिथु	02/05/1992
वृष	01/12/1992
मेष	02/07/1993
मीन	01/02/1994
कुंभ	02/09/1994
मक	03/04/1995
धनु	02/11/1995

वृश्चिक 2 वर्ष	
02/11/1995	
01/11/1997	
तुला	02/01/1996
कन्या	02/03/1996
सिंह	02/05/1996
कर्क	02/07/1996
मिथु	01/09/1996
वृष	01/11/1996
मेष	01/01/1997
मीन	03/03/1997
कुंभ	03/05/1997
मक	02/07/1997
धनु	01/09/1997
वृश्चि	01/11/1997

तुला 1 वर्ष	
01/11/1997	
01/11/1998	
वृश्चि	02/12/1997
धनु	01/01/1998
मक	01/02/1998
कुंभ	03/03/1998
मीन	02/04/1998
मेष	03/05/1998
वृष	02/06/1998
मिथु	03/07/1998
कर्क	02/08/1998
सिंह	02/09/1998
कन्या	02/10/1998
तुला	01/11/1998

कन्या 11 वर्ष	
01/11/1998	
01/11/2009	
तुला	02/10/1999
वृश्चि	01/09/2000
धनु	02/08/2001
मक	03/07/2002
कुंभ	03/06/2003
मीन	02/05/2004
मेष	02/04/2005
वृष	03/03/2006
मिथु	01/02/2007
कर्क	02/01/2008
सिंह	01/12/2008
कन्या	01/11/2009

सिंह 10 वर्ष	
01/11/2009	
02/11/2019	
कन्या	02/09/2010
तुला	03/07/2011
वृश्चि	02/05/2012
धनु	03/03/2013
मक	01/01/2014
कुंभ	01/11/2014
मीन	02/09/2015
मेष	02/07/2016
वृष	03/05/2017
मिथु	03/03/2018
कर्क	01/01/2019
सिंह	02/11/2019

कर्क 7 वर्ष	
02/11/2019	
01/11/2026	
मिथु	02/06/2020
वृष	01/01/2021
मेष	02/08/2021
मीन	03/03/2022
कुंभ	02/10/2022
मक	03/05/2023
धनु	02/12/2023
वृश्चि	02/07/2024
तुला	31/01/2025
कन्या	01/09/2025
सिंह	02/04/2026
कर्क	01/11/2026

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - सिंह	
01/09/2025	
02/04/2026	
कन्या	19/09/2025
तुला	07/10/2025
वृश्चि	25/10/2025
धनु	11/11/2025
मक	29/11/2025
कुंभ	17/12/2025
मीन	04/01/2026
मेष	21/01/2026
वृष	08/02/2026
मिथु	26/02/2026
कर्क	16/03/2026
सिंह	02/04/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - कर्क	
02/04/2026	
01/11/2026	
मिथु	20/04/2026
वृष	08/05/2026
मेष	26/05/2026
मीन	12/06/2026
कुंभ	30/06/2026
मक	18/07/2026
धनु	05/08/2026
वृश्चि	22/08/2026
तुला	09/09/2026
कन्या	27/09/2026
सिंह	15/10/2026
कर्क	01/11/2026

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, सुख
नीलम	शनि	81%	सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	75%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	69%	धन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	58%	दम्पति, धन
माणिक्य	सूर्य	55%	सन्तति सुख, पराक्रम
गोमेद	राहु	52%	दम्पति, धन
हीरा	शुक्र	50%	शत्रु व रोग मुक्ति, कम खर्च, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	0%	दुर्घटना, हानि, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

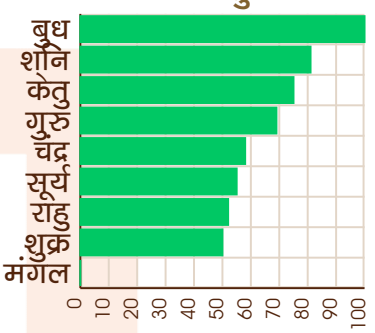

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	01/12/1963	34%	41%	0%	100%	69%	62%	88%	58%	81%
सूर्य	01/12/1969	67%	64%	0%	100%	75%	25%	69%	28%	62%
चंद्र	01/12/1979	61%	70%	0%	100%	69%	50%	81%	28%	62%
मंगल	01/12/1986	61%	64%	0%	100%	75%	50%	81%	28%	81%
राहु	30/11/2004	34%	41%	0%	100%	69%	56%	88%	64%	62%
गुरु	30/11/2020	61%	64%	0%	100%	81%	25%	81%	52%	75%
शनि	01/12/2039	34%	41%	0%	100%	69%	56%	94%	58%	62%
बुध	30/11/2056	61%	41%	0%	100%	69%	56%	81%	52%	75%
केतु	01/12/2063	34%	41%	0%	100%	69%	56%	69%	28%	88%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना, नीलम व लहसुनिया रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

लहसुनिया आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पुखराज, मोती, माणिक्य, गोमेद एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध पंचम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त, कुशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। रत्न की शुभता से वाद विवाद में कुशल, तर्ककुशल और मधुरभाषी बनेंगे। यह रत्न आपको सदाचारी, धैर्यशील, चरित्रवान और संतोषी बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आप अपनी बुद्धि से धनार्जन करेंगे। यह रत्न आपको अपनी व्यवसायिक बुद्धि और विद्या के कारण एक सुखद जीवन व्यतीत करने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव आपको लोभ भावना से बचायेगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं चतुर्थेश होते है। लग्नेश बुध का रत्न पन्ना आपके लिए जीवन रत्न के समान कार्य करेगा। पन्ना रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य, बौद्धिक योग्यता दे सकता है। पन्ना रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी। बुध आपके लिए चतुर्थेश है इसलिए पन्ना रत्न धारण करने से मातृ पक्ष एवं भू-संपति पक्ष बलवान हो सकता है। यह रत्न आपको विनोदी, बुद्धिमान एवं गणितीय कौशल को भी बढ़ायेगा। पन्ना रत्न की शुभता से आप दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि पंचम भाव में स्थित है। शनि रत्न नीलम आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। नीलम रत्न अद्भुत और अचूक प्रभावशाली रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आप परिश्रमी, भ्रमणशील, प्रसन्न और सुखी रखेगा। रत्न शुभता से आप दीर्घायु होंगे। आपको अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। नीलम रत्न आपके शैक्षिक व्यवधानों को दूर करेगा। धर्म क्रियाओं की ओर उन्मुख होंगे। आपकी धन संपति में बढ़ोतरी होगी। धीरे धीरे आपकी प्रसिद्धि का विस्तार होगा। रत्न प्रभाव से आपके व्यवहार में मधुरता आयेगी।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं अष्टमेश है। नवमेश शनि का रत्न नीलम धारण कर आप अपने भाग्य में वृद्धि कर सकते है। नीलम रत्न आपको माता-पिता का सुख प्रदान करेगा। रत्न शुभता से आपको भूमि व संपति से लाभ दे सकता है। शनि रत्न नीलम अष्टमेश का रत्न है इसलिए इस रत्न को धारण कर आप अप्रत्याशित लाभ प्राप्त कर

सकते है। नीलम रत्न आपको शत्रुओं पर हावी रख सकता है। यह रत्न आपको भाग्यवान बना सकता है। यह रत्न आपको शारीरिक कष्टों से बचा सकता है। साथ ही यह रत्न आपके शारीरिक बल में भी वृद्धि कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसूनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेंगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध पंचम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण कर आपकी बुद्धिमत्ता का विकास होता है। यह रत्न वाणी में शुभता, विनम्र वाणी, संचित धन एवं आत्मशक्ति बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज की शुभता से आपमें दार्शनिक प्रवृति का भाव जाग्रत होगा। धन-धान्य, यश और सम्मान की प्राप्ति होगी। पुखराज से शैक्षिक क्षेत्र में शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। ग्रुरु ग्रह की शुभता को बढ़ाने और अशुभता में कमी करने के लिए आप यह रत्न धारण करें।

आपकी मिथुन लग्न की कुंड़ली में गुरु सप्तमेश एवं दशमेश है। गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आप पुखराज रत्न धारण करें। पुखराज रत्न धारण करने से आपके जीवन के सुखों में बढ़ोतरी हो सकती है। यह रत्न आपको स्वाभिमानी, उच्च मनोबल, पिता सुख, कार्यक्षेत्र में लाभ दे सकता है। सप्तमेश का रत्न होने के कारण पुखराज आपका दांपत्य जीवन सुखी, भाग्य वृद्धि व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दे सकता है। गुरु रत्न की शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में पद और धन दोनों की प्राप्ति हो सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न धारण से आपके स्वभाव की चंचलता की कमी होगी। यह रत्न आपकी नेतृत्त्व करने की क्षमता बढ़ायेगा। रत्न शुभता से आपको अनेक यात्राएं करनी पड़ सकती है। मोती रत्न आपकी स्फूर्ति बढ़ायेगा। जीवन साथी से आपके संबंध आत्मीय रहेंगे। मोती रत्न आपको आपके व्यवसाय में अच्छी सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपको एक से अधिक बार व्यापार क्षेत्र में बदलाव करने पड़ सकते है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में चंद्र दूसरे भाव के स्वामी है। चंद्र लग्नेश बुध का मित्र भी है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण कर आप चंद्र शुभता प्राप्त कर सकते है। मोती रत्न

आपको शारीरिक बल तथा मानसिक शक्तियों द्वारा धन व कुटुम्ब से सुखी रख सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप धनी, सुखी एवं सम्मानित व्यक्ति बन सकते है। मोती चंद्र द्वितीयेश का रत्न होने के कारण आपको सुन्दर व सुशील जीवन साथी, दांपत्य जीवन में मधुरता देगा। इसके साथ ही इस रत्न को आप दैनिक व्यवसाय में सफलता के लिए भी धारण कर सकते है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। आपको सूर्य माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आप सदाचार मार्ग का पालन करते है। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। यह रत्न आपको हाजिरजवाब बनायेगा। इसकी शुभता से आपकी लेखन क्षमता का विस्तार होगा। आपकी परामर्श शक्ति का विकास होगा। सूर्य रत्न माणिक्य व्यापार और व्यवसाय को बेहतर करेगा। संतान सुख बढ़ेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुकूल तरक्की होगी। संतान मेधावी और कुल का नाम करती है। माणिक्य रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में सूर्य तृतीय भाव का स्वामी है। पराक्रमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से अपने अधिकारिक शक्तियों में बढ़ोतरी कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण बाहुबल द्वारा धन व परिवार में वृद्धि, भाई-बहनों से सुख प्राप्त करा सकता है। माणिक्य की शुभता आपको धनी, साहसी, प्रभावशाली व्यक्तित्व भी प्रदान कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप यात्राओं में सुख का अनुभव करेंगे। सूर्य की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न आपको स्वतंत्र व्यापार करने की ओर प्रेरित कर रहा है। रत्न शुभता से आपका कार्य कौशल चतुराई से परिपूर्ण रहेगा। आपका विवाह अपेक्षाकृत शीघ्र या विलम्ब से हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपका अपने जीवनसाथी के मध्य प्रेम संबंध अनुकूल रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आपको गोमेद रत्न धारण करना चाहिए। यह रत्न आपके स्वभाव की उग्रता को नियंत्रित रखेगा।

राहु धनु राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी गुरु दूसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको सुशिक्षित और विवेकवान बनायेगा। नौकरी क्षेत्र में आपको स्त्रियों से सहयोग की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके साहस को नियंत्रित करेगा। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्र-पौत्रों से युक्त हो सकते है। यह रत्न धारण कर आप आवश्यक विषयों पर

व्यय करने का प्रयास करेंगे। आपको भाई-बहनों और मामा से सुख प्राप्त होगा। स्वतंत्र व्यवसाय से उत्तम लाभ प्राप्त करने के लिए भी आप यह पुखराज रत्न धारण कर सकते है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंड़ली में शुक्र पंचमेश एवं द्वादशेश है। शुक्र लग्नेश बुध के मित्र भी है। त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह है। शुक्र ग्रह की शुभता को बढ़ाने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपको संतान से सुखी, विद्वान बना सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आप को विदेश जाने के अवसर, व्ययों पर नियंत्रण लगायें रखने में सफल हो सकते है। शुक्र रत्न हीरे से आप भोगविलास के आदी नहीं होंगे। यह रत्न आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने में सहयोगी हो सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंड़ली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपका अपना ससुराल पक्ष से संबंध खराब हो सकते है। यह रत्न आपको बहुत अनुकूल परिणाम नहीं दे पाएगा। रत्न धारण करने पर शुभचिंतको के द्वारा भी आपका भला नहीं हो पाएगा। रत्न धारण करने पर संभव है कि कानून नियमों के अन्तर्गत रहकर आप अपना जीवनयापन न कर पायें। मूंगा रत्न आपको गुदा संबंधित रोग दे सकता है। रत्न के कारण आपके शरीर में फोडे फुंसी या घाव होने के योग भी बन सकते है। मूंगा धारण करने पर आपको दुर्घटनाओं, आग और चोरी की वजह से धन हानि हो सकती है। यह रत्न आपको वाणी में कडवाहट दे सकता है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में मंगल षष्ठ भाव एवं आय भाव के स्वामी है। छठे भाव का स्वामित्व होने के कारण मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए कुछ कष्टप्रद हो सकता है। मूंगा रत्न पहनना आपको नेत्रों से संबंधित रोग शीघ्र दे सकता है। आप कम मिलनसार हो सकते है। लड़ाई-झगड़ों से बचने का प्रयास करेंगे। आपत्ति आने पर आप अत्यधिक साहस भाव से काम लेंगे। जिसके कारण चोट आदि की स्थिति बन सकती है। यह रत्न आपको क्रोधी, सख्त बोलने वाले, रक्त विकारी एवं हठी बना सकता हैं. मूंगा रत्न आपको शत्रुओं द्वारा हानि दे सकता है। अप्रयाशित घटनाओं के कारण आर्थिक स्थिति में अस्थिरता बन

सकती है। आय क्षेत्रों में चोरी आदि का भय हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि
(30/11/2020 - 01/12/2039)

शनि की दशा में आपका पन्ना व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, लहसुनिया, गोमेद व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(01/12/2039 - 30/11/2056)

बुध की दशा में आपका पन्ना, नीलम व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(30/11/2056 - 01/12/2063)

केतु की दशा में आपका पन्ना व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, नीलम व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शुक्र - 01/12/1963

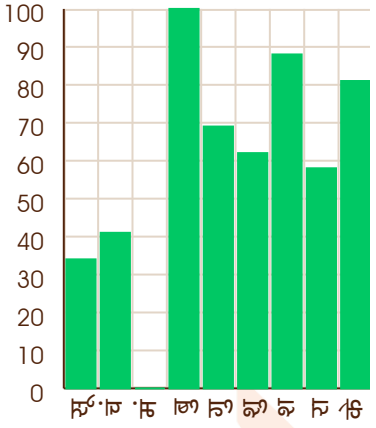

सूर्य - 01/12/1969

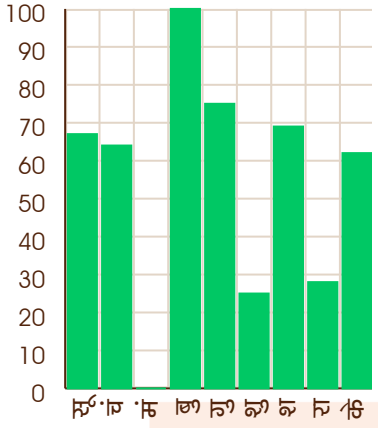

चन्द्र - 01/12/1979

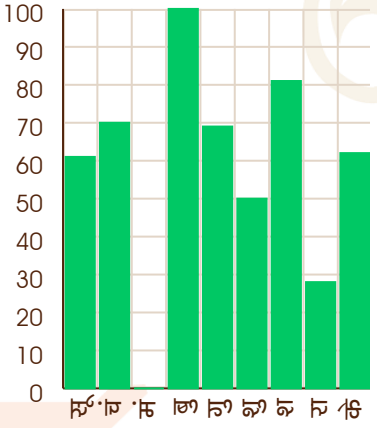

मंगल - 01/12/1986

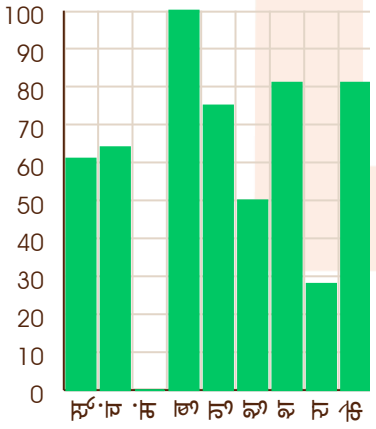

राहु - 30/11/2004

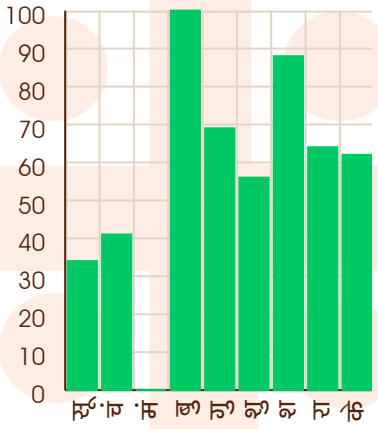

गुरु - 30/11/2020

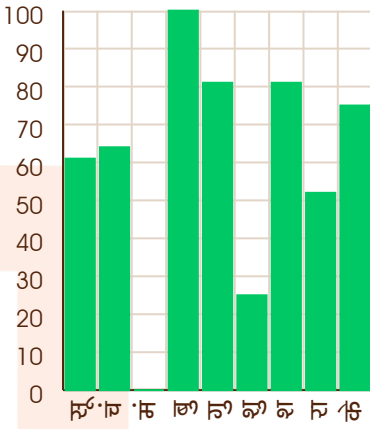

शनि - 01/12/2039

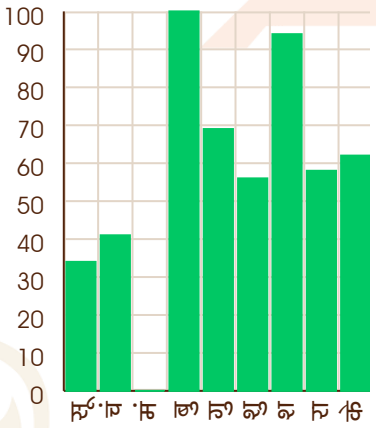

बुध - 30/11/2056

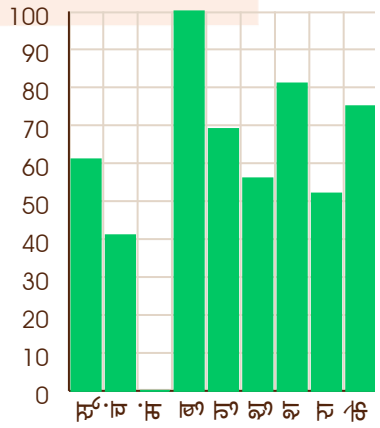

केतु - 01/12/2063

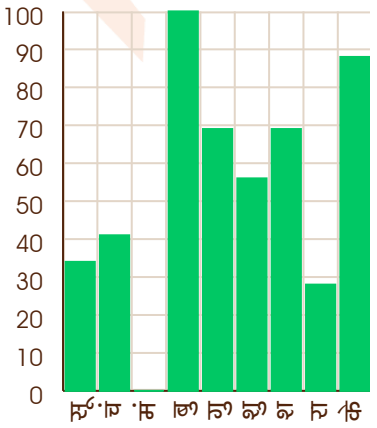

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - पन्ना

आपका जन्म मिथुन राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी बुध होता है। बुध सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह सूर्य के सबसे अधिक नजदीक है और सूर्य ग्रहों का राजा होता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मिथुन राशि के लग्न वाले जातकों को मिथुन राशि के स्वामी ग्रह बुध को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। बुध ग्रह के लिये पन्ना रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी बुध राजकुमार व व्यापार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा व्यापार में आशातीत लाभ व विद्यार्थियों को बुद्धिबल प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को बड़ी बहन, बुआ और मौसी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। बुध ग्रह वाणी एवं बुद्धि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको वाणी दोष या आत्मविश्वास से संबंधित परेशानी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा बुद्धि बल की प्राप्ति होती है जिससे विद्यार्थीगण अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करते हैं।

पन्ना रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है । पन्ना रत्न बुध का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात बुधवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल बुध की होरा में श्रेष्ठ होता है। बुधवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय बुध की होरा का होता है। पन्ना को यदि बुधवार के साथ-साथ बुध के नक्षत्र अर्थात् आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

पन्ना को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर हरे रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

बुध का मंत्र - ऊँ बुं बुधाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि बुध से संबंधित पदार्थ जैसे मूंग दाल, पीतल,

सवा मीटर हरे कपड़े का दान करें तो पन्ना रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन बुध का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और हिजड़ों को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह पन्ना रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक बुधवार को गणेश जी की उपासना करें तथा गणेश जी को मोदक का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मिथुन लग्न वाले जातक यदि पन्ना रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मिथुन लग्न की हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आपका मस्तिष्क सदैव विचारमान व गतिमान रहता है इसलिए हर समय कुछ न कुछ आपके मस्तिष्क में चलता रहता है। लग्न स्वामी बुध होने की वजह से कठिन से कठिन काम को भी आप अपनी बुद्धि कौशल से आसान बना लेते हैं। द्विस्वभाव लग्न होने से आपके स्वभाव में भी दोहरापन (वास्तव में लचीलापन) होता है। समय के अनुसार अपने व्यवहार को बदल लेना अथवा हर परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना, वातावरण को अपने अनुसार ढाल लेना या स्वयं वातावरण के अनुसार ढल जाना आपके स्वभाव की विशेषता होती है। आपका व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है। हर चीज को सीखने एवं पाने की ललक आप मे रहती है। आप खाली नहीं बैठ सकते हैं। हर

समय व्यस्त रहना कुछ नया करने की इच्छा आपमें रहती है। आपका हँसमुख स्वभाव आपको हर जगह लोकप्रिय बनाता है।

6, 8, व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

मिथुन लग्न में छठे भाव व एकादश भाव के स्वामी मंगल हैं। आप अपने साहस का उपयोग अनैतिक कार्यो के लिए कर सकते हैं, मिथ्या वचन बोलने से भी आप बचे, तथा युद्ध अथवा लड़ाई हेतु सदैव तत्पर हो सकते हैं। शत्रुओन पर विजय प्राप्ति सहज हो जाती हैं। अपने बड़े भाई-बहनों से वैर-भाव रखने वाले हो सकते हैं। विष, अग्नि, शास्त्र सेपीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम व नवम भाव के स्वामी शनि हैं। अष्टम भाव के स्वामी शनि के प्रभाव से आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी, भाग्यवृद्धि में बाधक, अधिनस्थों की ओर से सहयोग मेंकमी, लम्बी अवधि के रोग, ऋण आपके कायी में व्यर्थ का विलम्ब कर सकते हैं। इस योग की अशुभता से रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन संग्रह में बाधा का सामना करना पड़ सकता है।

पंचम भाव और द्वादश भाव के स्वामी शुक्र हैं। शुक्र पंचमेश व द्वादशेश होकर आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। इसके अतिरिक्त शुक्र व्यय, हानि, दंड व अलगाव दे सकता हैं।

शुक्र की स्थति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता हैं।

यह आपके शारीरिक सौन्दर्य में न्यूनता, आय क्षेत्र में बाधाएं, अल्प आय, आर्थिक चिंता, कुटुंब से अल्प सुख, पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। दीर्घकालीन रोग आपकी चिंताएं बढ़ा सकते हैं। मंगल का अष्टम भाव में स्थित होने से आप मांगलिक योग से पीड़ित है। दाम्पत्य जीवन कष्टकारी हो सकता है। संतान को भी कष्ट की संभावनाएं, प्रवास में धन हानि, मुख, नेत्र व कान के रोग, ऋण ग्रस्तता बढ़ोतरी हो रही है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	12/11/1955-08/02/1958	02/06/1958-07/11/1958	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/02/1958-02/06/1958	07/11/1958-02/02/1961	17/09/1961-08/10/1961
साढेसाती तृतीय ढैया	02/02/1961-17/09/1961	08/10/1961-27/01/1964	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/04/1966-03/11/1966	20/12/1966-17/06/1968	17/06/1968-07/03/1969
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसाय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	धन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी। आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। साथ ही वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगे ।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही परस्पर संबंधो में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप साझेदारी के कामों में जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में आंशिक रूप से रूकावटें आती हैं। पर कालान्तर में अपने आप व्यवधान हट जाता है। बड़े पद मिलने में भी थोड़ा बहुत कठिनाई आती है, पर जातक कुछ समय बाद अपने बौद्धिक बल से उस व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम हो जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी आंशिक रूप में कष्टमय हो जाता है। प्रेम प्रसंग में जातक को सफलता प्राप्त करने में आंशिक व्यवधान आ जाता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना रहती है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक शत्रुओं से घिरा रहता है। शत्रु लोग जातक के ऊपर षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर उस षड्यन्त्र में कोई विशेष सफलता उनको नहीं मिलती है। जातक समय-समय पर गुप्त रोग से परेशान रहता है और रोग व्याधि में थोड़ा बहुत अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। पैतृक धन सम्पत्ति का मनोभिलाषित फल प्रायः जातक को नहीं मिलता है। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान कर देता है या नष्ट हो जाती है। यदि जातक किसी दूसरे को थोड़ा बहुत धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जिस कारण जातक को मानसिक परेशानी व चिन्ता थोड़ा बहुत घेरे रहती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को सन्तान सुख का प्रायः अभाव रहता है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।

7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम भाव में नीच का सूर्य स्थित है।
- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य और चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक एक होने से आपका मूलांक एक होता है। मूलांक एक के प्रभाववश आप एक स्थिर विचारधारा के व्यक्ति हेंगे। अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे। जीवन में आप जब भी किसी को वचन इत्यादि देंगे उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करेंगे। इच्छा शक्ति आपकी दृढ़ रहेगी एवं आप अपने मन संबंधों में, मित्रता के संबंधों में स्थायित्व रहेगा। लम्बे समय तक जो भी विचार बना लेंगे उनका पालन करने की निरंतर कोशिश करेंगे। आपके प्रेमएवं स्थायी बनें रहेंगे। यदि किसी कारणवश आपका किसी से विवाद या शत्रुता होती है तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी आपका मन मुटाव दीर्घकाल तक बना रहेगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की होने से आप पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करेंगे। आप किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करेंगे। आपकी निरंतर कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी कि आप जो भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप आपको मंजूर नहीं होगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण सूर्य से संबंधित गुण कमोवेश मात्रा में आपके अंदर मौजूद रहेंगे। इसके प्रभावश दूसरों का उपकार, उपचार करने की प्रवृत्ति आपके अंदर प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी। सामाजिक क्षेत्र में आप सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करेंगे। सामाजिक संगठनों में मुखिया का पद पाने की आपकी चाहत बनी रहेगी। जोकि आप अपनी मेहनत एवं लगन से प्राप्त करेंगे।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होंगे एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक होंगे।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रूझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगे। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 1 तथा भाग्यांक 4 है। मूलांक 1 के स्वामी सूर्य तथा 4 के स्वामी हर्षल में मित्र संबंध होने से दोनों के प्रभावों में समानता रहेगी। आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, हर्षल के प्रभाव से, समय पर होंगी। कार्यक्षेत्र दोनों के संयुक्त प्रभाव से विस्तृत होगा और लोकप्रियता प्राप्त होगी। अंक 1 आत्मा से संबंध रखता है तथा 4 अंक आकस्मिक घटनाओं से

संबंध रखता है। अतः मूलांक 1 के प्रभाव से जहां आपको आत्मशक्ति का ज्ञान मिलेगा, वहीं भाग्यांक 4 के प्रभाव से आकस्मिक घटनाओं के प्रसार तथा विस्तार का ज्ञान प्राप्त होगा, अर्थात आपका कार्यक्षेत्र काफी विस्तृत होगा और आप अधिक से अधिक जन संपर्क में आएंगे। आपका संपर्क क्षेत्र काफी विस्तृत होगा। सामाजिक स्थिति आपकी उच्च कोटि की रहेगी तथा आपको उचित मान-सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

मूलांक 1 तथा भाग्यांक 4 के संयुक्त प्रभाववश आपका प्रारंभिक भाग्योदय 19 से 22 वर्ष की अवस्था में प्रारंभ हो कर 28 से 31 वर्ष की अवस्था पर अच्छी प्रगति प्राप्त करेगा एवं 37 से 40 वर्ष की आयु पर पूर्ण भाग्योदय का लाभ प्राप्त होगा।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 4 की मित्रता 1 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल, अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर तक गोचर में सूर्य मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय में सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक एक के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा। इस समय में किये गये कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिन आपके लिये विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रविवार या सोमवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

अपने उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु आपको किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः आप यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी माह की 5, 6, 14, 15, 23, एवं 24 तारीखें कोई भी नया कार्य करने हेतु प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः उक्त तरीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें जिनका जन्म 1, 10, 19, और 28 तारीखों को अथवा दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी एवं विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक होगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 से प्रभावित महिलाएं आपकी अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उक्त मूलांक वाली महिलाओं से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखों में हुआ हो वे सभी स्त्रियां आपके लिए सहायक एवं लाभ पूर्ण रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्रवर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। आप यथासंभव इसी रंग का उपयोग ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि में लें। हो सके तो अपने पास इस रंग का रुमाल तो आप हर समय रक्खें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप इसी रंग के वस्त्र पहनेंगे तो आपका स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो जाएगा।

वास्तु एवं निवास

आपके ऐसे राष्ट्र, देश, प्रदेश, शहर, ग्राम, बाजार, मकान, कॉम्प्लैक्स या फ्लैट में निवास करना शुभ रहेगा, जिसका मूलांक या नामांक एक हो। पूर्व दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। आपकी बैठक पूर्व दिशा की ओर होना लाभप्रद रहेगा। आपके लिए पूर्वी क्षेत्र के व्यक्ति, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों का समावेश आपके कपड़ों में होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, दीवारें, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि आप पीला, सुनहरी या भूरा रखेंगे तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली बढ़ेगी।

शुभ वाहन नं

यदि आप वाहन आदि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण के लिए नंबर आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना हितकर रहेगा।

आपका मूलांक 1 है। अतः आपके लिए अंक 1,4,8, अच्छे रहेंगे। इसलिए आपके वाहन पंजीकरण क्रमांक का योग 1, 4 या 8 रहेगा, जो अधिक अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5230 = 1 इत्यादि। आपकी यात्रा के वाहनों के अंक भी यदि 1, 4, या 8 हैं तो आपकी यात्रा लाभप्रद रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 100 = 1 इत्यादि होगा, तब वह कमरा आपके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

हृदय पक्ष आपका कमजोर रहेगा तथा हृदय संबंधी कोई कष्ट आपको अधिक उम्र पर हो सकता है। रक्त संबंधी बीमारियां भी यदा - कदा हो सकती हैं। वृद्धावस्था में रक्त चाप, 'हार्टअटैक' तथा नेत्र पीड़ा जैसे रोगों की संभावना रहेगी, जिसे आप सूर्योपासना द्वारा दूर कर सकते हैं। जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको डिप्थीरिया, अपच, रक्त दोष, गठिया, रक्तचाप, स्नायविक दुर्बलता, नेत्र पीड़ा आदि रोग होंगे। उक्त रोगों से आपको हर समय सावधान रहना चाहिए। रोग, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको सूर्योपासना पर बल देना चाहिए तथा रविवार के दिन नमक रहित एक समय भोजन करना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए हुकूमत, प्रशासक, नेतृत्व, अधिकारी, आभूषण, जौहरी का कार्य, स्वर्णकारिता, विद्युत की वस्तुएं, चिकित्सा, मेडिकल स्टोर, अन्न का व्यवसाय, भूप्रबंध, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, मकानों की ठेकेदारी, राजनीतिक कार्य, शतरंज के खेल, अग्नि सेवा कार्य, सैन्य विभाग, राजदूत, प्रधान पद, जलप्रदाय विभाग, श्रमशील कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार-व्यापार करना लाभप्रद रहेगा।

व्रतोपवास

आपको रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। एक समय भोजन करें । भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से यह विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगंधित अगरबत्ती जला कर 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करें। तब आपको स्वयं अनुभव होगा कि आप विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां आपसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवारों को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे का अर्घ्य पात्र लें। उसमें जल भरें। जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात् सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

माणिक आपका प्रधान रत्न है। माणिक के अभाव में गारनेट, तामड़ा, लालड़ी, सूर्यमणि या लाल हकीक शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन, लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, सोने की अंगूठी में, लगभग पांच रत्ती का, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप सूर्योपासना करें तथा उगते सूर्य का दर्शन करते हुए नित्य एक लोटा अर्घ्य (रोली, चावल जल में डाल कर) ग्यारह या इक्कीस बार सूर्य गायत्री मंत्र का जप करते हुए, सूर्य भगवान को प्रदान करें। सूर्य जीवनदाता है। अतः इस किया को करने पर आप विभिन्न रोंगो तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो माणिक जड़ी स्वर्ण अंगूठी के दर्शन कर लें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए, सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, सूर्य के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य गायत्री मंत्र - आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान साठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। जप संख्या 6000।।

वनस्पति धारण

आप रविवार के दिन बिल्वपत्र की एक इंच लंबी जड़ लाकर, गुलाबी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक रविवार को एक बाल्टी या बर्तन में कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल, सुगंध बाला आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति दायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ सूर्य के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्रदान करेगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिलाकर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

योग्य व्यक्ति के लिए सूर्य की शांति हेतु सूर्य के पदार्थ गेहूं, गुड़, रक्त चंदन, लाल वस्त्र, सोना, माणिक्य आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

सूर्य को अनुकूल बनाए रखने हेतु सूर्य यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केसर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, रविवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ था। आपके जन्म समय मिथुन लग्न के साथ-साथ वृषभ का नवमांश एवं कुंभ राशि का द्रेष्काण भी उदित हुआ था। आपके जन्म प्रभाव से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप भाग्यशाली व्यक्ति हैं। क्योंकि आप आरामदायक एवं प्रसन्नतम जीवन व्यतीत करेंगे। परंतु आप कार्य करने से विमुख हो जाते हैं फिर आप किस प्रकार उपयुक्त कार्य सुनिश्चित कर सकेंगे। अतः आप कार्य के संबंध में पूर्णरूपेण विचार कर उपयुक्त एवं अनुकल कार्य सुनिश्चित कर लें।

आपकी ढुल-मुल नीति के कारण आप मानसिक रूप से व्यस्त रहते हैं एवं प्रतिक्षण अन्य लुभावने कार्य-व्यवसाय को प्रारंभ करने हेतु व्यग्रता पूर्वक प्रवृत हो जाते हैं। इसलिए आप अधीर होकर, तत्काल ही परिणाम प्राप्त करना चाहते हैं। जिस वजह से आप प्रलोभन में पड़ कर अनेकों कार्यों को अपूर्ण छोड़ देते हैं। फलस्वरूप आपके कठिन श्रम से कोई लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। अतः आप भविष्यकाल के लिए निर्णय करके सुदृढता पूर्वक कार्य संपादन करें।

आप में आश्चर्य जनक ग्रहणात्मक शक्ति विद्यमान है। आप दूसरो की बातों को समझने एवं ग्रहण करने में समर्थ हैं। आप किसी भी प्रकार का अंदाज लगाने के बाद भी अपने अनुकूल और विचार पूर्वक कार्य संपादन करते हैं।

आपके पास लोग निर्देशन प्राप्त करने तथा आपकी राय जानने आयेंगे। सामान्यतया किसी भी वस्तु विषय में आपका निर्णय ले लेना तथा पुनः निर्णय बदल देना यह उपयुक्त है।

आपका अच्छा स्वभाव आपको अपने मित्रों एवं संबंधियों के मध्य प्रसिद्धि प्रदान करता हैं। आपके संबंधित सभी लोग आपको प्रतिष्ठित करते हैं। अर्थात् प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं। अन्य दूसरी बात यह है कि आपकी प्रसिद्धि आपको तेज, कुशग्र बुद्धि का, निष्कपट, विश्वासी एवं दानशील प्रवृत्ति का बनाता है।

आप अपनी उच्च महत्वकांक्षा की प्राप्ति हेतु समर्पित हो कर कोई भी कार्य प्रारंभ करें। आप चांद को स्पर्श करने की अभिलाषा नही करते परंतु आप कुछ भी चाहे जो कुछ भी प्राप्त करके ही संतुष्टि एवं प्रसन्नता का अनुभव करना चाहते हैं।

यदि आप एकाग्रता पूर्वक कार्य संपादन करें तो आपके अपने रास्ते से धन की प्राप्ति होगी। आप मुख्यतः अपने जीवन के 25वें वर्ष में अति समृद्ध हो जाएंगे। साथ ही धन का अपव्यय निरर्थक हो जाने से बहुत बड़ी उदासीनता एवं चिंता का कारण भी बनेगा।

आप पारिवारिक सदस्यों के साथ बहुत आरामदेह एवं सुखप्रद जीवन बिताएंगे। आपका शांति प्रदायक अपना भवन होगा तथा बच्चों के साथ अनेक प्रकार से सुविधाजनक एवं आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। उत्तम तो यह है कि आप अपने लिए अनुकूल जीवन संगिनी का चयन कर लें जिसका जन्म लग्न/राशि तुला, कुंभ, सिंह एवं मेष राशि हो।

आप भ्रमण प्रिय हैं। आप अपने मित्र मंडली का विस्तार करेंगे। आपके संपर्क के अनेक मित्रगण विस्तृत रूपेण पूर्ण समर्पित भाव से आपका सहयोग करेंगे। स्पष्टतया आपके उत्तम स्वास्थ्य की सुनिश्चितता बनी हुई है। परंतु आपको संभाव्य शारीरिक आघात के प्रति रक्षित करना चाहिए। ताकि यक्ष्मा तपेदिक, श्वांस नली की विकृति एवं उदर संबंधी विकृति रोग की परेशानी से सुरक्षित रह सकें। आपके लिए पेशा, वकालत, शैक्षणिक कार्य, पुस्तक प्रकाशन एवं पत्रकारिता के व्यवसाय अनुकूल हैं।

आपके लिए बुधवार, एवं शुक्रवार, का दिन अनुकूल हैं, तथा मंगलवार रविवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन कठिन एवं हानिप्रद प्रमाणित होगा। शनिवार मध्य फलदायक है।

आपके लिए लाभदायक, प्रभावी एवं अनुकूल अंक 3 एवं 7 अंक है। इसके अतिरिक्त अंक 4 एवं अंक 8 सर्वथा प्रतिकूल अंक है।

आप सफेद रंग के प्रति आकर्षित हैं परंतु इसे त्यागकर अपने लिए अनुकूल रंग पीला गुलाबी, बैगनी, हरा एवं नीला रंग के वस्त्रादि का व्यवहार करें। काला एवं लाल रंग आपके लिए प्रतिकूल रंग है।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में प्रथम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक विनम्र उदार एवं हास्य प्रवृति के होते हैं तथा बुद्धिमता का भाव उनके चेहरे से ही परिलक्षित होता है। ये व्यक्ति स्वभाव से स्वाभिमानी होते हैं तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलता प्राप्त करते हैं। साथ ही अपने पराक्रम एवं परिश्रम के द्वारा इच्छित धनैश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों को भी अर्जित करते हैं। सरकार एवं उच्चाधिकारी वर्ग से इनका सम्पर्क रहता है तथा संगीत कला एवं व्यापार आदि के क्षेत्र में वे मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन मूल्य या सिद्धांतों का भी ये प्रतिपादन करने में समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी। अपने सांसारिक कार्य कलापों को आप बुद्धिमतापूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा इनसे समाज में आपको सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी साथ ही स्वपरिश्रम एवं योग्यता के द्वारा ऐश्वर्य वैभव एवं धन अर्जित करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा होगी तथा आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा फलतः अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप यत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर वाणी का ही उपयोग करेंगे। अतः अपने गुणों के द्वारा आप समाज या कार्य क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में अपने आपको स्थापित करने में समर्थ होंगे।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक अशान्ति उत्पन्न होगी। आप में तेजस्विता का भाव भी रहेगा जिससे आप न्यूनाधिक मात्रा में क्रोध का प्रदर्शन कर सकते हैं। परन्तु सांसारिक महत्व के कार्यों को आप सफल बनाएंगे तथा उन्नति एवं सफलता के मार्ग प्रशस्त करेंगे। साथ ही धनैश्वर्य से युक्त होंगे तथा आयस्रोत भी एक से अधिक रहेंगे।

आपके स्वभाव में उदारता का भाव भी होगा तथा अवसरानुकनूकूल अन्य जनों को अपनी ओर से सेवा तथा सहयोग प्रदान करेंगे। अपने कार्यों को आप हमेशा सोच समझकर सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आप में सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहेगी तथापि परस्पर सामंजस्य के कारण अन्य जनों से आप मित्रता पूर्ण संबंध बनाने में सफल रहेंगे। अपने कार्य क्षेत्र में आप दक्ष होंगे तथा समाज में भी सम्मानित व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे।

धर्म के प्रति आपकी सामान्य श्रद्धा रहेगी परन्तु अन्य जनों के परोपकार संबंधी कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित दौरान आपकी- मित्रों की संख्या भी अधिक होगी।

इस प्रकार आप उत्साही, पराक्रमी एवं तेजस्वी पुरूष होंगे तथा जीवन में समस्त सुखों का उपभोग करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे ।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप भावुक प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा यदाकदा अधिक बोलने वाली प्रवृति भी रहेगी। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी मधुर होगी तथा अपने विचारों को आप स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ रहेंगे। फलतः सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित होंगे।

पारिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपको सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करना रूचिकर लगेगा। विशेष रूप से मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा रूचिपूर्वक इनका भक्षण करेंगे लेकिन इससे यदा कदा आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है अतः इनकी अधिकता की उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही धार्मिक उत्सवों को भी आप समय समय पर परिवार में आयोजन करते रहेंगे। आप अपने विचारों की पुष्टि में हमेशा ठोस तर्को को प्रस्तुत करेंगे जिसे सभी लोग स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त लकड़ी के व्यापार से आप लाभ अर्जित कर सकते है। इसके अतिरिक्त पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप एक आदर्श विशाल हृदय तथा साहसी व्यक्ति होंगे तथा अपने संबंधियों, भाई.बहिनों तथा चचेरे भाईयों के प्रति पूर्ण विश्वास रहेगा। आप किसी भी कार्य में उनसे सहयोग या सलाह लेना उचित समझेंगे तथा तभी किसी महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करेंगे। साथ ही उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगे। आप हमेशा उनकी गलतियों को भूल जाने की सीमा तक क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इस राशि के प्रभाव से आप उच्चाधिकार तथा प्रशासनिक सेवा को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त भाई बहिनों से सदा आज्ञापालन तथा कर्तव्य परायणता की अपेक्षा करेंगे। यदि वे ऐसा नहीं करते तो आप अत्यन्त ही क्रोधित तथा नाराज होंगे।

आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपकी नजर तथा स्मरण शक्ति प्रबल रहेगी तथा काफी समय तक आप किसी भी बात को याद करने में समर्थ रहेंगे। आप उच्च शिक्षा, दर्शन शास्त्र तथा लेखन कार्य संबंधी सफलताएं भी अर्जित करने के लिए यत्नशील रहेंगे। संचार साधनों से भी आप युक्त रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही वाहन आदि का सुख भी आपको प्राप्त होगा। आप नीति के भी ज्ञाता होंगे तथा पत्राचार, समाचार.पत्र या लेखन संबंधी कार्यो में रूचिशील रहेंगे। आप प्रायः यात्राशील रहेंगे तथा दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ तथा ख्याति अर्जित होगी । संगीत के प्रति भी सामान्यतया आपकी रूचि रहेगी। प्रकाशन के क्षेत्र में भी आप इच्छुक रहेंगे क्योंकि आपके अन्दर लेखन क्षमता विद्यमान है अतः आप उच्च कोटि के संपादक भी हो सकते है। इसके अतिरिक्त एक योग्य सूचना अधिकारी या संवाद दाता के रूप में भी सफल हो सकते हैं। साथ ही आप शूरवीर, मित्र प्रेमी यदा कदा कटुवक्ता परन्तु अभिमान हीन रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं उपकरणों से युक्त रहेंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। बुध के प्रभाव से आप में बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता के भाव की प्रधानता होगी फलतः अपने इन्हीं गुणों से जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव की प्राप्ति करेंगे तथा समाज में आपका सम्माननीय स्तर रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल संपत्ति को अवश्य प्राप्त करेंगे। संबंधीवर्ग से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप स्वयं एक बुद्धिमान एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा अपने इन ही गुणों से भी वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करके अपने ऐश्वर्य एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे।

जीवन में आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा आपका घर समस्त आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होगा। घर की सफाई के प्रति आप पूर्ण रूपेण तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा उनसे संबंधो में पर्याप्त मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त युवावस्था में ही आपको उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी तथा जीवन में विभिन्न प्रकार से आप वाहन सुख अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता बुद्धिमान शिक्षित एवं आदर्शवादी महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता से सभी पारिवारिक जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखेंगी। सभी लोग उनका सम्मान एवं आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह एवं वात्सल्य की भावना होगी तथा अवसरानुकूल आपको आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होग एवं सुख-दुख में उन्हें पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करेंगे जिससे आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

आप प्रारंभ से ही बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अध्ययन के प्रति आपकी पूर्ण रूचि होगी एवं प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करेंगे। अतः स्नातक परीक्षा आप अच्छे अंकों से उतीर्ण करेंगे तथा अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा अन्य संबंधियों एवं मित्रों से उचित सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलेगा जिससे कार्य क्षेत्र में आप आशातीत उन्नति प्राप्त करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा शनि भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्य कलापों को बुद्धिमत्तापूर्वक सम्पन्न करेंगे। यदा-कदा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य उचित योजना के अभाव में विलम्ब से भी सिद्ध हो सकते है। लेकिन इसमें पूर्ण लाभ होगा क्योंकि शनि लाभेश भी है। वैदिक एवं धर्म शास्त्रों के प्रति आपकी विशेष रूचि कम ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं पाश्चात्य साहित्य में विशेष रूचि रहेगी तथा इसमें स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से प्रचुर ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा इसमें कोई नवीन सिद्धान्तों को भी प्रतिपादित कर सकते है। इससे समाज में आप एक विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में माने जायेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान-सम्मान प्रदान करेंगे।

पंचमभाव में शनि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि रहेगी तथा आपके प्रेम-प्रसंग दिल बहलाव एवं आत्मिक सन्तुष्टि की दृष्टि से अधिक होंगे तथा इसमें आदर्शवादिता एवं मर्यादा की भी अल्पता रहेगी। ऐसी जिसके कारण आप अपने लिए अनावश्यक समस्याएं एवं परेशानी उत्पन्न करेंगे। अतः ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए तथा प्रेम में मर्यादा बनाए रखनी चाहिए।

पंचमभाव में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपको पुत्र प्राप्ति में विलम्ब होगा लेकिन कन्या सन्तति की यथा समय प्राप्ति होगी। आपके बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा स्वपरिश्रम से वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन आज्ञाकारिक्ता के भाव की उनमें अल्पता रहेगी तथा अपनी पसन्द के कार्यो को ही अधिक मात्रा में सम्पन्न करेंगे। किसी भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता की सलाह अल्प मात्रा में ही लेंगे। लेकिन इससे आपको विशेष चिंतित नहीं होना चाहिए क्योंकि वे चतुर बुद्धि के होंगे। अतः स्वयं के पराक्रम से जो भी करेंगे अपनी आजीविका अर्जन में उनको सफलता मिलेगी तथा जीवन सुखी होगा। इसके अतिरिक्त बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा कम ही रखनी चाहिए लेकिन दुख में अवश्य वे अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति रूचिशील होगी तथापि परिश्रम से ही वे सन्तोषजनक उन्नति में समर्थ होंगे। आप भी बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे एवं उनकी शिक्षा पर प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे। यद्यपि वे व्यवहार कुशल होंगे परन्तु तेजस्वी प्रवृति के होने के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद आदि हो सकता है परन्तु आप अपने सद्व्यवहार से समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने में समर्थ होंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने स्वास्थ्य को अनावश्यक चिन्ताओं एवं उत्तेजनाओं से खराब करेंगे। साथ ही आपको अपने स्वास्थ्य की स्वस्थता के लिए हमेशा सीमित कार्य करना चाहिए क्योंकि अधिक कार्य करना आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। सामान्यतया आप सर्दगर्म से उत्पन्न जुकाम तथा वृद्धावस्था में श्वास संबन्धी रोगों से परेशानी की अनुभूति कर सकते है। इसके साथ ही कन्धों या जोड़ों में भी दर्द की उत्पति हो सकती है। अतः स्वास्थ्य के प्रति आपको पूर्ण सतर्क रहना चाहिए।

मंगल एक तेजस्वी तथा उग्र ग्रह है अतः आपको अनावश्यक रूप से वार्तालाप में कठोर शब्दों की उपेक्षा करनी चाहिए तथा यत्नपूर्वक मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए अन्यथा आपको कई प्रकार से अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आपके उन्नति मार्ग में शत्रु हमेशा व्यवधान उत्पन्न करेंगे अतः आपका जीवन अत्यंत ही परिश्रम पूर्ण रहेगा परन्तु अपनी तेजस्विता एवं चतुरता से शत्रुपक्ष का दमन करने में समर्थ होंगे तथा आपकी कठिनाइयां भी दूर होंगी।

आपके सेवक भी क्रोधी स्वभाव के होंगे तथा आपकी गुप्त बातों को अन्य जनों से कहकर आपके मान सम्मान में न्यूनता करेंगे। अतः आपको नौकरों पर पूर्ण निगरानी रखनी चाहिए तथा उनके सामने कोई भी व्यक्तिगत वार्तालाप नहीं करना चाहिए। आप जीवन की खुशहाली पर निरन्तर व्ययशील रहेंगे अतः कभी कभी व्ययाधिक्य के कारण आर्थिक विषमता उत्तपन्न हो सकती है। साथ ही बीमारी के कारण आपको कर्जा आदि भी लेना पड़ेगा तथा समय पर वापिस न कर पाने के कारण सामाजिक अवमानना होगी। आपको मुकद्दमेबाजी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। मामा मामियों से आपको इच्छित सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा तथापि उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। आपको सुन्दर स्वादिष्ट भोजन करना अच्छा लगेगा तथा मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रूचि होगी। परन्तु इनकी अधिक मात्रा तथा नशीली वस्तुओं से हमेशा परहेज रखें अन्यथा शारीरिक परेशानी उत्पन्न होगी तथा वृद्धावस्था में आपको न्यूनाधिक मात्रा में कष्ट भी होगा ।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा चन्द्रमा भी सप्तम भाव में स्थित है सामान्यतया सप्तम भाव में धनु राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी पुष्ट शरीर वाला बुद्धिमान एवं कार्य कुशल होता है। जलतत्व युक्त चन्द्रमा के प्रभाव से वह सहिष्णु शिक्षित एवं परोपकारी वृति का होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशिक्षित बुद्धिमती गुणवती एवं सहिष्णु स्वभाव की महिला होगी तथा अपने सभाषण में मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी। सांसारिक कार्य करने में वह कुशल होंगी एवं अपने उत्तम कार्य कलापों से सबको प्रसन्न रखेंगी चन्द्रमा जैसे सौम्य ग्रह के प्रभाव से कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद मध्यम रहेगा। उनके अंग प्रत्यंग सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी। उनकी शारीरिक संरचना भी आकर्षक रहेगी लेकिन आयु के साथ साथ इसमें स्थूलता आ सकती है क्योंकि चन्द्रमा जलीय ग्रह है अतः इस पर प्रारंभ से ही नियंत्रण रखना चाहिए। कला एवं संगीत के प्रति भी उनकी रूचि रहेगी एवं सुंदर वस्तुओं के लिए मन में प्रबल आकर्षण होगा एवं उनका संग्रह करने में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में चन्द्रमा के प्रभाव से आपका विवाह किसी संबंधी के माध्यम से होगा इसमें भी महिला संबंधी का विशेष योगदान हो सकता है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव होगा जिससे सुख दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा महत्वपूर्ण योजनाओं तथा कार्यो को आपसी सहमति एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह अच्छे परिवार में होगा तथा अपने क्षेत्र में वे लोग प्रभावशाली होंगे साथ ही आर्थिक स्तर भी उन्नत रहेगा। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे नैतिक सहयोग मिलता रहेगा। साथ ही वे भी आपको पुत्रवत स्नेह प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी के मन में सेवा एवं श्रद्धा की भावना होगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देगी देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रभावित रखेंगी तथा वे भी उनको यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार या अन्य किसी योजना में सफलता एवं लाभ के लिए साझेदारी अनुकूल रहेगी एवं इसमें उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे। साथ ही माता या मातृपक्ष से साझेदारी विशेष उन्नति एवं लाभदायक रहेगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप व्यावहारिक तथा आधुनिक विचार धारा के व्यक्ति होंगे फलतः ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही जीवन में अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करने में व्यस्त रहेंगे तथा मित्रों के कहने पर भी आप की ज्योतिष आदि पर कोई श्रद्धा नहीं होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में प्राप्त होगी तथा परिश्रम पूर्वक धीरे धीरे इसमें उन्नति करेंगे। अपने कौशल से आप एक धनवान पुरूष माने जाएंगे लेकिन जुए या सट्टे आदि की आपको प्रायः उपेक्षा करनी चाहिए।

शादी के समय आपको ससुराल पक्ष से इच्छित दहेज की प्राप्ति होगी तथा वे लोग आपसे अत्यधिक प्रभावित रहेंगे फलतः सामान्य से अधिक धन एवं लाभ आभूषण आदि की आपको प्राप्ति होगी। इससे आप आराम दायक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे। बीमे आदि से आपको लाभ होगा अतः मकान गाड़ी या स्वयं का आपको बीमा अवश्य कराना चाहिए। यद्य पि इसमें आपको हानि अधिक नहीं होगी परन्तु बीमे से आपको धन अधिक मात्रा में प्राप्त होगा। जीवन में आपके यहां चोरी आदि की बड़ी घटनाएं नहीं होगी तथापि यदा कदा सामान्य घटनाएं घटित हो सकती है। अतः सुरक्षा की दृष्टि से बहूमूल्य वस्तुओं को संभालकर रखना चाहिए। आप सजग प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। अतः जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी। आपकी आयु दीर्घ होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे। शारीरिक स्वस्थता को बनाए रखने के लिए आपको नित्य प्रति व्यायाम भी करना चाहिए।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक साहित्य का रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी रूचिशील रहेंगे। आपका मुख्य उददेश्य कोई सिद्धि प्राप्त करना रहेगा जिसके द्वारा आप समाज में मान सम्मान धन एवं ख्याति अर्जित कर सकेंगे। ज्योतिष अथवा तंत्र मंत्र शास्त्र में भी आपकी रूचि हो सकती है।

ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा पूर्ण विश्वास भी रहेगा। आपके विचार में कर्म की कोई विशेषमहत्ता नहीं है जब तक कि उसे भाग्य की पूर्ण सहायता न मिलें तभी कर्म करके मनुष्य विशिष्ट सफलताएं प्राप्त कर सकता है। अतः अपने इष्ट देव की नियमित रूप से पूजा करेंगे। आपके विचार में परिवार में समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने से बच्चों के शुभ संस्कारों के वृद्धि होती है। जीवन में आप कई तीर्थ स्थलों की यात्रा करेंगे। साथ ही विद्वान एवं साधु महात्माओं की संगति से आपको प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि प्राप्त होगी।

आपको व्यावसयिक तथा आनन्द प्रदान करने वाली लम्बी दूरी की यात्राओं से काफी ज्ञान प्राप्त होगा। अतिथि को आप भगवान का स्वरूप समझकर उनकी सेवा करेंगे। पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। वास्तव में इस जीवन में आप पूर्व जन्म के कर्मों के फल को प्राप्त करते है। आपके स्तर धनऐश्वर्य आराम तथा उपलब्धियों से संकेत मिलता है कि निश्चित ही आपने पूर्व जन्म में कोई शुभ कर्म किए होंगे। वृद्धावस्था में आपके मन में वैराग्य की भावना भी उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप दैवी कृपा से धनार्जन करने वाले, रास्ता, बगीचा, तालाब तथा मन्दिर आदि परोपकार के लिए बनवाने में भी सफल रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपकी जन्म कुंडली में दशम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है मीन राशि जलतत्व युक्त है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रम की इसमें अल्पता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप समय समय पर कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के भी इच्छुक हो सकते है लेकिन ये परिवर्तन वर्तमान एवं भविष्य के लिए लाभदायक ही होंगे।

बृहस्पति की राशि की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आप शिक्षक या व्याख्याता, अनुष्ठान कर्ता, धर्मोपदेशक, प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर तथा सरकारी विभाग में सचिव सलाहकार या प्रशासनिक पद पर कार्य कर सकते है। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा भविष्य में भी आप किसी उच्चपद या अधिकार को अर्जित करने में सफल होंगे। अतः आपको इन्हीं क्षेत्रों में यत्नपूर्वक अपनी आजीविका प्रारंभ करनी चाहिए। इससे आपकी मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी।

व्यापारिक क्षेत्र में भी आप वांछित उन्नति प्राप्त करने में समर्थ हो सकते है। आप के लिए सुवर्ण आदि का व्यापार, शेयर का क्रय विक्रय, वित्त कम्पनियों में पूंजी निवेश आदि से वांछित लाभ की प्राप्ति कर सकते है। साथ ही सरकारी टेन्डरो या सरकार से संबंधित कार्यो से भी आप प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का शुभारंभ करना चाहिए।

मीन राशि की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश सर्वत्र व्याप्त होगा। साथ ही आप उच्च धार्मिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था में भी किसी उच्च पद को प्राप्त कर सकते है। बृहस्पति की केंद्र भाव की यह स्थिति आपके लिए अत्याधिक शुभफलदायक होगी। अतः आपको ईमानदारी एवं बुद्धिमता से अपने कार्यक्षेत्र में तत्पर रहना चाहिए।

आपके पिता विद्वान शिक्षित बुद्धिमान एवं मधुर स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः सभी लोग उनसे प्रभावित होंगे तथा उन्हें उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी शिक्षा दीक्षा का वे उच्चस्तर पर प्रबंध करके आपको प्रभावशाली व्यक्ति बनाने में पूर्ण रूप से तत्पर होंगे। उनके प्रभाव से आप कार्यक्षेत्र में विशिष्ट सफलता प्राप्त करेंगे तथा यश की भी प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी उनकी अभिलाशाओं को पूर्ण करने में समर्थ होंगे। आप दोनों के परस्पर मधुर संबंध रहेंगे तथा आपस में उचित सामंजस्य रहेगा जिससे किसी भी प्रकार की मत वैभिन्यता नहीं रहेगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा आपकी इच्छाएं अधिक रहेंगी। साथ ही इच्छाओं एवं महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में भी सामान्यतया सफल ही रहेंगे। आपके अन्दर संगठनात्मक शक्ति विद्यमान रहेगी तथा अन्य लोगों को संगठित एवं नियंत्रित करके उनसे अपना कार्य करवाने में समर्थ रहेंगे। अतः आप प्रबन्धक, पुलिस या मिलिटरी आदि में विशिष्ट सफलता अर्जित कर सकते है। साथ ही होटल आदि के व्यवसाय से भी आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित हो सकता है। बड़े भाईयों से आपको विशेष सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा तथा आपात्काल में भी वे आपकी सहायता करेंगे।

आप अच्छी एवं अधिक मित्र मंडली को पसन्द करेंगे। साथ ही उत्साही पराक्रमी निडर तथा शिक्षित व्यक्तियों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। आपकी प्रवृत्ति स्वछन्द रहेगी तथापि अन्य जनों के साथ कार्य करने में आपको आनन्दानुभूति होगी। आपके सामाजिक सम्पर्क विस्तृत रहेंगे तथा सभी सामाजिक जन आपको यथोचित मात्रा में सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। आपके आय स्रोत भी विस्तृत रहेंगे एवं समाज में विशिष्ट ख्याति एवं सम्मान के भी योग बनेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी तथा अपने कार्यो से प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा परन्तु यदा कदा बाएं कान से आपको किंचित परेशानी हो सकती है परन्तु सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आपका जीवन परिवर्तशील रहेगा तथा सामान्यतया आप खुशहाल जिंदगी व्यतीत करेंगे। धनार्जन के लिए आप विभिन्न स्रोतों को बनाने में सफल रहेंगे अतः आपकी आय के स्रोत एक से अधिक होंगे परन्तु आप उन्मुक्त रूप से धन का व्यय करेंगे तथा पारिवारिक शान शौकत एवं विलासमय वस्तुओं पर आपका विशेष व्यय होगा। यदा कदा आप पूंजी निवेश भी करेंगे जिससे आपको भविष्य में लाभ होगा।

आधुनिक भौतिक उपकरणों के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर धन का अधिकांश व्यय करेंगे इससे आप मानसिक सन्तुष्टि, आनन्द तथा खुशहाली की अनुभूति करेंगे। आप समय समय पर दूर समीप की यात्राओं को सम्पन्न करते रहेंगे। इनमें तीर्थ यात्राओं की भी प्रबल संभावना रहेगी। आपकी यात्राएं सामान्यतया व्यापार या आफिस कार्य से संबंधित रहेंगी तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा करना रुचिकर समझेंगे। यात्राओं के मध्य यदि आप शीघ्र ही सक्रिय रहेंगे तो इससे आपको इच्छित लाभ की प्राप्ति भी हो सकती है। यात्रा में आपकी कई पुराने तथा नए लोगों से मुलाकात होगी तथा हर जगह उचित वातावरण बनाने में समर्थ रहेंगे।

जीवन में आपकी विदेश यात्रा भी होगी तथा इससे आपके भाग्य में वृद्धि होगी कुछ समय के पश्चात आप विदेश में भी प्रवास कर सकते हैं जहां आपका जीवन सुखऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेगा। इससे आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा आनंद पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे ।

नक्षत्रफल

आप पूर्वाषाढा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी मध्य, योनि वानर तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके नाम का प्रथम अक्षर "फ" या "फा" से प्रारम्भ होगा।

आप अपने सम्पूर्ण जीवन में समस्त सुखैश्वर्य का आनन्दपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। आप अन्य लोगों से अत्यन्त ही मधुर तथा शालीनता के साथ व्यवहार रखेंगे जिससे आपसे सभी प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने सम्भाषण में भी प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे। चरित्र से आप उत्तम रहेंगे। धनधान्य से भी आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में सामान्यतया इसका अभाव महसूस नहीं करेंगे। साथ ही आपकी पानी पीने की इच्छा भी अधिक होगी तथा बार बार इसका उपयोग करेंगे।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्भागविलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपको सुन्दर सुशील तथा गुणवती स्त्री की पत्नी के रूप में प्राप्ति होगी जो आपको समस्त प्रकार से सुख एवं आनन्द प्रदान करने में समर्थ रहेगी। समाज में आप एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त होंगे। आप हमेशा स्थिर मित्रता के इच्छुक रहेंगे। अतः आपकी मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं रहेगा तथा जो भी मित्र होंगे वे सभी बुद्धिमान तथा गुणवान होंगे। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य भी स्थिर रूप से आपके पास रहेगा।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आपके हृदय में प्रारम्भ से ही अन्य जनों के उपकार करने की भावना विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल परिचितों के अतिरिक्त अपरिचित जनों की भी आप यत्न पूर्वक भलाई करने के लिए तत्पर रहेंगे। इससे आपके सामाजिक सम्मान तथा स्थिति में नित्य अभिवृद्धि होती रहेगी। भाग्य सर्वथा आपके साथ रहेगा तथा अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप अल्प परिश्रम से ही पूर्ण करने में सक्षम रहेंगे तथा समाज के

सभी वर्गो को अपना सहयोग तथा स्नेह प्रदान करेंगे। अतः सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। आप एक उच्चकोटि के विद्वान तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने तथा विभिन्न कार्यो को सम्पन्न करने में आप दक्षता प्राप्त होंगे।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप के आचार विचार उत्तम रहेंगे तथा समाज में सब प्रकार से आदरणीय रहेंगे। आपका स्वभाव हमेशा शान्त रहेगा। अतः किसी भी विषम परिस्थितियों में आप उत्तेजित नहीं होंगे तथा शान्तिपूर्वक उसका समाधान करेंगे।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

धनु राशि में जन्म लेने के कारण आपका गला एवं मुखभाग दीर्घाकार रहेगा। साथ ही आपके कान, ओंठ, दान्त भी स्थूल रहेंगे। तथा भुजाएं पुष्ट रहेंगी। आप को अपने पिता से पूर्ण धन सम्पति प्राप्त होगी। जिसका आप जीवन में सुखपूर्वक उपभोग कर सकेंगे। आपके मन में दान शीलता की प्रवृति भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। आप लेखन कार्य में भी रूचिशील तथा यत्नशील रहेंगे फलतः कविता सृजन में आपको सफलता तथा ख्याति प्राप्त हो सकती हैं। आप एक बलशाली पुरूष होंगे तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। भाषण देने की कला में भी आप निपुण रहेंगे तथा अपने ओजस्वी भाषणों के द्वारा सामाजिक जनों को प्रभावित करने में पूर्ण रूपेण सफलता प्राप्त करेंगे चित्रकला आदि में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप विशेष योग्यता भी अर्जित कर सकेंगे। आप स्वभाव से गम्भीर होंगे तथा गम्भीरता तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी

आपके मन श्रद्धाभाव रहेगा तथा इसके विषय में आप विस्तृत ज्ञान भी स्वपरिश्रम से अर्जित करेंगे। आपके अपने बन्धुवर्ग से संबंध सामान्य तथा औपचारिक रहेंगे। आपको केवल प्रेम तथा समानता के व्यवहार से ही वश में किया जा सकेगा। दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ भी नहीं करवाया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपके नेत्र गोलाकृति लिए अत्यन्त ही सुन्दर प्रतीत होंगे। साथ ही हाथ एवं कन्धे भी लम्बाई में अधिक हो सकते हैं। आपका सीना विशाल तथा विस्तृत रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। जल के समीप निवास करना या भ्रमणादि करना आपको अत्यन्त ही प्रिय लगेगा तथा ऐसे अवसर प्राप्त करने के लिए आप प्रायः प्रयत्नशील ही रहेंगे। आप कठिन से कठिन विषय को हृदयगंम करने में हमेशा सफल रहेंगे। साथ ही आप हमेशा हृदय से प्रसन्नचित रहेंगे। अनावश्यक चिन्ता या दुःख आप नहीं करेंगे। आपके शरीर की हड्डियां भी पुष्ट एवं मजबूत रहेगी। आप में कृतज्ञता का गुण विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उनका आभार मानेंगे तथा हृदय से उनका उपकार स्वीकार करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा हमेशा किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगे। आप बोलने में भी निपुण रहेंगे। तथा अपनी वाक्पटुता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आसानी से सिद्ध कर लेंगे। आप एक त्यागी पुरूष होंगे तथा जीवन में कई बार इस प्रवृति का पालन भी करेंगे। आपमें साहस तथा बहादुरी का भाव भी सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप समस्त कार्यो को निर्भीकता से सम्पन्न करेंगे। आपके शत्रु आपसे पराजित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में प्राय असमर्थ ही रहेंगे। साथ ही आप उच्चाधिकारी वर्ग तथा धनाढ्य लोंगों के प्रिय होंगे तथा उनसे पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप नाना प्रकार के कार्यो तथा कलाओं में दक्ष रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र तथा सुशील रहेगा एवं आपका चरित्र भी निर्मल एवं अनुकरणीय रहेगा साथ ही आप स्पष्ट बोलने वाले व्यक्ति होंगे तथा जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से किसी के भी सामने कह देंगे। पीठ पीछे कहने की आपकी आदत नहीं होगी। इसके साथ ही आप अपनी आय के अनुसार ही सोच विचार कर व्यय करेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शारीरिक अंग सुन्दर तथा सुडौलता से युक्त रहेंगे। आप अपने कुल या परिवार में सर्वमान्य या श्रेष्ठ समझे जाएंगे तथा सभी कुलीन जन आपको यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। चित्रकारी तथा इंजीनियरिंग आदि के क्षेत्र में भी आप विशिष्ट सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक शूरवीर तथा साहसी व्यक्ति होंगे। सत्य के प्रति आपकी हार्दिक निष्ठा रहेगी। तथा आजीवन इसके अनुपालन में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप सत्व गुणों से भी सम्पन्न रहेंगे। आप एक दयालु पुरूष होंगे तथा किसी भी अन्य व्यक्ति के लिए आपके मन में द्वेष या वैमनस्य का भाव नहीं रहेगा। आप एक बुद्धिमान तथा धनवान पत्नी से युक्त होकर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। विभिन्न प्रकार के नाटकों के करने में भी आप रूचि शील रहेंगे तथा हमेशा मधुर एवं प्रिय वाणी का अपने संवादों में प्रयोग करेंगे। आपका शरीर स्थूल होगा तथा कभी कभी आपके आपके किसी कार्य से आपके पूर्ण परिवार तथा कुल को परेशानी तथा कष्टानुभूति करनी पड़ सकती है।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप सर्व गुणों से सम्पन्न रह कर आप समाज में एक श्रद्धेय तथा सम्मानीय व्यक्ति समझे जाएंगे। अपने बन्धु वर्ग में भी आप को श्रेष्ठता प्राप्त रहेंगे। साथ ही देवता, ब्राहमणों तथा गुरूजनों के प्रति भी आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा। जिसका आप समय समय पर अनुपालन भी करते रहेंगे। आप की चाल अत्यन्त ही आकर्षण तथा दर्शनीय होगी। परन्तु आप में सहन शक्ति का अभाव रहेगा। इससे कई बार आपको अनावश्यक रूप से मानसिक तथा आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।

मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति असीम श्रद्धा तथा पूजा का भाव रखने वाले पुरूष होंगे साथ ही आप अन्य कार्यो तथा कलाओं के विषय में भी जानकारी रखने वाले होंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा समस्त कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य जनों को सुख प्रदान करने वाले भी होंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा दानशीलता की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा जीवन में आप अपनी इस प्रवृति का समय समय पर पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आप सादगी से जीवन व्यतीत करने में रूचिशील रहेंगे तथा अनावश्यक दिखावटीपन से आप दूर ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में एक महान विद्वान के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव में कभी कभी चंचलता भी रहेगी। आप मिष्ठान प्रिय रहेंगे तथा मीठे पदार्थो के भक्षण में अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप धन के प्रति लोलुपता का प्रदर्शन भी करेंगे तथा इसे प्राप्त करने के लिए अत्यन्त ही अधीरता का परिचय देंगे। आपकी प्रवृति विवाद की ओर भी जागृत रहेगी अतः समय समय पर अन्य जनों से आपका विवाद होता रहेगा। काम की भी आप में प्रबलता रहेगी। आपकी सन्तान गुणवान एवं बुद्धिमान रहेगी। इसके अतिरिक्त आप एक साहसी तथा वीर पुरूष भी होंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में

आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां भरणी नक्षत्र, वज्र योग, तैतिल करण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि का चन्द्रमा प्रायः अशुभ फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों भरणी नक्षत्र वज्र योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण या क्रय विक्रय आदि कार्यों को शुभारम्भ न करें। अन्यथा शुभ

फलों की अपेक्षा अशुभ फलों की ही प्राप्ति होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सजग रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा न चल रहा हो मानसिक परेशानी शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि नौकरी या प्रोन्नति में बाधा तथा अन्य कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं वृहस्पतिवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीत पुष्प, पीली चन्दन, चने की दाल तथा हल्दी आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्यपात्र को दान करना चाहिए। इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप करने से आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी एवं शुभ फलों में वृद्धि होगी जिससे आपकी समस्त विघ्न बाधाएं दूर होंगी एवं अन्य लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्वऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या अधिक से अधिक दस-दस रुपये जितने भी रुपये सभी दे सकें) इकट्ठा कर के धर्म स्थान पर सामूहिक यज्ञ करें।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का

अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या

तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पांचवे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप पढ़ाई में तेज, उच्चशिक्षित, सत्ता पक्ष से लाभ-प्राप्त करेंगे। सुखी माता-पिता से युक्त, अपने घर का भाग्य जगाने वाले, संतान सुख मिलेगा। आप सेवक पुत्र के पिता होंगे। पुत्र प्राप्ति के बाद परिवार में तरक्की होगी। आप सबको साथ लेकर आगे बढ़ने वाले और शूरवीर होंगे, बुढ़ापा सुख से बीतेगा। सरकारी अधिकारियों से मधुर संबंध रखेंगे। यदि राजा सहायक न हो तो फकीर से आपका भला होगा। पारिवारिक उन्नति होगी। पौत्र के जन्म के बाद माली हालात अच्छी हो जाएगी। औलाद की वृद्धि होगी, बुढ़ापे में हर तरह का आराम मिलेगा। मां-बाप का सुख लंबे समय तक मिलेगा। जिंदगी आराम से गुजरेगी। 42 से 47 साल की आयु तक शुभ फल होगा। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ेगी, आप का रुतबा अच्छा होता जायेगा। आपको सरकारी विभाग से मान-सम्मान मिलेगा, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, अचानक धन प्राप्ति के भी योग हैं।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया या बुरे काम किये, संतान से झगड़ा किया सरकारी विभाग से बेईमानी की या झूठ बोलने की आदत होगी तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर पेट पर पड़ेगा और आपका स्वभाव क्रोधी होगा। पत्नी छोड़े या मर जाए या दूसरी शादी भी हो सकती है, ऐसा शक है। स्त्री की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। स्त्री द्वारा अपमानित भी होना पड़ सकता है। लड़के पर भी बुरा असर हो सकता है। काफी दुःखों का सामना करना पड़ सकता है। औलाद की आर्थिक हालात पर बुरा असर होगा। ननिहाल के लिए अशुभ फल रहेगा। झूठ और बेईमानी से धन हानि का भय और दीर्घ रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. झूठ से दूर रहें।
2. किसी के प्रति मन में ईर्ष्या न रखें।

उपाय :

1. बुजुर्गी रस्मों-रिवाज बन्द न करें।
2. साला, जीजा, दोहते या भांजे में से तीन की सेवा करें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको सुंदर पत्नी का सुख प्राप्त होगा। आप नेता, वकील, व्यापारी बन सकते हैं। खेती की जमीन से भी लाभ मिलेगा। मध्यम पढ़ाई का योग है। आपके घर में जल तथा दूध की व्यवस्था हमेशा रहेगी। आप स्वयं लक्ष्मी अवतार होंगे। आपकी योगाभ्यास, शायरी और ज्योतिष विद्या में रुचि होगी।

आप आस्तिक और ईश्वर भक्त होंगे। आप सरकारी सर्विस में होंगे तो प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। उत्तम वाहन सुख मिलेगा। दुनियादारी से मोहभंग हो जाएगा। आध्यात्म का फल श्रेष्ठ रहेगा। आप अपने पराक्रम से मिट्टी से सोने पैदा कर सकते हैं। धन-दौलत, जेवरात आदि की बरकत होगी। आपको सरकार से या किसी संस्था द्वारा सम्मान मिलेगा या आप विदेश में अधिक समय व्यतीत करेंगे। विदेश की यात्रा करेंगे। ईश्वर की भक्ति प्राप्त होगी। आपको जल से संबंधित चीजों से लाभ होगा। आप नये विषयों की खोज भी करेंगे।

यदि आपने परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, भूत-प्रेत की सिद्धि की, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया। माता या स्त्री से झगड़ा किया, 24-25 वर्ष आयु में विवाह हुआ तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से 2 वर्ष तक माता का स्वास्थ्य ढीला रहेगा या माता से अलग रहना पड़ सकता है। विवाह के बाद माता के सुख में कमी आ सकती है। माता का विरोध करना आपके लिए अशुभ होगा। आपको 24वें वर्ष में विवाह करना भावी संतान के लिए प्रतिकूल होगा। आपका चाल-चलन संदेहपूर्ण होगा। दूध और पानी को बेचने से संतान सुख में बाधा हो सकती है। आपकी पत्नी और आपकी माता का आपस में झगड़ा रहेगा, पत्नी से संबंध विच्छेद या दूरी का भय रहेगा या हो सकता है। मादक चीजों/द्रव्यों के प्रयोग से आपकी बर्बादी होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. दूध-पानी माल न बेचें।

उपाय :

1. दूध पानी का दान करें।
2. विवाह के बाद पत्नी की डोली आपके घर में आने से पहले पत्नी के वजन के बराबर चावल या दरिया का पानी कायम करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल आठवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से लाल किताब के अनुसार आठवें खाने में मंगल हो तो व्यक्ति मंगलीक होता है। आप मांगलिक पुरुष हैं। आपको माता-पिता का पूरा सहारा मिलेगा। आपको गृहस्थी का पूरा सुख मिलेगा। आपका हौसला बुलंद रहेगा। आप लौह पुरुष होंगे। आप नतीजा सोचे-समझे बिना, हिम्मत के साथ कष्टों का मुकाबला करेंगे। आप अपने काम-काज में मन लगा कर काम करने के आदी होंगे। आप इंसाफ पाने के लिए लड़ने को तैयार रहेंगे। आपके जीवन की रक्षा होती रहेगी। आप जीवन में बाधाओं को हंस कर सह लेंगे। ससुराल से संपत्ति का लाभ होगा। शत्रुओं पर जीत हासिल करेंगे या शत्रु भय से सामने न आयेगा।

यदि आपने विधवा स्त्री के साथ झगड़ा करके उसकी बददुआ ली, घर में जमीन के

अंदर रहने वाली तंदूर-भट्टी हुई, लोगों से बिना कारण झगड़ा-फसाद किया, चाकू-छुरी हर समय अपने पास रखी तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारणवश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपके छोटे भाई के लिए बेहद बुरा एवं भाई के कारण, लड़ाई-झगड़े होंगे। आपका भाई आपका बेड़ा गर्क कर सकता है। अचानक दुर्घटना से रक्त विकार हो सकता है या नाखून के दोष की आशंका है। किसी आदमी पर बेवजह गुस्सा करना, पछतावा का कारण बन सकता है। आप गुस्सा करके नुकसान भी उठा सकते हैं। आप पर कोई आक्रमण हो इस बात की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर के अंदर जमीन में तंदूर/भट्टी न रखें।
2. तोता या मैना न पालें।

उपाय :

1. विधवा स्त्री का आर्शीवाद लेवें।
2. तंदूर में मीठी रोटी लगा कर कुत्तों को खिलावें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध पांचवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका जीवन खुशहाल रहेगा। आपकी ज्योतिष विद्या तथा आयुर्वेद शास्त्र में रुचि रहेगी। आपका वाक्य ब्रह्मा जी के मुंह से निकली बात के समान होगा। आपको अपने भाई से सुख मिलेगा और लाभ होता रहेगा। आपको जीवन में औलाद सुख मिलेगा। आप बिना सोचे-समझे भी कुछ बात कह दें, तो वह सच हो जाएगा। आपका चरित्र अच्छा होगा। आपकी जद्दी जायदाद, गृहस्थी और औलाद पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। 34 वर्ष की उम्र के बाद आपका भाग्य पूरी बुलंदी पर आ जाएगा। आप पूर्ण ज्ञानी और तेजस्वी प्रभाव के व्यक्ति होंगे। आपके सगे संबंधियों या किसी भी व्यक्ति पर आपका अच्छा असर रहेगा। आप अच्छे प्रबंधकर्त्ता हैं। अकस्मात् धन की प्राप्ति के भी योग है। आपको अपने जीवन में बहुत अच्छे दिन देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आपको पराविद्या, तंत्र-मंत्र पर पूर्ण भरोसा रहेगा। धर्म, आध्यात्म और ईश्वर भक्ति के प्रति आपकी रुचि अच्छी रहेगी। आपकी बुद्धि तेज है। आपको बुद्धि के खजाने और विद्या का पूर्ण लाभ मिलेगा।

यदि आपने संतान का विरोध किया सरकारी अधिकारियों से झगड़ा किया, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, आपके घर में बांस का वृक्ष हुआ तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आप कभी-कभी बहुत कड़की बातें करने लगेंगे। इस बात का परहेज रखें। संतान पर कष्ट के दिनों में आप अधिक ही चिंतित हो जाया करेंगे। आप कल्पना लोक में भ्रमण करेंगे या काल्पनिक डर से भयभीत रहेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. गऊ मुख घर में रिहाइश न करें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. तांबे का पैसा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति दूसरे खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप गुरु का दायित्व निभाएंगे शिक्षा तथा ज्ञान फैला कर उनकी समस्याओं का हल निकाल लेंगे। आपका गृहस्थ जीवन सुखी होगा। दौलत बहुत आ जाएगी। सरकारी कामकाज के अवसर मिलेंगे। आप अपनी जायदाद खुद बनाएंगे। आपके पिता के आशीर्वाद से आपकी दौलत में वृद्धि होगी। अगर आप सरकारी नौकरी करते हैं तो 27वें साल में सरकारी नौकरी में तरक्की होगी। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आप में हुकूमत करने की ताकत होगी और जीवन की हर मंजिल पर फतह पाएगें। आपका कुछ बुरा होने वाला होगा उसके पहले आपको पता चल जाएगा। आपको अचानक दबा धन मिलने की संभावना है। आपको विद्या का बहुत लाभ मिलेगा। आपकी पत्नी सुंदर होगी। आप जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आप बहादुर होंगे। खेती-बाड़ी या मिट्टी से संबंधित कामों में या कपड़े से संबंधित नौकरी-व्यापार में अच्छा लाभ होगा।

यदि आपने पत्नी का विरोध किया, सर्राफी-जौहरी का काम किया, माता-पिता का विरोध किया या माता-पिता को कष्ट दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपकी नजर पर बुरा प्रभाव पड़ने की शंका है। बुढ़ापे में स्वास्थ्य और आर्थिक हालत अच्छी नहीं रहेंगे। आपको दूसरे के झगड़े में पड़ने से नुकसान उठाना पड़ेगा। आप कुछ दुःखी रहेंगे ऐसी आशंका है। आप में बेरहमी भी होगी। पुलिस/कोर्ट से दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सर्राफी/जौहरी के काम न करें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. मकान में कच्चा हिस्सा जरुर रखें।
2. केसर/हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप बहुत धन कमा पाएंगे। आप अपनी कामवासना की पूर्ति के लिए स्त्रियों की प्रशंसा और प्रेम भी करेंगे। आपके जीवन में पुत्र की अपेक्षा अधिक कन्याओं के सुख की संभावना है। आपको अधिक संख्या में संतान के सुख प्राप्ति की संभावना है। आप स्वस्थ रहेंगे। आपकी नेत्र की शक्ति बरकरार रहेगी। आप रुचिपूर्ण भोजन पसंद करेंगे। आपको वृद्धावस्था में अधिक सुख प्राप्त होगा। आप अपनी प्राप्त शिक्षा से हट कर काम करेंगे। आपके पिता के साथ-साथ आपकी किस्मत भी अच्छी है।

यदि आपकी पुत्रियां अधिक हुई, स्त्री से झगड़ा किया या आपकी स्त्री को नंगे पैर घूमने की आदत हुई, बहन-बुआ-साली-बेटी से धन लिया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से विद्या अध्ययन में रुकावट, पिता सुख का अभाव रहेगा। काम शक्ति में नुक्स होने की शंका है। विलंब से पुत्र का सुख मिलेगा। धन-संपत्ति की हानि भी हो सकती है। आपके सामने लड़ाई-झगड़े की भी समस्याएं पेश आती रहेंगी। लड़ाई-झगड़े से परेशान रहेंगे। आपकी बुद्धि भ्रमित रहेगी। आपके पशु की चोरी या धन-दौलत के गुम हो जाने भी संभावना है। आपका कारोबार अच्छा नहीं रहे। राज पक्ष से भी कोई समस्या पैदा होगी, ऐसी आशंका है। लोग आपको कई बार बदनाम भी कर देंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. स्त्री का अपमान न करें।
2. पत्नी को नंगे पैर न चलने देवें।

उपाय :

1. पत्नी लाल दवाई से गुप्तांग धोयें।
2. ठोस चांदी घर में रखें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि पांचवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से मकान बनवाना संतान के लिए हानिकारक है। यदि मकान बन जाए तो 48 वर्ष तक आपको संतान सुख नहीं होगा या संतान से संबंधित मुसीबत हो सकती है। आपकी संतान मकान बनाये तो लाभ रहेगा। आपका स्वभाव धर्म देवता के समान है और स्वभाव भोले बादशाह के जैसा होगा अर्थात् आप दिखने में भोले-भाले होंगे लेकिन काम करने में चतुर होंगे। आपकी आर्थिक हालात सुधरेगी। अभिमान और अक्ल की बारीकी से अपनी जिंदगी को कामयाब बनाएंगे। आपकी किस्मत अच्छी होगी। आप अपनी मर्जी के मालिक होंगे। आप काम-काज बड़ी सफाई से करेंगे। आपकी प्रबंध व्यवस्था अच्छी होगी। अधिक संतान सुख की संभावना कम है। आप राजकीय सेवा में हैं तो आपको राज्य पक्ष से लाभ होगा। आप तकनीकी कामों से संबद्ध रहेंगे

इसलिए आपकी पूछ हर जगह होगी। आपकी तरक्की भी होगी। कोई जमीन से या आकस्मिक धन प्राप्ति के भी योग बनेंगे।

यदि आपने 48 वर्ष से पहले मकान बनाया, भाई-बंधुओं आदि से चोरी-ठगी की, आपके शरीर पर अधिक बाल हुए मांस-मदिरा का सेवन किया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से पेट में खराबी, विद्या में रुकावट, शराब-मछली का सेवन करने से खानदान नष्ट हो जाने का भय होता है। आपको सांप से डंक का भय है। आपकी आर्थिक हालत पर बुरा असर पड़ सकता है। 48 वर्ष की आयु तक पुत्र या मकान दोनों में से एक का सुख मिलेगा। विवाह एक से अधिक होने पर भी संतान सुख नहीं मिलेगा या बच्चा गोद लेना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मांस-मछली का सेवन न करें।
2. 48 वर्ष आयु से पहले मकान न बनावें।

उपाय :

1. सोना-केसर पास रखें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से 21 वर्ष के पहले या 29वें वर्ष विवाह हो जाए तो बुरे फल की आशंका बनती है। आपका संबंध राजनीतिज्ञों से रहेगा। अगर आप सरकारी विभाग में सेवारत हैं तो सरकारी विभाग में पदोन्नति एवं पुरस्कार मिलने की आशा है। धन और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप बिजली के काम, पुलिस या जेल विभाग की नौकरी से आजीविका चला सकेंगे। शेयर/लाटरी में दिवालिया हो सकते हैं। आपको कन्या संतान का सुख विवाह के बाद जल्द ही परंतु पुत्र सुख में विलंब हो सकता है। विदेश की यात्रा भी हो सकती है। आप जन्म स्थान से बाहर रह कर ही सुखी रह सकेंगे। यदि आप अपने धन पर नियंत्रण नहीं रख सके तो सगे-संबंधी निश्चित रूप से धन की क्षति करने में पीछे नहीं रहेंगे।

यदि आपने अपने पास दोहता रखा या कुत्ता पाला, समाज में बदनामी के कार्य किये, पत्नी से मार-पीट की तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से भाई-बन्धु आपकी संपत्ति खा जाएंगे। भाई द्वारा भी आपके धन का दुरुपयोग हो सकता है। आपको साझेदारी के व्यवसाय, बिजली के सामान की दुकानदारी या व्यवसाय से हानि की आशंका है। पुलिस, जेल विभाग की नौकरी में धोखा-धड़ी की तो आपकी आयु क्षीण होगी। पत्नी से मन-मुटाव रह सकता हैं इसका कारण आपका शंकाग्रस्त रहना बताता है। पत्नी से जुदाई मुकद्दमेबाजी हो ऐसी शंका है। आपको राजदरबार

से परेशानी या काम काज में रुकावट नहीं आएगी। आपके जीवन में आपकी बदनामी भी हो सकती है। जीवन में संघर्ष रहेगा। पारिवारिक दशा बहुत अच्छी नहीं रहेगी। धन-संपत्ति एवं पत्नी के सुख में अभाव रह सकता है। कोई गर्भपात संभव है। पत्नी को सिरदर्द की बीमारी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर में कुत्ता न पालें।
2. बिजली, पुलिस व जेल विभाग में काम न करें।

उपाय :

1. घर में 2 चांदी की ईंटें कायम करें।
2. नारियल का दान करें।
3. चांदी की डिब्बी में चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पहले खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सुखी, धनी, मेहनती होंगे। आपकी तरक्की अधिक तबदीली कम रहेगी। आप अपने पिता के लिए वरदान सिद्ध होंगे। आप पिता की सेवा करेंगे। आप सरकारी विभाग में सेवारत होंगे तो एक अच्छे सरकारी आफिसर हो सकते हैं। यात्रा का आदेश पत्र प्राप्ति के बावजूद यात्रा न होगी। आपकी आजीविका निरंतर चलती रहेगी। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में भी हो सकता है। आपको शक्ति मिलेगी। आपके भाग्य में शुभ फल प्राप्त होगा। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। माता पर भी अच्छा प्रभाव ही रहना चाहिए। परंतु यह कोई जरूरी नहीं है कि माता पर शुभ प्रभाव ही पड़े। आप लाखों का लेन-देन करेंगे परंतु धन जमा होने में आशंका है। आप गुरु-पिता के सेवक होंगे।

यदि आप अपने पिता से दूर रहे, रिश्तेदारों को बर्बाद करने की कोशिश की या मकान को बिना कारण बेचा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से जहां आपका जन्म होगा रिश्तेदार तबाह हो जाएंगे। आपके मन में काल्पनिक फिक्र पैदा हो सकती है। पुत्र को कोई कष्ट उत्पन्न होगा। आप पर बुरा असर पड़ सकता है। आपकी गृहस्थी पर कुछ बुरा प्रभाव पड़े ऐसी आशंका है। नाभि के नीचे की बीमारियां होंगी या आपको गुप्तांग में बीमारी हो सकती है। आपको लंबी या विदेश की यात्रा बीच में छोड़ कर वापिस आना पड़ सकता है। आपको संतानोत्पत्ति की चिंता बनी रहेगी। पोते के जन्म के बाद सेहत खराब हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बकरी न पालें या बकरी की सेवा न करें।
2. गली के आखिरी मकान में रिहाईश न करें।

उपाय :

1. लाल रुमाल पास रखें।
2. काले-सफेद कुत्ते की सेवा करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु दशम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि दशम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वितीय भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि लग्न स्थान में आ जाएगी।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से देखें तो वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अतः इस समय के अन्तराल में कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ न करें, पहले से चले आ रहे व्यापार को ही सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है।

मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान के गुरुनयी विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देंगे जिसका लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में और उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान के गुरुधनागम में रूकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में निवेश न करें और न ही ऋण दें, नही तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। मातुल पक्ष से लाभ प्राप्त होगा।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में इनका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परन्तु 29 मार्च के बाद माता-पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी।

सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरुसंतान सम्बन्धित कुछ चिन्ताएं दे सकता है परन्तु मई के बाद लग्नस्थ गुरु के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चे निरन्तर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगे एवं उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश होगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भधान हेतु समय शुभ है। दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरुआपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरुग्रह के पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक या पेट संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को अनुशासित रखेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में षष्ठ स्थान पर गुरुएवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अच्छी सफलता मिलेगी। वर्ष के प्रारम्भ में बेराजगारों को रोजगार की प्राप्ति हो सकती है।

मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरुविदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में विदेश यात्रा होगी।

मई के बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान-पुण्य, गरीबों को भोजन, भिक्षुओं को भिक्षा, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि अधिक करेंगे। मई के बाद आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा एवं पूजा पाठ में रूचि लेंगे। गुरुजनों व वरिष्ठ लोगों का सम्मान करें व उनके उपदेशों का पालन करें।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धुजनों से कष्ट प्राप्त करेंगे साथ ही आपके शत्रु भी बलवान होंगे जिससे आप उनसे भी भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे एवं मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। मित्रों एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा जिसके कारण आपके मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। फलतः मानसिक रूप से आप अत्यंत ही अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से भी समय समय पर वाद विवाद तथा संघर्ष होते रहेंगे जिससे समाज में भी सम्मान में अल्पता आएगी। अतः सोच समझकर अपना समय व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त दोषों से अस्वस्थ होंगे फलतः शरीर में निर्बलता रहेगी। इस समय रूधिर विकार भी हो सकता है अतः सावधानी पूर्वक रहें एवं दुर्घटनाओं की उपेक्षा करें। इसके अतिरिक्त इस समय आग के द्वारा भी आपकी क्षति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा अतः आर्थिक रूप से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव अल्प मात्रा में रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे इससे आप में दुर्बलता भी आएगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्राएं भी करेंगे।साथ ही अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में आपको कठिनाई का सामना करना पड़ेगा इस समय मुकद्दमे आदि में भी धन का व्यय हो सकता है। अतः संयमपूर्वक इस समय को व्यतीत करें अन्यथा कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो सकती है।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा उससे आपको वांछित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता की वृद्धि होगी तथा धन लाभ एवं सुखार्जन करने में भी आप न्यूनाधिक सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही समाज में आप यश भी प्राप्त करेंगे।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण रूप से शुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आप किसी सम्मानीय पद को प्राप्त करने में भी सफल होंगे। इस मास में आपका धनार्जन प्रचुर मात्रा में होगा तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होने की संभावना रहेगी। साथ ही स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा यथाशाक्ति आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगे। समाज में इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकाशं भाग्योदय संबधी कार्य भी इसी समय सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता रहेगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। इस प्रकार इस समय सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से मनोवांछित सहयोग तथा सुख की प्राप्ति करेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करके अन्य स्त्रोतों से भी धनार्जन तथा सुख संसाधन अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्यक्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में पूर्ण सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग तथा वरिष्ठ सहयोगी भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपकी पदोन्नति की संभावना बढ़ेगी।बन्धु एवं मित्र वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे। जिससे मानसिक रूप से प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक आप इनकी पूजा एवं सेवा करते रहेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपका यश फैलेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभयोग बनते रहेंगे। इस मास में आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति करने में भी सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त विगत असफल अशाओं को पूर्ण करने में भी इस समय आपको सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण लाभार्जन तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ तथा सुखार्जन में भी सफलता प्राप्त करेंगे।अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा भाग्यशाली सिद्ध होगा।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय स्त्रीवर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा।साथ ही सौभाग्य से भी युक्त रहेंगे ।अतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे तथा आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उतम रहेगा। इस समय अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा इस में आप सफल भी होंगे।मित्रों तथा संबंधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे भी यथोचित सुख सम्मान एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा।साथ ही मनोच्छित द्रव्य पदार्थों की भी आपको इस मास में लाभ होने की सम्भावना रहेगी।संततिपक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।फलतः आप मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं शान्त रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों की भी आपको इस समय उपलब्धि हो सकती है।अतः यह मास आपके लिये अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्य प्रदान करने वाला रहेगा।

जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये मध्यम रहेगा तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल आप प्राप्त करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुर्जनों की संगति में सम्मिलित होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा। साथ ही अत्यन्त परिश्रम एवं पराक्रम से ही आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अल्प मात्रा में सिद्ध करने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का ही भाव अधिक रहेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी धन हानि या व्यय के योग बनेंगे। इस मास में मित्रों तथा संबधियों से आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा आपस में मन मुटाव तथा तनाव का वातावरण विद्यमान रहेगा। नौकरी या व्यापार आदि में भी इस समय अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी एवं शत्रुपक्ष से भी भय एवं चिन्ता का भाव रहेगा। जिस कार्य को भी आप इस मास में सम्पन्न सम्पन्न करना चाहेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।अतः इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा अप्रसन्न रहेंगे।

परंतु अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे।अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा बुद्धिमता से आपके कार्य सम्पन्न होंगे तथा अन्य प्रकार से भी सुखी रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति अपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा इस मास में किसी धार्मिक कार्य क्रम को भी आप सम्पन्न कर सकते हैं।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष निर्बल रहेगा साथ ही लाभ मार्ग भी उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। सामाजिक जनों तथा मित्रवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनके मध्य आपकी प्रतिष्ठा में आशातीत वृद्धि होगी।उच्च उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा लाभ भी अर्जित करेंगे। इस मास में आपका भाग्य प्रबल रहेगा तथा शुभ कार्य यथासमय सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त समस्त सांसारिक कार्यो को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा स्त्री वर्ग से भी सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके आप सुख एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आप रूचि रखेंगे तथा समाज एवं बन्धुवर्ग से यथोचित सम्मान भी प्राप्त करेंगे।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आप सुख तथा शान्ति पूर्वक व्यतीत करेंगे परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थ भी रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह एवं पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। साथ ही समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी पूर्ण वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे यथोचित मान सम्मान भी अर्जित करेंगे। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से भी आपको अनुकूल सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा। इस मास में आप मिष्ठान का उपयोग अधिक मात्रा में करेंगे।साथ ही आपका शत्रु वर्ग आपसे पूर्ण रूप से प्रभावित तथा भयभीत रहेगा एवं आपका सामना करने में वे असफल रहेंगे। इस समय स्त्री से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो के द्वारा भी आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा सम्पूर्ण मास सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित्त द्वारा उत्पन्न होने वाले रोग से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रक्त विकार का योग भी बन सकता है। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा पर पूर्ण ध्यान दें तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम फल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा अन्य प्रकार से भी विविध सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको उचित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन तथा सत्कार भी आप करते

रहेंगे तथा समाज में दूसरे लोगों के परोपकार के लिए भी आप कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे फलतः आपके यश में वृद्धि होगी तथा पदोन्नति की संभावना बनेगी। साथ ही भाई बहिनों से आप इस समय वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प तथा मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी जिससे आप हृदय से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे ।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की उपलब्धि भी हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए पूर्णतया सुख शान्ति एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। पारिवारिक जनों से भी आपके परस्पर संबध मधुर नहीं रहेगे अतः तनाव का वातावरण रहेगा। आपके व्यापार या कार्य क्षेत्र में इस मास मन्दी आ सकती है तथा स्थान परिर्वतन का योग भी बनता है ।साथ ही अस्थाई कार्य यदि कोई हो तो वह छूट सकता है। समाज में लोगों से इस मास आपके तनाव पूर्ण संबध रहेंगे फलतः सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग उत्पन्न हो सकते है तथा अनावश्यक रूप से भी धन व्यय होगा फलतः आप यदाकदा दुःखी रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप वात या ठण्ड से उत्पन्न होने वाले रोगों से भी पीड़ित हो सकते हैं। इस समय आप किसी ऐसे कार्य करने के लिए प्रवृत होंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। साथ ही समाज में भी आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी धन हानि का योग बनता है अतः सम्पूर्ण मास सावधानी पूर्वक अपने किया कलापों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल प्रदाता रहेगा तथा अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से होते रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से भी लाभ अर्जित करेंगे। आपके सामाजिक प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। इस मास में आपके महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे तथा कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना भी उत्पन्न होगी तथा नियम पूर्वक इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनुकूल एवं वांछित

सहयोग तथा सम्मान भी अर्जित करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से भी आप मुक्त होंगे।

परन्तु शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी एवं आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय आप अग्नि द्वारा भी किसी प्रकार की धन हानि को प्राप्त करेंगे। अतः सोच समझकर अपने सभी कार्यों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ की अपेक्षा अशुभ ही अधिक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा साथ ही शत्रु पक्ष के बलवान होने से आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति रहेगी। इस मास में आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी। साथ ही ऐसे समय में उच्चाधिकारी वर्ग की भी उपेक्षा न करें एवं उनकी आज्ञा का पूर्ण पालन करें अन्यथा आपको दण्डित भी किया जा सकता है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा असफलता अधिक मिलेगी। साथ ही इस समय धन का व्यय भी अधिक मात्रा में करेंगे अतः न्यूनाधिक आर्थिक संकट भी बना रहेगा। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते है जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय आपके मित्र तथा संबधियों से मधुर संबध अल्प रहेंगे तथा तनाव अधिक रहेगा तथा आप सामाजिक उपेक्षा भी प्राप्त करेंगे एवं आपकी आशाएं भी अपूर्ण ही रहेंगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही इस मास में नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित करने में सफल हो सकते है। इससे आप अल्प मात्रा में मानसिक सन्तुष्टि तथा शान्ति प्राप्त कर सकेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंद्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तमरहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकीआय में वृद्धि होगी। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने नयेव्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैंऔरकम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगाजिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। धन संचय करने में आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। 02 जून के बाद आपको रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपको रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले होथों से खर्च करेंगे। निवेश में उत्तम फल मिलने की सम्भावना है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय सामाजिक व धार्मिक कार्यों पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। यदि आप विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

02 जूनके बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिताजी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 31 अक्टूबर के बाद आप सामाजिक गतिबिधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि से आप के बच्चों कीउन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आप के बच्चे अच्छे काम करेंगे। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा सकारात्मक विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

25 नवम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय अचानक आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः वर्षान्त में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अधिक जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान परगुरु केदृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 02 जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातको की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, 02 जून के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव सेयात्राओं के प्रबल योग बन रहें है। 02 जून के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे और 31 अक्टूबर के बाद आपकी

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने मे आप सबसे आगे रहेंगे। 02 जून के बाद मन्त्र सिद्ध व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रूझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आप स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रुओं की ओर से भी चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। इस मास में आपके उत्साह में भी कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम के बाद भी पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं होंगे। शारीरिक अस्वस्थता भी इस समय बनी रहेगी तथा स्वभाव में लोलुपता के भाव में वृद्धि होगी। अपने बंधु एवं मित्र वर्ग से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव चलता रहेगा।मित्र वर्ग भी इस समय शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिसके कारण मन अशान्त तथा असंतुष्ट रहेगा। इसके अतिरिक्त आपके सामाजिक जनों से भी वादविवाद या संघर्ष होने की संभावना बनी रहेगी जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होते रहेंगे। अतः स्त्री से सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा बुद्धिबल से आपके कार्य सफल भी हो सकते है। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में रूचि उत्पन्न होगी। इस प्रकार आपका यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगे। इस समय शत्रुप क्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे एवं घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेंगी। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप शारीरिक तथा मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। इस समय आप दूर या समीप की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं।आपके सांसरिक कार्य इस मास में अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्यय अधिक होगा। अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आपको समय समय पर शुभफल भी प्राप्त होंगे।अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं महिला सहयोगियों से भी लाभार्जन करेंगे। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धनार्जन प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। इस मास में धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे तथा समाज में आपको पूर्ण यश प्राप्त होगा।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ तथा भाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आपके धर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा।संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं श्रद्धा पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा। इस मास में आपकी लाभ दायक यात्रा का योग भी बनेगा। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सम्मान तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज में आप एक सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा तथा सुख साधनों को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आपकी रूचि रहेगी तथा समाज में पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा व्याप्त रहेगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्ता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होगी तथा समाज में आपको उचित सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग अर्जित होगा तथा वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे मानसिक रूप से शान्ति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप सरकार या अधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस समय आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों आदि की भी आपको इस समय प्राप्ति हो सकती है।अतः यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख तथा प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे। सरकार या

उच्चाधिकारी वर्ग से भी इस मास में आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन भी पूर्ण प्रसन्न रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में आपको मनोच्छित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में यश तथा सम्मान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।अतः इस मास को आप सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रूप से व्यतीत होगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुष्ट मनुष्यों की संगति से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय आप आर्थिक संकट से भी उलझे रहेंगे। अतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अत्यन्त परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी आप यथोचित पूजन तथा सत्कार नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप हानि प्राप्त करेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से लाभ अर्जित करेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी। जिसके फलस्वरूप कोई धार्मिक उत्सव सम्पन्न हो सकता है। इस प्रकार यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होती रहेगी अतः इस समय आपके शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं आप से प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय सम्मान एवं सहयोग अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करेंगे। अतः आपकी अर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी इससे समाज तथा मित्रवर्ग में प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी तथा पूर्व विलंबित हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य

स्वतः सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफल रहेंगे एवं सर्वत्र आनन्द एवं प्रसन्नता का वातावरण विद्यमान रहेगा।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है।अतः शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सचेत रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी क्षति हो सकती है।अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धन लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपको अपने पारिवारिक जनों तथा बन्धु वर्ग के मध्य यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित होगी तथा परस्पर संबध भी मधुर रहेंगे। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। फलतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाएंगे। आपकी मिष्ठान्न भक्षण में भी इस मास पूर्ण रूचि रहेगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा रहेगा तथा उसमें बल की वृद्धि होती रहेगी। शत्रुपक्ष को पराजित तथा भयभीत करने में भी आप सफल रहेंगे तथा सभी जनों से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। फलतः आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार अदि कार्यो में भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिये अत्यंत ही शुभफलदायक रहेगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुखी रहेंगे तथा सन्तति पक्ष से भी सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या वस्तुओं की प्राप्ति भी हो सकती है। अतः प्रसन्नता पूर्वक इस मास को व्यतीत करने में आप सफल रहेंगे।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया शुभ रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही समाज में अन्य लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त

होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके शत्रु प्रबल रहेंगे तथा उनसे आप भयभीत तथा चिंतित रहेंगे। जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्नता तथा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में मन्दी आएगी तथा कई अनावश्यक विध्नबाधाएं भी उत्पन्न होंगी। साथ ही आपका कोई कार्य बंद हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन होने की संभावना बनेगी। समाज में अन्य लोगों से इस मास में आपका अनावश्यक विवाद या संघर्ष होगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शारीरिक कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्धारा भी किसी प्रकार की क्षति या हानि हो सकती है। अतः सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको द्रव्य लाभ का योग बनेगा। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों को भी आप सुनेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से आप लाभार्जन करने में भी सफल हो सकते हैं। इस समय आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में अभिबृद्धि होगी तथा समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होगी। अतः मन से आप पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया अशुभ रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस समय आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे तथा उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति तथा उद्विग्नता विद्यमान रहेगी। साथ ही इस मास में आपके धर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय आपको पूर्ण सहयोग रखना चाहिए तथा उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा आप दण्डित भी किए जा सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे एवं धन का व्यय भी अनावश्यक रूप में होता रहेगा। अतः आर्थिक दृष्टि से भी आप शिथिल हो सकते है। साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आप को बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके संबधों में भी इस समय तनाव का वातावरण रहेगा तथा समाज से भी आप उपेक्षा प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पितजनित रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा दुर्घटना अदि से भी शरीर में रक्त विकार की संभावना हो सकती है। इसके अतिरिक्त इस समय अग्नि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष अष्टम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया रहेगा। दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा सफलता प्राप्त करेंगे। बडे अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रूकावट उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपने विवेक से उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोत में वृद्धि होगी। व्यापारिक व्यक्तिओं को इस समय के अंतराल में अच्छा लाभ होगा। आपको मित्रों का भी भरपूर सहयोग मिलेगा। यदि आप अपने भाई के साथ कार्य कर रहे है तो बहुत अच्छा उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यापारियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आर्थिक संपन्नता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता से आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। इस समय के अंतराल में आप इच्छित निवेश करेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कुछ अनावश्यक खर्चे भी हो सकते हैं।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत में वृद्धि होगी। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों का अहम सहयोग होगा। मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद आपको भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक रूपसे अच्छा रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके

परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनी रहेगी। परिवार में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। अष्टम स्थान का राहु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब कर सकता है।

26 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगें। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय अच्छा चल रहा है।

26 जून से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। आपकी शारीरिक उर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहें। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप कभी कभी छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते है। परन्तु गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे। 26 नवम्बर से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने कारण आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय शुभ रहेगा।

26 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यापार के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। परन्तु 26 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

26 नवम्बर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। यात्रा करते समय सावधान रहें क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक दुर्घटना दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्य के लिए बढ़िया रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 26 नवम्बर के बाद अपने परिवार में सुख, शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्तों को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं या राहु ग्रह का ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सं राहवे नमः मन्त्र का जाप करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ विरोधी या गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं।

वर्षारम्भ में उन्नति के लिए नये नये तरीके अपनाएंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान का राहु साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। फरवरी के बाद आपके आय के स्रोतो में वृद्धि होगी। निवेश के लिए समय काफी अच्छा चल रहा है परन्तु अष्टम स्थान का राहु कभी कभी अनावश्यक खर्च करा सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी आर्थिक उन्नति में आपके भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। आपका पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। इस अवधि में वसीयत इत्यादि मिलने की भी संभावनाएं बन रही हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। पूरे परिवार में सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो सफलता प्राप्त हो सकती है।

28 फरवरी के बाद गुरु के तृतीय भाव में गोचर करने से आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को चोट पहुंच सकती है। अतः अच्छा यही है कि विपरीत परिस्थितियों के लिए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति

विकसित करें। 24 जुलाई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

यह वर्ष संतान की तरक्की के योग लेकर आ रहा है। शिक्षा के लिए समय बहुत अनुकूल हो रहा है। परिवार की उन्नति के लिए आपकी संतान नवीन योजनाएं बनाएंगे।

संतान के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी। घर का वातावरण उत्तम होने के साथ-साथ सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। 24 जुलाई के बाद का समय आपके लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में स्वास्थ्य बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

तनाव कम करने के लिए इस अवधि में आप अपने मन को एकाग्र कर योग क्रियाएं कर सकते हैं। इससे उत्साह का संचार होगा और आप अपने को स्वस्थ बनाए रखने में कामयाब रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए उत्तम रहेगा। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर मैं की भावना ना आने दें। 23 फरवरी के बाद समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए स्थानान्तरण के प्रबल योग बने हुए हैं। यह परिवर्तन आपके हित में होगा। 28 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

24 जुलाई के बाद आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो

उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा धार्मिक कार्य में असफलता या पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 24 जुलाई के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष धार्मिक आयोजन जैसे- भगवती जागरण इत्यादि कर सकते हैं।

- भगवान गणेश व माँ दुर्गा की आराधना करें।
- गौ सेवा करें व अपने भोजन का पहला भाग गाय को खिलाएं।
- राहु मन्त्र का जाप करें या राहु की वस्तुओं का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में ही आप कोई नया व्यापार शुरु करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। उच्चअधिकारियों या वरिष्ठ लोगों की सहयोग मिलती रहेगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 29 मार्च से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन में समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। व्यापारिक व्यक्ति अपने कर्मचारिओं व नौकरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए नहीं तो सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक वे आपका साथ छोड़ सकते हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्ति अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम होगा। आय भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह का संयुक्त गोचरीय प्रभाव धनागम के स्रोतों में वृद्धि करेगा। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। 29 मार्च से पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य पर धन का व्यय होगा जिससे आर्थिक उन्नति रुक सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह के अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है। सट्टा, लॉटरी, या शेयर इत्यादि से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थस्थ मंगल के प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी

बरतने की आवश्यकता है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

25 अगस्त से आपका घरेलम वातावरण अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। 05 अक्टूबर के बाद आपके प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। गर्भ धारण का अच्छा समय है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वह अपने बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के योग बन रहे हैं। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका यश बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन करेंगे।

29 मार्च के बाद स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 25 अगस्त के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर चोट चपेट या दुघर्टना की स्थिति बन रही है। अतः कोई भी कार्य करते समय एकाग्रता बहुत जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठतम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उपलब्धी प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय उत्तम है। करियर में भी अच्छी सफलता मिलेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी सफल होंगे परन्तु 29 मार्च के बाद करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 08 अगस्त के बाद विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

यात्रा के दौरान छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। समय-समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। वर्षान्त में मन्त्र साधना भी कर सकते हैं।

- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल मजदूरों या गरीबों में दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें एवं अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति आपके कार्यों में रुकावटें डाल सकती है। इस समय के अंतराल में आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु गुरु के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त करेंगे आपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम को आगे ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। केवल आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होने के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। आपके अन्दर संतुष्टि और जीत की भावना बना रहेगी।

23 सितम्बर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए थोड़ा चिंताजनक हो सकता है क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अप्रैल तक अच्छा नहीं है। मई से आपका समय काफी अच्छा हो रहा है। आप को कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। आप अपनी समझ का सही उपयोग करेंगे आपकी राह में आने वाले हर अवसर का लाभ उठाने के लिए आपको सही और गलत की परख होगी।

सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें, किसी को उधार पैसा न दें और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह बढ़ोत्तरी विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नही रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी।

सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी का

स्वास्थ्य अचानक बिगड़ सकता है या उनके साथ आपका वैचारिक मदभेद हो सकता है। मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी कम होगी और शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय चल रहा है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः उनको मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति विशेष ध्यान देना चाहिए। खान-पान पर विशेष ध्यान दें, नहीं तो स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। अप्रैल के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा व रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि होगी।

वर्षान्त में गुरु ग्रह गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। स्वास्थ अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। व्यापारिक व्यक्तियों के लिए व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

अप्रैल के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। यात्रा के दौरान किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

17 अप्रैल के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। इस यात्रा से आपको लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 17 अप्रैल के बाद आप दान-पुण्य अधिक करेंगे धार्मिक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी। मन्त्र जप व साधना करेंगे साधु, संन्यासी एवं ईश्वर में आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपको व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है परन्तु 18 फरवरी के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। इस समय के अंतराल में आपके काम करने का तरीका सबसे अलग होगा। इस तरीके से आपके वरिष्ठ अधिकारी प्रभावित होंगे और उनका सहयोग भी मिलेगा।

यदि आप व्यवसायी हैं तो किसी के साथ मिल कर कोई नया व्यापार शुरु कर लेंगे। उस काम में आपको अच्छा लाभ होगा। 15 अगस्त से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय आपको किसी पर अत्यधिक विश्वास नहीं करना चाहिए।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक प्रतिकूलता के कारण बचत कम ही कर पाएंगे। शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। 18 फरवरी से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। पत्नी एवं आपके मित्रों से अच्छा लाभ होगा। व्यावसायिक उन्नति करने में भी आप खर्च करेंगे।

14 जून से 15 अक्टूबर तक निवेश के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें नहीं तो हानि हो सकती है। अक्टूबर से समय बहुत अच्छा हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। दूसरे भाव पर शनि की दृष्टि रहेगी। पारिवारिक मामलों में समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद न करें और वाणी पर नियंत्रण रखें। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

18 फरवरी से आपके परिवार में अनुकूलता का वातावरण बनेगा। साथ ही धर्म पत्नी के साथ संबंधों में भी मधुरता आएगी। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। जुलाई के

बाद संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। परिवार में किसी सदस्य की बढोत्तरी हो सकती है। वर्षान्त में आपके परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। जिससे परिवार में प्रेम एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। पंचम स्थान के मंगल आपकी संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न करते रहेंगे। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रूकावटें आ सकती हैं।

गर्भवती स्त्रियों को अपने खान-पान एवं रहन-सहन पर विशेष ध्यान देना चाहिए अन्यथा गर्भपात हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इसके बावजूद बच्चों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। वर्षान्त आपके दूसरे बच्चे के लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिहाज से बहुत अच्छा नहीं है। आपको ऐसा अनुभव होगा आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे कम हो रही है। 18 फरवरी के बाद शारीरिक आरोग्यता में कुछ अनुकूलता आएगी परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

उदर सम्बन्धित बीमारी या मोटापा बढ़ सकता है। लेकिन आप खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो यह वर्ष करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलास में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

14 जून से समय कुछ प्रभावित हो रहा है। यह समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक भटकाव व एकाग्रता की कमी रहेगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के लिए 15 अक्टूबर के बाद समय बहुत बढ़िया हो रहा है। व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों को इस समयान्तराल में अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के शुरु में द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा करा सकते हैं। 18 फरवरी के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान में शनि का गोचर अच्छा नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है परन्तु फरवरी के बाद धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना एवं दान-पुण्य आपकी दिनचर्या में शामिल हो जाएगा। ईश्वर के प्रति आपकी श्रद्धा भी बढ़ेगी। 15 अक्टूबर से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना, गरीबों को खाना खिलाना एवं दूसरों की सहायता करने में आप सबसे आगे रहेंगे। बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु के मन्त्र का पाठ करें ।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं द्वादश भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष सामान्य अनुकूल रहेगा। व्यवसाय में सफलता के लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। व्यापार द्वारा अच्छा खासा लाभ होने की सम्भावना है। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। बहुत से कार्यों को एक साथ करने से बचें। साथ ही हर काम को एकाग्रता के साथ करें।गुरु ग्रह के गोचर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

5 मार्च के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारारूकावटें डाली जा सकती हैं। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका सम्बन्ध भी खराब हो सकता है। 12 अगस्त के बाद व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको अच्छी सफलता मिल सकती है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति धनागम के लिए अच्छी नहीं होती है। अनावश्यक निवेश करने से बचें। धन के लेन-देन में सावधानी बरतें। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

5 मार्च से समय और ज्यादाप्रभावित हो रहा हैं। धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। मई के बाद आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। 12 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति को लेकर सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ाया विवाद में नहीं पड़ना चाहिए।मई के बाद मित्रता में

दरार आ सकती है।

12 अगस्त से समय अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगोंसे अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय शुभ है।

संतान

पूरे वर्ष आप संतान के मामले में चिंतित रहेंगे। पंचम का राहु संतान की तरक्की में बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी हो सकती हैं। नवविवाहित गर्भवती महिलाओं के लिए गर्भपात के योग बनेंगे इसलिए सावधानी बरतें।

द्वितीय संतान के लिए समय अपेक्षाकृत बेहतर होगा उसके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उसके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी रहेगीपरन्तु 5 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानीउत्पन्न होती रहेगी। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव सेआपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है।आपको पेट संबंधित तकलीफें हो सकती हैं। अपने खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 अक्तूबर के बाद वाहन इत्यादि से सावधान रहें और यात्रा भी कम से कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता अभ्याथिर्यों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप लक्ष्य से भटक सकते हैं। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। मई के बाद लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

12 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। व्यवसायियों को अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है और प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकीविदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहेहैं। 5 मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

23 अक्तूबर के बाद यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योंकि चोट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। 31 मई के बाद गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन पीली वस्तुएं जैसे केला आदि गरीबों में दान करें और केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- सरसों के तेल में बनी वस्तुओं को गरीबों को खिलाएं।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी परंतु अपने परिश्रम के बल पर सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। कड़े परिश्रम एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालाँकि 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है।

वरिष्ठ लोगों व अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। फिर भी इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। चतुर्थ राहु के कारण जमीन-जायदाद से जुड़े लोगों को हानि हो सकती है। नौकरी वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। वर्ष की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

आप अपने संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्ग एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष घर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा। ऐसी स्थिति में आपको अपना पारिवारिक महौल अनूकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चहिए।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपकी पारिवारिक एवं सामाजिक पद

व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकी माता के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है।

18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी और आप अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें नहीं तो 8 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यह समय माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनाएगा। 18 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

इस समय माता का स्वास्थ्य व घर की सुख शान्ति भी प्रभावित रहेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको नीतियों में बदलाव करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। परन्तु 18 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट व अप्रसन्न रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा। जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रियाएं कम ही कर पाएंगे। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण अच्छे कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में भी बदलाव होगा।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को काला कम्बल दान करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगा।
- आत्म सम्मान में वृद्धि के लिए प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं नमव भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 23 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश कर सकते हैं। परन्तु आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

12 अगस्त के बाद तृतीयस्थ राहु के कारण आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे। व्यावसायिक व्यक्तियों को गैरकानूनी काम-धन्धों से बच के रहना चाहिए नहीं तो द्वादश स्थान का शनि आपके कार्यों में कानूनी व्यवधान डाल सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कोई कार्य बहुत ही सोच विचार करें, क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु जमीन-जायदाद के लिए अच्छा नहीं होता। धन हानि व धनागम के मार्ग प्रभावित होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 28 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको ऋण मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी, जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। आपकी माता के लिए यह समय अशुभ है परन्तु पिता के लिए काफी शुभ है। धर्मपत्नी के साथ अच्छा संबंध नहीं रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध घरेलू वातावरण के लिए बहुत ही शुभ है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। घर में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। माता पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। तृतीय स्थान का राहु सामाजिक उन्नति के लिए बहुत ही बढ़िया रहेगा। समाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए उत्तम रहने वाला है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंगे। आपकी दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप मामूली संक्रमण की चपेट में आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके स्वास्थ्य लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण स्वस्थ रहते हुए भी आप अपने को बीमार जैसा अनुभव कर सकते हैं। मार्च के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा। फिर आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 23 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ गुरु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जा सकते हैं। यह यात्रा मनोरंजनात्मक तथा आनन्ददायक रहेगी। यात्रा के दौरान आपको कुछ परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 23 मार्च के बाद से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप मन्दिर निर्माण जैसे धार्मिक कार्य या दान-पुण्य आदि सात्विक क्रियाओं में संलग्न रहेंगे।

- किसी गरीब बच्चे को शिक्षा दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करें व प्रत्येक दिन शिवजी का दुग्धाभिषेक करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि द्वितीय भाव में और सिंह राशि का राहु तृतीय भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्यक्षेत्र में उन्नति व सफलता के लिए संघर्ष पूर्ण रहेगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न होंगे। जो कि आपके कार्यों में व्यवधान डालने की कोशिश करेंगे। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। पदोन्नति के साथ मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए 6 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। परन्तु भूमि क्रय-विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके लिए अच्छी नहीं है।

धन संपत्ति

इस वर्ष का आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहेंगे। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं कि प्राप्ति होगी। 6 अप्रैल के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। फिर भी किसी प्रकार का आर्थिक निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में खर्चो पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। क्योंकि द्वितीयस्थ स्थान का शनि परिवार पर कुछ अनावश्यक खर्च करा सकता है। जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। परन्तु व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह साल आपके लिए बहुत अच्छा रहने वाला है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिये वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परिवार के सभी सदस्य प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक-दूसरे को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे जिससे परस्पर संबंधो में मधुरता रहेगी। फलतः पारिवारिक वातावरण शान्ति एवं सद्भावना से युक्त रहेगा। 5 अप्रैल के बाद पारिवारिक स्थिति के लिए समय किंचित प्रभावित हो रहा है। ये समय आपकी माता के लिए शुभ नहीं है। परन्तु धर्म पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाईयों के लिए बहुत ही शुभ है। इस समय के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे उन्नति करेंगे। वे कुछ विशेष करने वाले हैं जिससे आप उन पर गर्व करेंगे।

बच्चों के माध्यम से समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरे संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय बहुत ही शुभ है। यदि आपका बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य मिला-जुला रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको कमजोर जैसा अनुभव होगा। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

6 अप्रैल के बाद आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात् इस समय आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं। क्योंकि आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला-जुला रहेगा। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय नए स्रोतों का सृजन करेंगे।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं को अच्छा लाभ मिलेगा। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

यात्रा-तबादला

6 अप्रैल के बाद आपकी अधिक से अधिक यात्राएं होंगी। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी। नौकरी करने वाले लोगों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए शुभ संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकती है, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठमत रहेगा।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उसका पूजन करें।
- ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं द्वादश भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। एकादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। व्यापार में आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार के संतुष्ट रहेंगे। अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो सकता है।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि नौकरी करने वालों के लिए अच्छी नहीं है। क्योंकि आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे और इसमें आप काफी हद तक सफल भी रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आय के बंद मार्ग खुलेंगे। धन संचित करने में आपके भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु अप्रैल के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेद-देन में सावधान रहें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

13 अप्रैल से द्वितीय स्थान में राहु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। 27 अगस्त से समय फिर से अनुकूल हो रहा है और उसके बाद अच्छा रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। द्वितीयस्थ शनि की चतुर्थ स्थान पर दृष्टि पारिवारिक माहौल खराब कर सकती है। ऐसे में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। नहीं तो आपका घरेलू माहौल ज्यादा अशान्त हो सकता है।

अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें। 27 अगस्त के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे आपकी ख्याति और बढ़ेगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। अप्रैल के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

आपके दूसरे बच्चे का चहुंमुखी विकास होगा। उन्नति के मार्ग खुलेंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। 27 अगस्त के बाद पंचम स्थान पर शनि की दृष्टि आपके बच्चे की उन्नति को रोक सकती है। अतः उस समय उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अनुकूल रहेगा। परन्तु 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा उस समय आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। उदर से सम्बन्धित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का ही अधिक सेवन करें। 27 अगस्त के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ राहु के कारण आपको अचानक सफलता मिल सकती है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। यदि अच्छी शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

अप्रैल से जुलाई तक आपकी उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। परन्तु 27 अगस्त के बाद आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग नौकरी की तालाश में हैं। उनको अचानक इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए वर्षान्त बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान का राहु वर्ष के प्रारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राएं कराते रहेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। द्वादश स्थान के गुरु विदेश यात्रा का भी प्रबल योग बना रहे है।

अप्रैल के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा भी हो सकती है। यह यात्रा आपके लिए बहुत ज्यादा आनन्ददायक रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक क्रिया-कलापों के लिए साल का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या सुधरेगी। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे। अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भुखे को खाना खिलाना या भण्डारा इत्यादि कार्य करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थपित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यदि आप एक व्यापारी हैं तो अप्रैल के बाद आपको काफी लाभ प्राप्त होने वाला है। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे। आप अपने पूर्व के अनुभवों के आधार पर सफलता हासिल करेंगे। जो लोग प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करते हैं, उनको शानदार लाभ प्राप्त होने वाला है। शेयर बाजार में पैसे लगाना, फायदे का सौदा होगा। यदि आपके प्रदेश में लॉटरी प्रतिबंधित नहीं है तो उसमें अपना भाग्य आजमा सकते हैं। सफलता मिलने की संभावना है।

यदि आप वकील, मीडिया इत्यादि से संबंधित काम कर रहे हैं तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपकी उन्नति में व्यवधान डाल रहा है। अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। आपको अपने कार्यों में नाम और शोहरत मिलेगी। आपके सहकर्मी आपकी मदद करने के लिए आगे आ जाएंगे, जो आपकी सफलता के साक्षी बनेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं होने के कारण आपको आर्थिक मामले में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। किसी के ऊपर ज्यादा विश्वास न करें, क्योंकि कुछ लोग आपके विरुद्ध षड्यंत्र रच सकते हैं। अपने क्रिया-कलापों पर ध्यान दें और बेकार में पैसे खर्च करने से बचें क्योंकि द्वादश स्थान का गुरु आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकता है। 26 अप्रैल के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी वित्तीय स्थिति में कुछ सुधार होगा।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम तो होगा परन्तु द्वितीयस्थ राहु के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। वैसे चिंता करने जैसी कोई बात नहीं है, कोई बड़ा नुकसान नहीं होने वाला है। कार्यस्थल पर अपनी मौजूदगी को लेकर सजग रहें तथा अधिक व्यय करने से परहेज करें। किसी प्रकार का ऋण लेने से भी पूरी तरह दूर रहें। लोन लेकर कोई कार्य शुरू न करें। जमापूंजी से ही नए कार्य का आरंभ करें तो उचित होगा। अक्टूबर के बाद समय बहुत ही बढ़िया हो रहा है। उस समय इच्छित बचत करने में सफल हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान का राहु पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। अचानक आपके

परिवार में विषमता की परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। वर्षारम्भ आपके पिता जी के लिए शुभ नहीं है। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना होगा। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए आपको छोटी मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना होगा। 26 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक स्थिति के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है।

परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जीवनसाथी का भरपूर सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आपका अहम सहयोग होगा। सितम्बर के बाद आपके कुटुम्ब में वृद्धि होगी। द्वितीयस्थ गुरु के कारण सुख, समृद्धि में बढ़ोत्तरी होगी। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से समाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप का समाजिक स्तर भी बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे, जिससे समाज में आपका एक अलग व्यक्तित्व होगा।

संतान

द्वादश स्थान के गुरु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः वर्ष के प्रारम्भ में उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में भी रुकावटें आ सकती हैं। 26 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपकी संतान के लिए काफी शुभ हो रहा है।

अप्रैल के बाद नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। वे अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय शुभ है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। परन्तु 26 अप्रैल के बाद अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। मानसिक सन्तुष्टि व शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

19 अक्टूबर के बाद अचानक सिर दर्द, गैस, व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। अपने खान पान पर भी ध्यान रखें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में अपने एवं धर्म पत्नी के स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 26 अप्रैल के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिलेगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 26 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। ये सब यात्रा व्यवसाय से संबंधित हो सकती हैं।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण यात्रा के अंतराल में किसी से आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भूखे को खाना खिलाना, गरीबों की सहायता करना ही आपका प्रथम उद्देश्य रहेगा। 26 अप्रैल के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। ईश्वर के प्रति आपका अटुट विश्वास होगा।

- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें ।
- अपने से बड़े लोगों की सेवा करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं तृतीय भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और पनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस साल कारोबार में अच्छी सफलता मिलने वाली है। कार्य क्षेत्र में समय समय पर परिवर्तन करते रहेंगे। ऐसे में तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ होगा। अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना भी नहीं करना पड़ेगा। आपको बांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी। जो लोग सूद-ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो सफलता आपके कदम चूमेगी।

मई के बाद समय और भी रोमांचक और शानदार हो रहा है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपकी मान-मर्यादा बढ़ेगी और सहकर्मियों का सहयोग भी मिलेगा। आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे समय से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वंदियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। हालांकि 22 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर कुछ परेशानियाँ ला सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को किंचित परेशानी हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छा बनाकर रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। आप अपने कार्यों के प्रति गंभीर बने रहेंगे, जिस कारण धन का आगमन भी बिना बाधा के होता रहेगा। मई के बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

सामान्यतः आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। उसके स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगे। आपके एश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। 22 अक्टूबर के बाद भूमि, घर व वाहन खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर विशेष ध्यान दें नहीं तो चतुर्थ स्थान का शनि आपको फंसा सकता है। कुछ अपने ही लोग आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। जमापूंजी और लेन-देन के

मामले में किसी प्रकार की लापरवाही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन-देन करें।

घर-परिवार, समाज

इस साल आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे। परिवार के सभी सदस्य आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप दोनों परिवारों के लिए सहयोगी सिद्ध होंगे परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधो में तनाव की अनुभूति हो सकती है। यदि दोनों आपस में सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधों मे मधुरता बनी रहेगी। मई के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से पराक्रम व साख में वृद्धि होगी। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे। अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने परिवार पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो आपकी पारिवारिक स्थिति खराब हो सकती है।

संतान

साल के प्रारम्भ में पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि संतान के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। आपकी संतान बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगी। अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आज्ञा पालन में वे हमेशा तत्पर होंगे।

11 मई के बाद आप अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। अक्टूबर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्स अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षण रहेगा। साल के प्रारम्भ से ही आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे। रोग व्याधि की सम्भावना कम है परन्तु 11 मई को, गुरु ग्रह के गोचर के बाद लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा, अन्यथा आपका बजन बढ़ सकता है।

अक्टूबर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों से परेशान हो सकते है। जैसे - सरदर्द और अपच आपको परेशानी में डाल सकती हैं। अतः अपनी सेहत के प्रति सावधान रहें। आँख,

किडनी और लीवर से संबंधित कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। आलस्य भी आपके ऊपर हावी रहेगा। इस समय आपको दिमाग स्थिर रखने की आवश्यकता है। सुबह-शाम टहलना और प्रोटीनयुक्त पदार्थ अपने आहार में शामिल करना आपके लिए हितकर होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को परिश्रम के बाद नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों को सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

साल के प्रारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। मई के बाद सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

शनि ग्रह का गोचर नौकरी वालों के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि आपका प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपके अन्दर पूजा पाठ के प्रति विशेष रुचि जाग्रत होगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। थोड़ा बहुत कुछ दिखावा भी करेंगे। जैसे जागरण करना, सांई संध्या करना इत्यादि। तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच या आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

चतुर्थ स्थान का शनि नौकरी वालों के लिए अच्छा नहीं है। आपका स्थानान्तरण किसी प्रतिकूल स्थान पर होने की प्रबल संभावना बन रही है। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं, इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। 5 अप्रैल के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। कारोबार सही रास्ते पर आएगा और मुनाफा भी होगा। प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम मिलेगा। प्रतिद्वन्दी आपको नीचा दिखाने की खूब कोशिश करेंगे लेकिन वो अपने मंसूबो में सफल नहीं होंगे। आपको अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण करना होगा। तभी आपको नाम और पैसा दोनों की प्राप्ति होगी।

द्वादश स्थान का राहु कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकता है। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने से आप सभी परेशानियों का हल निकाल लेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यापारी व्यक्ति वर्षान्त में अच्छी उन्नति करेंगे। साथ ही विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित करेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान का राहु आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु मार्च के बाद द्वितीय स्थान में गुरु ग्रह का गोचर काफी अच्छा हो रहा है। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे तथा वांछित बचत करने में भी सफल हो सकते हैं। 13 जुलाई के बाद परिवार में रोगादि की अधिकता होने के कारण धन व्यय हो सकता है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से लेन-देन व निवेश के मामले सावधानी बरतें तथा जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। जमीन व फ्लैट खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर पूरा ध्यान दें नहीं तो चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से धोखा मिल सकता है।

इस समय के अंतराल में आधुनिक सुख संसाधनों को प्राप्त करने में भी बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। नवम एवं एकादश भाव पर गुरु की दृष्टि पिता एवं आपके भाईयों से भी धन लाभ करा सकती है। 4 नवम्बर के बाद भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु जल्दबाजी में कोई भी बड़ा निर्णय न लें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से जल्दीबाजी में कोई गलत निर्णय ले सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा नहीं रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण आप परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। माता पिता के साथ भी संबंध अच्छे नहीं रहेंगे। सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि अचानक पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकती है, जिससे सब लोग परेशान हो सकते हैं।

मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। परिवार से जुड़ी सभी समस्याएं दूर होंगी। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय काफी शुभ है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। वांछित मान सम्मान मिलेगा। किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करेंगे। आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त हो सकती है एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। 4 नवम्बर से माता पिता जी का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा उनसे आपको आर्थिक लाभ भी होगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण संतान संबंधित कुछ चिंताएं बनी रहेंगी। परन्तु 7 अप्रैल के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी आपके बच्चे वांछित लाभ एवं सफलता भी अर्जित करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति उसकी रुचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि के प्रति उनका आकर्षण बढ़ेगा।

जून से उनके मन में आपके प्रति आदर व सम्मान का भाव बढ़ेगा। प्रथम संतान की अपेक्षा आपकी दूसरे संतान ज्यादा उन्नति करेगी। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान के राहु स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे तथा अचानक आपको बीमार भी कर सकते हैं। चतुर्थस्थ शनि के कारण माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि अप्रैल से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे तथा आप निरोगी काया के स्वामी होंगे किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी।

13 जुलाई से आपका बजन बढ़ सकता है अतः बजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। घी, तेल व तला हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंतन न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शुरूआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन 13 अप्रैल के

बाद समय में सुधार होगा। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। परन्तु विद्यार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 13 जुलाई के बाद प्रतिकूल स्थान पर परिवर्तन होने के प्रबल योग बन रहे हैं। मेकेनिकल इंजिनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। 7 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

4 नवम्बर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिये अत्यधिक लाभ प्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में लग्नस्थ राहु के कारण सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपकी आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं एवं शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- दुर्गा सप्तशति का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- प्रत्येक सोमवार के दिन शिव लिंग पर जल चढ़ायें तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तररण होगा। वरिष्ठ लोग व उच्च अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे तथा सभी प्रकार से आपकी सहायता करने में तत्पर्य रहेंगे। कार्यस्थल पर आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह सब आपकी सकारात्मक विचारधारा के कारण होगा। व्यावसायिक व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। अप्रैल से जून तक समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आजीविका क्षेत्र में मानसिक दबाव अधिक रहेगा। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल द्वारा सभी प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यावसायिक उन्नति करने में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। भूमि, वाहन व कॉस्मेटिक से जुड़े लोगों को लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए यह साल मिला-जुला रहेगा। जोखिम उठाने से परहेज करें। वित्तीय विषयों के लिये यह समय सही नहीं है। द्वादश स्थान का राहु आपके संचित धन में भी कमी कर सकता है। 6 अप्रैल के बाद पैसे के मामले में आप ज्यादा सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। किसी के बहकावे में आकर अपने धन का निवेश न करें, क्योंकि धोखा होने के कारण धन डूब सकता है। द्वादश स्थान का राहु अचानक कोई ऐसा खर्च ला सकता है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। परन्तु 28 जून से समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। व्यापारिक क्षेत्र में वांछित उन्नति करने में सफल होंगे तथा वर्षान्त में आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा। नौकरी या राजनीतिक क्षेत्र में आपको अच्छी सफलता मिलेगी। आप उचित मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए यह साल उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में

सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे, जिससे परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का वातावारण विद्यामान रहेगा। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल के बाद सुख एवं सहयोग में न्यूनता आयेगी परन्तु संबंधो में मधुरता बनी रहेगी। मित्र वर्ग आप से प्रसन्न रहेगा। चतुर्थस्थ शनि के कारण आप कुछ परेशान रह सकते हैं। परन्तु 28 जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

साल का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धी दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ नहीं है। संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस वर्ष आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी, जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पडे गा। इसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। मार्च के बाद दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता परीक्षा या रिसर्च के कार्यों में भाग लेने पर सम्भवतः सफल होंगे। वर्षान्त आपकी संतान के लिए काफी श्रेष्ठ है। वे अध्ययन के क्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा उनकी आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें, अन्यथा 6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अचानक बीमार हो सकते हैं। परन्तु घबराने की कोई बाद नहीं है क्योंकि 28 जून से समय फिर से अनुकूल हो रहा है और उसके बाद आप निरोगी काया के स्वामी होंगे।

आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि होगी जिससे आप तंदुरूस्त एवं सेहतमन्द बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह सैर पर जाना। 3 दिसम्बर के बाद समय और भी श्रेष्ठ हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। विद्यार्थियों की उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड ेगा। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह वर्ष श्रेयस्कर है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 6 अप्रैल के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगे। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

28 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। आप पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राओ का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनहय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे। उत्तरार्द्ध में गरीबों को दान देना, भिखरियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा। काला जादू, तन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपका रुझान ज्यादा होगा।

- पारद शिव लिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें तथा शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- चिड़ियों चींटियों व मक्खियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आप कार्य व्यापार में कुछ विशेष करेंगे जिससे कार्यक्षेत्र और व्यापार का विस्तार होगा। नए उद्यमों या व्यवसायों में प्रवेश करने का मौका मिलेगा। वरिष्ठ लोगों व शक्तिवान व्यक्तियों से स्नेह व सम्मान प्राप्त होगा। 6 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को ज्यादा लाभ मिलेगा। यदि आप शेयर, लॉटरी व सट्टे से जुड़े हैं तो 25 सितम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि आपको महत्वाकांक्षी बना रही है। अधिक से अधिक आय प्राप्त करने के प्रयास करते रहेंगे तथा परिश्रम के बल पर आप अपने व्यवसाय में वृद्धि करेंगे। यदि आप साझेदारी में काई नया कार्य करना चाहते हैं तो यह समय अच्छा नहीं है। सप्तम स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि मित्रता में धोखे का योग बन रही है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में बृहस्पति का गोचर शुभ होने के कारण आपकी आमदनी में बढोत्तरी होगी। किसी वसीयत के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। एकादशस्थ राहु के कारण अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आय के मार्ग खुलेंगे। वांछित बचत करने में भी सफल होंगे। धार्मिक कार्यों में आपका धन व्यय होगा तथा 6 मई के बाद परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई बड़ा लाभ हो सकता है। 25 सितम्बर के बाद लॉटरी सट्टा या बीमा के माध्यम से भी धन लाभ होने का प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप शिक्षा, कानून व बैंक से जुड़े हैं तो इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग होगा।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ भाव में शनि का गोचर आपके घरेलू और पारिवारिक जीवन के लिए ठीक नहीं है। घर परिवार के लोगों से कुछ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। सामान्य तौर पर पारिवारिक

जीवन को लेकर मन अप्रसन्न रह सकता है। छोटी छोटी बातों पर झगड़े और विवाद हो सकते हैं। 6 मई के बाद आप अपने परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा कर सकते हैं अथवा आपका झुकाव धार्मिक क्रिया कलापों की ओर होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में परिवार के लोगों के बर्ताव में भी आप कुछ अंतर महसूस करेंगे। 25 सितम्बर के बाद शनि ग्रह के गोचर अनुकूल होने के कारण पारिवारिक अनुकूलता में वृद्धि होगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आपके प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियो के लिए समय अनुकूल है। 6 मई से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि आपके बच्चो के उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते है।

जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चो का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपके दुसरे संतान के लिए यह साल सामान्य रहेंगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद जड़ी-बूटी और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो जल्दी लाभ मिलेगा। सुर्योदय से पहले उठ कर पार्क में घुमना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

25 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि जीवन साथी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। यद्यपि घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि रोग प्रतिरोधक शक्ति को विकसित कर रही है। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान श्रेष्ठ रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता में सफलता के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट,

प्रशासन व शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम रहेगा। वर्षान्त में रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी अधिक से अधिक यात्राएं होंगी। व्यावयायिक यात्राओं के कारण आप ज्यादातर घर से बाहर ही रहेंगे। 6 मई के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ है। पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। साधना, योग व ध्यान में अपका समय अधिक व्यतीत होगा। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। वर्ष के मध्य में समय किंचित प्रभावित हो रहा है, लेकिन जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा। गुरु के प्रति निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा तथा उनके दिये गये उपदेशो का पालन करेंगे।

- महामृत्युंजय मन्त्र का पाठ करें तथा शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए तुला दान करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करें।
- मंलगवार को व्रत करें तथा मसूर की दाल ब्राह्मण को दान करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं पंचम भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। मालिक या किसी सत्ताधारी से संबंध बिगड़ जाने के कारण व्यापार या कार्यक्षेत्र प्रभावित रह सकता है। लेन देन के व्यापार में हानि होने की भी संभावना है। कार्यक्षेत्र से सम्बंधित कुछ न कुछ परेशानियां सदैव घेरे रहेंगी। इन तमाम कारणों के चलते इस अवधि में किसी नए काम के बारे में सोचना या नए काम की शुरुआत करना जोखिम भरा काम होगा। आप स्वयं में आत्मविश्वास की कमी का अनुभव करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहेगा। वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का सहयोग मिलने के कारण व्यापार में कुछ विशेष करेंगे। शेयर, सट्टा व लॉटरी से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी में हैं तो पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा तथा आपसे बड़े अधिकारी आपकी पूर्ण सहायता करेंगे। कार्य स्थल पर मान सम्मान में वृद्धि होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। अचानक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। इस अवधि में यदि कहीं से वसीयत प्राप्त होने की उम्मीद बन रही होगी और आप उसको प्राप्त करने के लिये इच्छुक होंगे तो वह आपको मिल सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पैसे के मामले में आपको विशेष सावधानी रखनी होगी क्योंकि आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। वैसे आमदनी का स्रोत बना रहेगा और आपकी दैनिक आमदनी में कोई रुकावट नहीं आएगी। लेकिन धन बहुत धीमी गति से आपकी तरफ आएगा। अगर किसी को धन उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापस मिलने की संभावना कम है। आप आकस्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें। महँगी एवं सुख सुविधाओं की चीजें खरीदने के लिए आप लालायित रहेंगे। परंतु धन का अपव्यय न करें अन्यथा आर्थिक तंगी का सामना भी करना पड़ सकता है ।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं कहा जा सकता, इसलिए घर परिवार से जुड़े मामलों को निबटाने में बड़ी सतर्कता बरतें। यद्यपि आप अपने पारिवारिक

उत्थान के लिये कुछ महत्वपूर्ण कार्य करना चाहते हैं और काफी हद तक उसमें सफलता भी मिलेगी। लेकिन उसका श्रेय आपको मिलने में संदेह है। आपके मित्र और सहयोगी जन अपनी बातों से मुकर सकते हैं। परन्तु आपको भाईयों का पूरा सहयोग मिलेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। परिवार के लोगों के बर्ताव में भी आप कुछ अंतर महसूस करेंगे। इन तमाम कारणों से आप मानसिक रूप से कष्ट का अनुभव करेंगे। माता-पिता का स्वास्थ्य प्रतिकूल रह सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

पंचमस्थ शनि के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में व्यवधान आ सकता है। उनको अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। सफतला मिलने की संभावना कम है।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय अनुकूल रहेगा तथा उसके बाद समय फिर प्रभावित हो जाएगा। उस अवधि में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। गर्भवती महिलाओं का गर्भ खराब हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसम जनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ महसूस कर सकते है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है। नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें, नहीं तो इससे भी आपको मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय शुभ रहने वाला है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होंगी और आप आरोग्य तथा तंदरूस्त बने रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रूचि कम होगी तथा आलस्य की भावना इनकी सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिस व्यक्ति को अभी तक नौकरी नहीं मिला है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो वर्ष का उत्तरार्द्ध

श्रेष्ठ रहने वाला है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। तीर्थ यात्राएं प्रभावित होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक व आध्यात्मिक कार्य के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गुप्त विद्याओं के प्रति आपकी रुचि होना स्वाभाविक है। आप एक आदर्शवादी व्यक्ति हैं। लेकिन कई बार दुनिया के कठोर सत्य से दूर भागकर उनसे बचने के उपाय ढूंढने के बजाय आप दिवास्वप्नों में खो जाना चाहते हैं। आपमें जनकल्याण की भावना है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप जनकल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य करेंगे। गरीबों की सहायता व दुखियों के दुख निवारण के लिए कोई संस्था बना सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चन्दन तथा चावल डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।)
- शनिवार के दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- वीरवार का व्रत करें तथा बेसन के लड्डू दान करें।
- विष्णु सहस्त्रनाम का प्रतिदिन पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्यक्षेत्र में इस वर्ष आपको नई उपलब्धियां हासिल होंगी। सही समय पर सही निर्णय लेकर व्यापार को आगे बढ़ाएंगे। अपने व्यापार में आप नई तकनीकियों का उपयोग कर सकते हैं। कर्मचारियों की गतिविधियों पर नजर रखेंगे। इस समय आप अपने व्यावसायिक प्रतिद्वन्दियों को काफी पीछे छोड़ देंगे। कुछ नवीन व्यवसायों में आप निवेश करेंगे। काम-काज में आप किसी के साथ कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी तथा कोई बड़ा ऑर्डर भी मिल सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद पुनः अच्छा हो जाएगा।

सितम्बर के बाद आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। आपके सहयोगियों को भी धन लाभ होगा। नौकरीपेसा लोगों की पदोन्नति होगी, परन्तु काम का दबाव बना रहेगा। आपसे बड़े अधिकारी आपको परेशान कर सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेगें। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग होगा।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आप अपव्यय अधिक करेंगे। अतः आर्थिक मामले को लेकर थोड़ी सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। अतिव्ययी न बने और न ही किसी को उधार दें। वर्षान्त में आपके विवाह आदि मांगलिक कार्य में धन अधिक खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी पारिवारिक स्थिति कुछ अनुकूल नहीं रहेगी। हालांकि इससे परिवार के किसी सदस्य के साथ आपके रिश्ते खराब नहीं होंगे, परन्तु माता के साथ आपकी कुछ अनबन हो सकती है तथा उनकी सेहत भी खराब हो सकती है। अतः उनका ख्याल

रखें। पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने जीवनसाथी के साथ रिश्ते मधुर व मजबूत करें नहीं तो दाम्पत्य जीवन में परेशानी उत्पन्न हो सकती है क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छी नहीं है। यदि आप अविवाहित हैं तो 11 सितम्बर के बाद विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष शुभ है। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

उच्च का शनि पंचमस्थ होने के कारण आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि करेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम व पराक्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय और ज्यादा अनुकूल है। उनका चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह भी हो सकता है।

30 जुलाई के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी पढ़ाई-लिखाई पर पड़ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी भुगत रहे हैं तो इस वर्ष उससे भी छुटकारा मिल सकता है।

30 जुलाई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अपने खान पान पर ध्यान दें नहीं तो आपका वजन बढ़ सकता है। नियमित रूप से व्यायाम करने की आदत डालें वरना पेट, आंत, घुटने, आंख दर्द और सरदर्द जैसी समस्याओं से जूझना पड़ सकता है। वैसे कुल मिलाकर देखा जाए तो आपका स्वास्थ्य अच्छा ही रहेगा। इसलिए चिंता करने जैसी कोई बात नहीं है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। दशम स्थान में राहु के प्रभाव से आप अचानक प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक्स या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी।

आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त कर आगे निकलेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक व्यापारिक वर्ग का समय

थोड़ा प्रभावित रहेगा। उसके बाद वांछित उन्नति करेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि छोटी मोटी यात्रा कराती रहेगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं अधिक होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी विदेश यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्रा से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप अपनी पत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से आपके मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा व विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप मन्त्र जाप, यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि अच्छे कर्म करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें तथा सूर्य को जल चढ़ाएं।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहने वाला है। नौकरी करने लोगों को अपनी कुशलता के बल पर आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे। जो नौकरी या व्यवसाय आप कर रहे हैं, उसमे पूर्ण सफलता मिलने की संभावना है। कार्यों की सफलता आपके आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देगी। व्यवसाय से जुड़े मामलों में आप अपने कौशल से एवं अनुभव से काफी सुधार लेकर आएंगे। नई कार्यशैली या तकनीक को अपनाने से आपके व्यापार में वृद्धि होगी और आपका उत्पादन बढ़ेगा। व्यावसायिक मामलों में अच्छी सफलता मिल सकती है। कोई उच्चपदस्थ सरकारी अधिकारी या प्रभावशाली व्यक्ति का सहयोग आपको नौकरी या व्यावसायिक मामलों में काफी अच्छा लाभ प्रदान करेगा।

फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कारोबार में मुनाफे के लिए यह आवश्यक है कि सोच समझ कर निवेश करें। किसी के ऊपर आंख बंद करके विश्वास न करें अन्यथा नुकसान हो सकता है, क्योंकि कोई करीबी या दोस्त ही आपको धोखा दे सकता है। व्यवसायिक लेन-देन को लिखित रूप में ही पूरा करें नहीं तो बाद में आपको नुकसान होने की संभावना है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में धन प्राप्ति का अच्छा योग बन रहा है। कोई पुराना उधार वापिस मिलने से आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा, जिसके चलते आप अपने व्यवसाय को विस्तार देने के बारे में सोच सकते हैं या किसी नए व्यापार में निवेश कर सकते हैं। आपके ऋण में कमी आएगी। आर्थिक सुधार के कारण व्यापार में सम्मान बना रहेगा।

फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। गलत निवेश नीति के कारण नुकसान होने की संभावना है। अतः पूरी एहतियात बरतें। किसी भी अंजाम पर पहुंचन से पहने तथ्यों की पूरी तरह से जांच-पड़ताल कर लें। धन प्राप्ति के लिए भाग-दौड़ करेंगे और अपेक्षित लाभ प्राप्त करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपका पारिवारिक जीवन आनंदमय बना रहेगा। घर परिवार में मेहमानों का आना-जाना लगा रह सकता है। परिवार के साथ यात्राओं पर जाकर आपको आत्मिक शांति का अनुभव होगा। कुछ पुराने विवादों से जुड़े मामलों में आपको राहत मिल सकती है। परिवार में

सौहार्द बना रहेगा व पैतृक संपत्ति से जुड़े मामलों का कोई निष्कर्ष निकलेगा। किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को करने से पहले घर के बड़े-बुजुर्गों की सलाह आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

फरवरी के बाद परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। हालांकि इससे परिवार के किसी सदस्य के साथ आपके रिश्ते खराब नहीं होंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह साल काफी शुभ है। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ .-चढ़ के भाग लेंगे। मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

पंचम भाव पर राहु की दृष्टि संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। उनका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। विशेषतः उनको पित्त, कफ व उदर संबंधित बीमारियां हो सकती हैं, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। निर्णय लेने की शक्ति में कमी व उन्नति में व्यवधान आ सकते हैं। आपकी दूसरी संतान के लिए यह साल सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले जातक हैं। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। सुबह-शाम टहलना और ऊर्जावान रहना आपको पंसद है।

फरवरी के बाद स्वास्थ्य को लेकर सतर्क रहें। मधुमेह और मोटापे की समस्या से पीड़ित जातक इस समय अधिक प्रभावित रह सकते हैं अपने आप पर आवश्यकता से अधिक बोझ न डालें और व्यर्थ की बातों से स्वयं को दूर रखें। देव पूजा, मंत्र आराधना और योगाभ्यास से आप मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष विद्यार्थियों के लिए कड़ी मेहनत करने का है। शिक्षा में आपकी धीमी गति से प्रगति होगी। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आप लंबे समय तक पढ़ने में ध्यान केंद्रित नहीं कर पाएंगे। इस दौरान मानसिक व्याकुलता आपको परेशान करेगी। यदि आप कोई उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो किसी भी महत्वपूर्ण फैसले को लेते वक्त सतर्कता बरतें क्योंकि उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को महत्वपूर्ण निर्णय लेने में अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है।

छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए शुभ है। यदि आप तकनीकी, कानून, इंजीनियरिंग व मेडीकल से संबंधित प्रतियोगिता परीक्षा दे रहे हैं तो सफलता मिलने की प्रबल सम्भावना है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको वांछित नौकरी मिलने की संभावना है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। राहु केतु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ आपके लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्राएं आपकी अचानक होंगी।

इन यात्राओं के दौरान आपको छोटी मोटी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। 16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। मानसिक द्वन्दता के कारण आपका मन पूजा-पाठ में नहीं लगेगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि होने के कारण पूजा पाठ यज्ञ अनुष्ठान अपेक्षाकृत कम ही कर पाएंगे। घर में साफ-सफाई, पूजा-पाठ व पवित्रता का माहौल बनाने व छोटे लोगों की सेवा करने से राहु के अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है। ऐसा करने से कार्यों में आने वाले व्यवधानों तथा संतान संबंधी चिंताओं से भी छुटकारा मिल जाएगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- नित्य दुर्गा कवच का पाठ करें।
- पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :– शनि
(30/11/2020 - 01/12/2039)

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 30/11/2020 को आरम्भ और 01/12/2039 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में शनि पंचम भाव में स्थित है। शनि एक अशुभ ग्रह है। यह विलम्ब और बाधा उत्पन्न करता है, किन्तु परिश्रम के फल से वंचित नहीं करता। यह जातकों की परीक्षा लेता है और उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में पंचम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 7वें 12वें और दूसरे भाव पर है ओर यह उनके कार्यों को प्रभावित कर रहा है। पंचम भाव सन्तान, सुख, कलात्मक प्रतिभा, प्रतिस्पर्धी गतिविधियाँ, बुद्धि, विशाल सम्पत्ति और आध्यात्मिक कार्यों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी 5वें भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। आप को सामान्यतया कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

पंचम भाव में स्थित शनि भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है जिससे आपको आर्धिक स्थिति सुदृढ़ करने के अनेक अवसर मिलेंगे। लॉटरी या प्रतियोगिता में विजय से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। किन्तु, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा संग्रह में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

व्यवसाय :

आप जो भी व्यवसाय, व्यापार या सेवा अपनाएं उसमें विशेषज्ञ होंगे। शासन के लोगों से आपकी दोस्ती होगी और आप मन्त्रशास्त्र के ज्ञाता होंगे। आप किसी संस्था के प्रधान हो सकते हैं ओर आप गणित आदि शास्त्र के विद्वान् भी हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन मधुर होगा और आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे। आपका स्वभाव दम्मी होगा और आपके पड़ोसियों तथा संबंधियों से आपका संबंध मधुर नहीं रहेगा जिससे आपका घरेलू जीवन दुःखी होगा। अन्यथा जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे और आपका भाग्य भी परिवर्तनशील रहेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा के लिए समय पूरी तरह अनुकूल है। आप गणित के विद्वान् हो सकते हैं।

अंर्तदशा :- शनि - बुध
(04/12/2023 - 13/08/2026)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 30/11/2020 को प्रारंभ होकर 01/12/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 04/12/2023 को प्रारंभ होकर 13/08/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। बुध शक्तिशाली ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 11वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

बुध बुद्धि का कारक है। इस अवधि में आपकी बुद्धिमत्ता और ज्ञान उत्तम होंगे। उच्च अधिकारियों के सलाहकार बन सकते हैं। प्रसन्नचित्त रहेंगे। विषय-वासना में अत्यधिक रुचि हानिकारक हो सकती है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - केतु
(13/08/2026 - 22/09/2027)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/11/2020 को प्रारंभ होकर 01/12/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 13/08/2026 को प्रारंभ होकर 22/09/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। केतु शक्तिशाली ग्रह है। लग्न में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है। शरीर में अधिक गर्मी या फोड़े-फुंसी हो सकते हैं। मष्तिष्क में बेचैनी हो सकती हैं। अधिक उत्तेजना के कारण पारिवारिक जीवन में अशांति हो सकती है। व्यवहार में अस्थायित्व और बेईमानी की भावना संभव हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - शुक्र
(22/09/2027 - 22/11/2030)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/11/2020 को प्रारंभ होकर 01/12/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 22/09/2027 को प्रारंभ होकर 22/11/2030 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका कोई शत्रु नहीं होगा। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से उत्तम संबंध होंगे। वासनाओं पर नियंत्रण रखना आवश्यक है, वर्ना बदनाम हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - सूर्य
(22/11/2030 - 04/11/2031)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/11/2020 को प्रारंभ होकर 01/12/2039 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 22/11/2030 को प्रारंभ होकर 04/11/2031 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है।

पंचम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के 11वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर से दूर रह सकते हैं, अप्रसन्न हो सकते हैं। हृदय रोग से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। यह अंतर्दशा अधिक शुभ नहीं रहेगी। धर्म और अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- शहद और दूध का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- गरीबों को आटा, गुड़, तांबा दान करें।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(04/11/2031 - 04/06/2033)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 30/11/2020 को प्रारंभ होकर 01/12/2039 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में को खतरों का

परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। रोजमर्रा की गतिविधियों में संवेदनशील और मूडी हो सकते हैं। उत्तम व्यक्तित्व के कारण समाज में लोकप्रिय बनेंगे। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। साझेदारी के व्यापार में लाभ होगा, मगर कुछ बाधाएं आएंगी। विवाहित जीवन सुखी रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(04/06/2033 - 14/07/2034)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 30/11/2020 को प्रारंभ होकर 01/12/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 04/06/2033 को प्रारंभ होकर 14/07/2034 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। आप मंगली हैं। अष्टम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 11, 2, 3 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में हो सकता है कि भाग्य आपका साथ न दे। उत्साह और साहस में कमी आ सकती है। चरित्र में गिरावट आ सकती है; बुरी आदतों से बचें। जीवनसाथी से अन्य किसी से संबंध न बनाएं। कटु वाणी के कारण लोकप्रियता में कमी आ सकती है। मित्र और संबंधी आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं। विवाहित जीवन में भी तनाव हो सकता है। अगर विवाह की योजना बना रहें हैं तो ध्यान रखें कि जीवनसाथी भी मंगली हो।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें।

अंर्तदशा :- शनि - राहु
(14/07/2034 - 20/05/2037)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/11/2020 को प्रारंभ होकर 01/12/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 14/07/2034 को प्रारंभ होकर 20/05/2037 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के लग्न

महादशा :- बुध
(01/12/2039 - 30/11/2056)

बुध की महादशा 01/12/2039 को आरम्भ और 17 वर्ष की होकर 30/11/2056 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध पंचम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, सफलता, उत्तम शिक्षा और धन की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी शिक्षा उत्तम होगी, सट्टे में लाभ तथा सन्तान से सुख मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, आशावादी तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको अक्सर पाचन क्रिया की शिकायत हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग तथा स्नायविक समस्या हो सकती है। इस दशा के दौरान

आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। सतर्कता बरतकर इन मामूली बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। आपको अचानक लाभ या अवकाश ग्रहणसे लाभ, ग्रेच्यूइटी आदि की प्राप्ति होगी। आपका निवेश शुभदायक और आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। कुछ मामूली नुकसान भी हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तर तथा परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। वाणिज्य-व्यापार से सम्बद्ध सभी कार्यों में आप अच्छा करेंगं। सहकर्मियों तथा सहायकों के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। दशा की प्रगति के साथ-साथ स्थिति में सुधार होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के कार्य में परिवर्तन होगा। आप आपने कार्य में परिवर्तन या अन्य आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं जो अन्ततः लाभदायक होंगे। आपका उपार्जन तथा लाभ अच्छा होगा। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग तथा बौद्धिक कार्य कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यपार लाभदायक हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

पारिवारिक सुख और वाहन की दृष्टि से यह दशा आपके लिये उत्तम होगी। आपको जमीन-जायदाद या ऐसी अन्य सम्पत्ति से लाभ होगा। आपको यातायात से भी लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में आप की छोटी और शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आप की शिक्षा अति उत्तम होगी। आपका प्रशिक्षण अच्छा होगा और आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफल होंगे। आपकी लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षण तथा शैक्षिक सेवा आदि में रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपको रुचि होगी। आपका मस्तिष्क बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक होगा और सभी बौद्धिक कार्यों में आप अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा और उनसे आपको सुख मिलेगा। वे आप से दूर जा सकते हैं या उन्हें कुछ मामूली समस्याएं हो सकती हैं जो दशा की उन्नति के साथ गुजर जाएंगी। आपके जीवन साथी को हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा, उन्हें सुख की प्राप्ति होगी और उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिये यह दशा लाभदायक होगी जबकि आपके पिता को सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनका भाग्यादेय और यात्रा होगी तथा बौद्धिक कार्यों में उनकी रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कठिन परिश्रम करना होगा, उनकी छोटी यात्रा होगी और सम्बन्धियाँ से सहायता मिलेगी जबकि आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ मिलेगा, उनकी शादी होगी और वाणिज्य व्यापार में सफलता मिलेगी। आपका उनके साथ संबंध अच्छा रहेगा। बुध की इस दशा में आपको सुख मिलेगा, वैवाहिक जीवन उत्तम रहेगा,

आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी तथा अच्छे पद की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर दशा के कारण आपको सम्पत्ति तथा सुख मिलेगा और शिक्षा उत्तम होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। सूर्य की अन्तर्दशा के कारण लाभ तथा विवाह हो सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य खराब हो सकता है तथा ननिहाल से लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में उन्नति तथा छोटी यात्रा होगी। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि लग्नेश शनि की अन्तर्दशा में यशा, ख्याति और सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :- बुध - बुध
(01/12/2039 - 29/04/2042)

आपके लिए बुध की महादशा 01/12/2039 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 01/12/2039 को प्रांरभ होकर 29/04/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको निवेश और शेयर आदि से लाभ होगा। बुद्धिमत्ता उत्तम होगी। प्रत्येक कार्य सावधानी से करेंगे। प्रसन्न और आशावादी होंगे। सम्मान में वृद्धि होगी। उच्चपद प्राप्त हो सकता है।

दर्शन और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। नाटक, कला और बाल मनोविज्ञान में रुचि होगी। विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा। नौकरी में सफल रहेंगे।

आपके जीवनसाथी धन कमाएंगे, सफल होंगे, नयी योजनाएं बनाएंगे। आपके पिता प्रसिद्ध और धनी बनेंगे, अध्यात्म में रुचि होगी। माता को धन का लाभ होगा, घरेलू जीवन सुखी रहेगा, उत्तम वस्त्र और आभूषण प्राप्त होंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, व्यापार और साझेदारी से लाभ का संकेत है। आपकी संतान परीक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, विवाह हो सकता है, यात्रा संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाताओं के कार्य में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुधवार को काली गाय को रोटी और गुड़ दें।

अंर्तदशा :- बुध - केतु
(29/04/2042 - 26/04/2043)

आपके लिए बुध की महादशा 01/12/2039 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/04/2042 को प्रारंभ होकर 26/04/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म में रुचि होगी, अंतर्ज्ञान शक्ति सुदृढ़ होगी। कभी-कभी वैराग्य की भावना प्रबल हो सकती है। साझेदारी से लाभ हो सकता है। व्यापार में अचानक प्रगति हो सकती है। यात्रा संभव है। विवाह हो सकता है। सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि हो सकती है। माता तीर्थयात्रा कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, सुख-साधन,

सम्मान, प्रसन्नता, धन में वृद्धि, स्पर्धियों पर विजय और साहस का संकेत है। आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी, पिता और गुरु से संबंध मधुर रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं, अचानक लाभ हो सकता है, रुका धन वापस मिल सकता है। परामर्शदाताओं को पहले किये निवेश और साख से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। मुख और नेत्रों की व्याधि के प्रति सावधान रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की पूजा करें।

अंर्तदशा :- बुध - शुक्र
(26/04/2043 - 24/02/2046)

आपके लिए बुध की महादशा 01/12/2039 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 26/04/2043 को प्रारंभ होकर 24/02/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। कर्ज़ का भुगतान कर सकेंगे। मुकदमे में जीत होगी। अधिक मसालेदार और गरिष्ठ भोजन से बचेंगे तो स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किरायेदार सहयोग करेंगे। सहकर्मियों से संबंध अच्छे रहेंगे। धन संचित होगा। सुख के साधन क्रय करेंगे। विचार आध्यात्मिक और दया से पूर्ण होंगे। लोकप्रियता और साख में वृद्धि होगी। प्रसन्नता बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं मगर बचत भी करेंगे। आपके पिता सफल और लोकप्रिय होंगे। माता की कला में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रसन्नता, अचानक परिवर्तन, अचल संपत्ति का लाभ, समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी, भाग्य साथ देगा। अगर वे कार्यरत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधासंपन्न होगा, शत्रुओं पर विजय होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता धनी और सौभाग्यशाली होंगे। व्यापारियों की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे, स्पर्धियों पर विजय होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

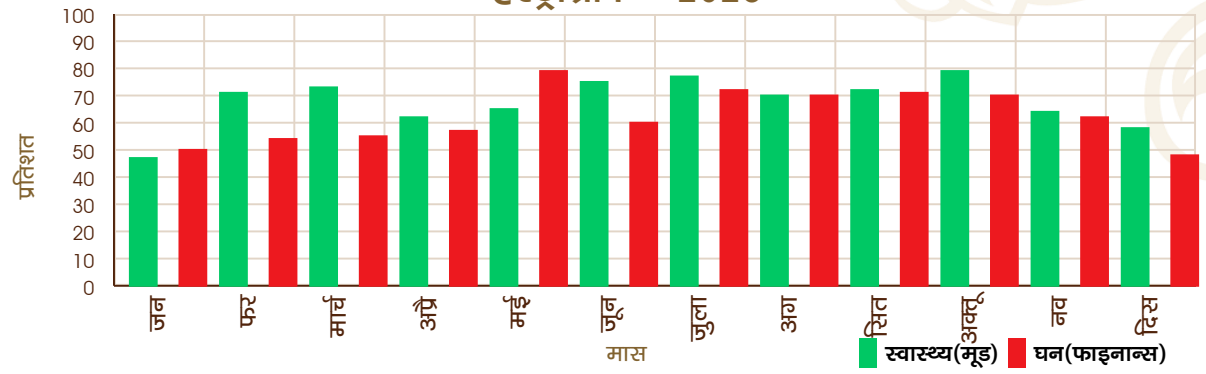

एस्ट्रोग्राफ - 2026

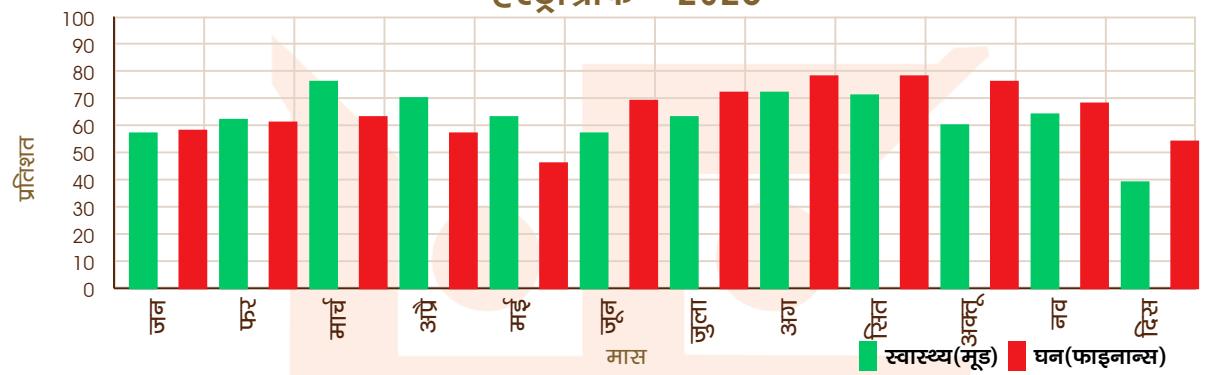

एस्ट्रोग्राफ - 2027

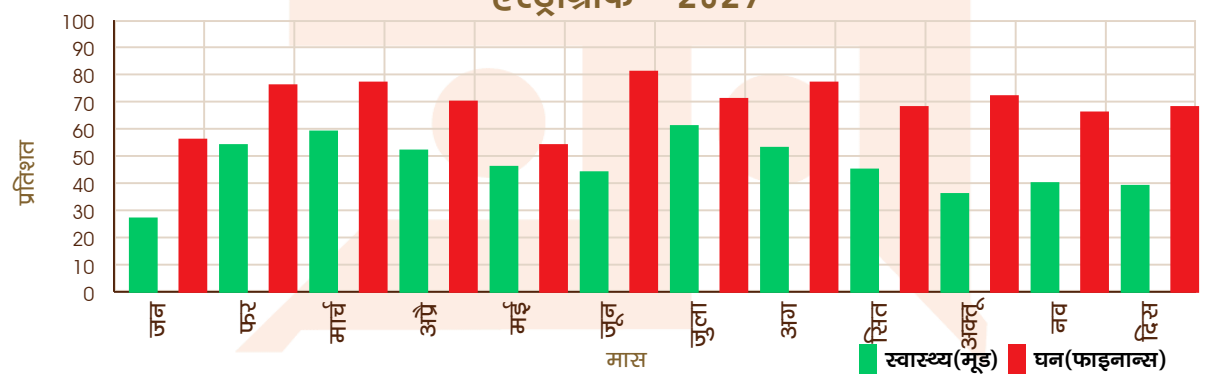

एस्ट्रोग्राफ - 2028

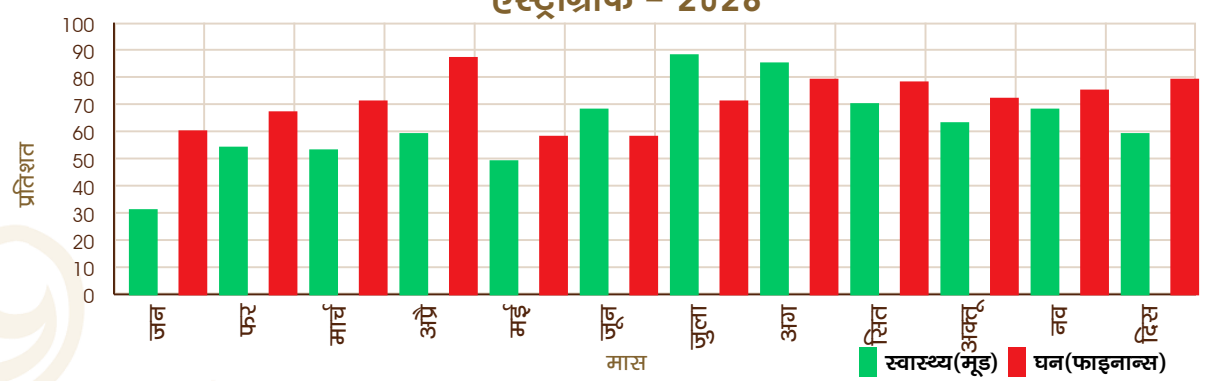

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2029

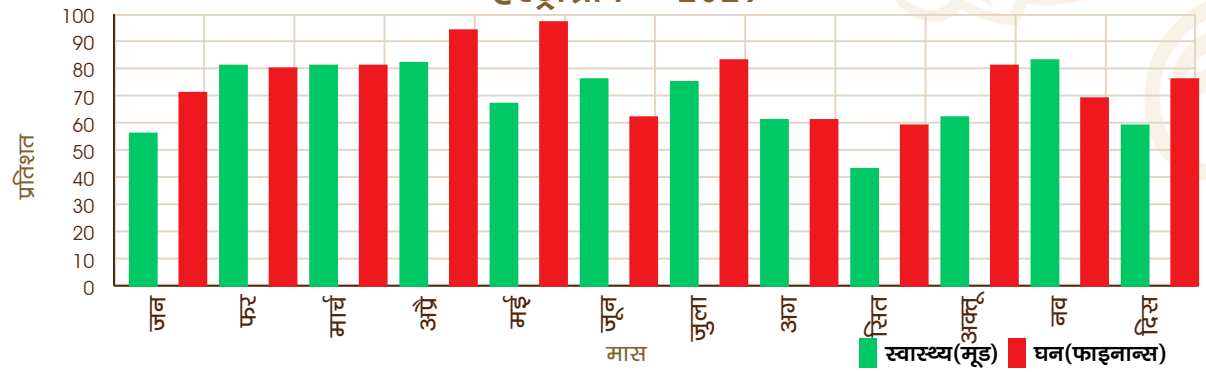

एस्ट्रोग्राफ - 2030

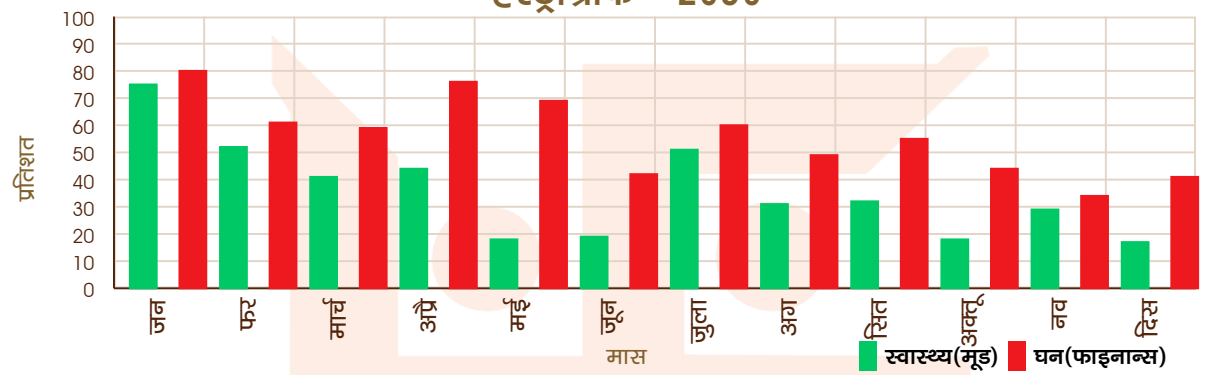

एस्ट्रोग्राफ - 2031

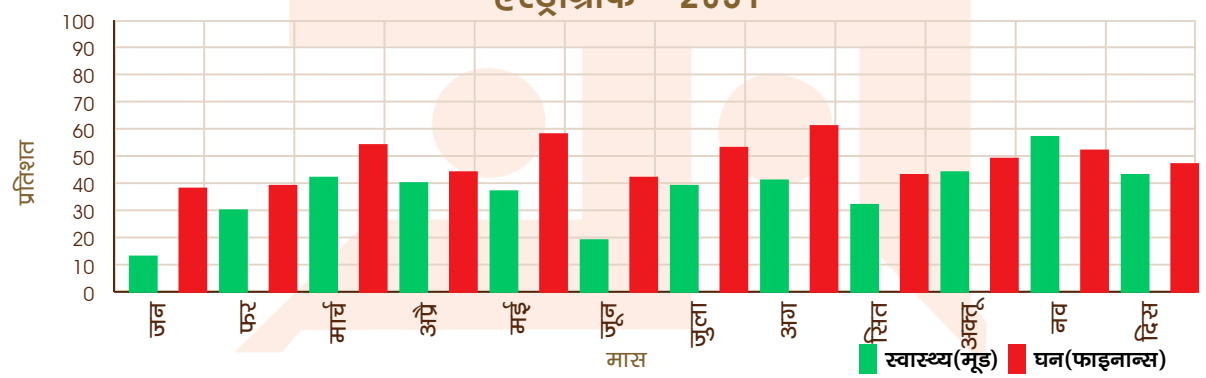

एस्ट्रोग्राफ - 2032

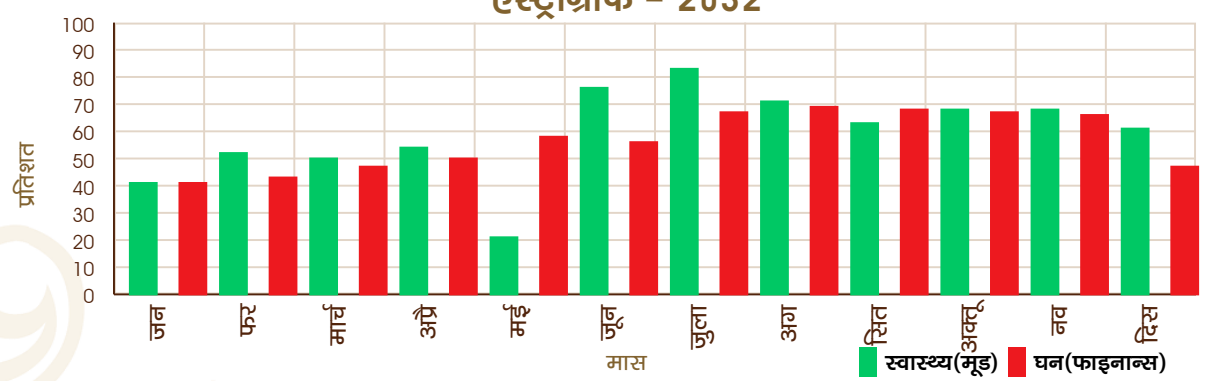

एस्ट्रोग्राफ - 2033

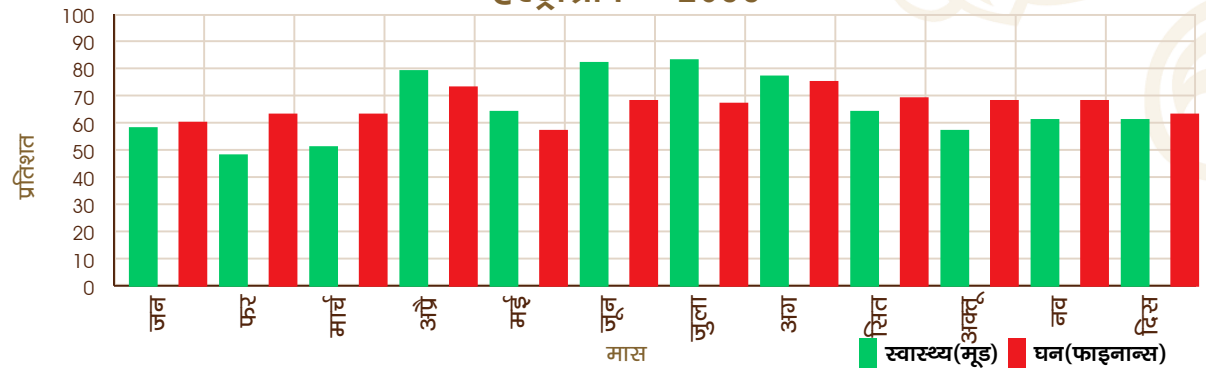

एस्ट्रोग्राफ - 2034

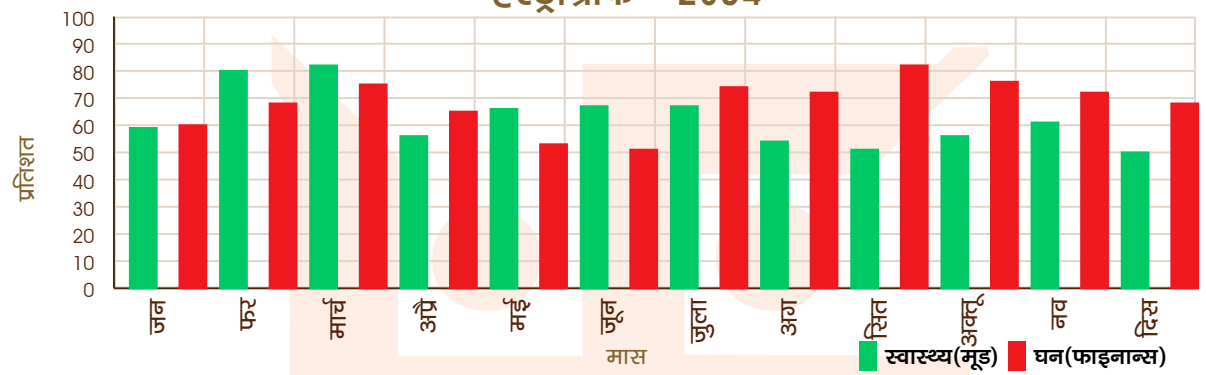

एस्ट्रोग्राफ - 2035

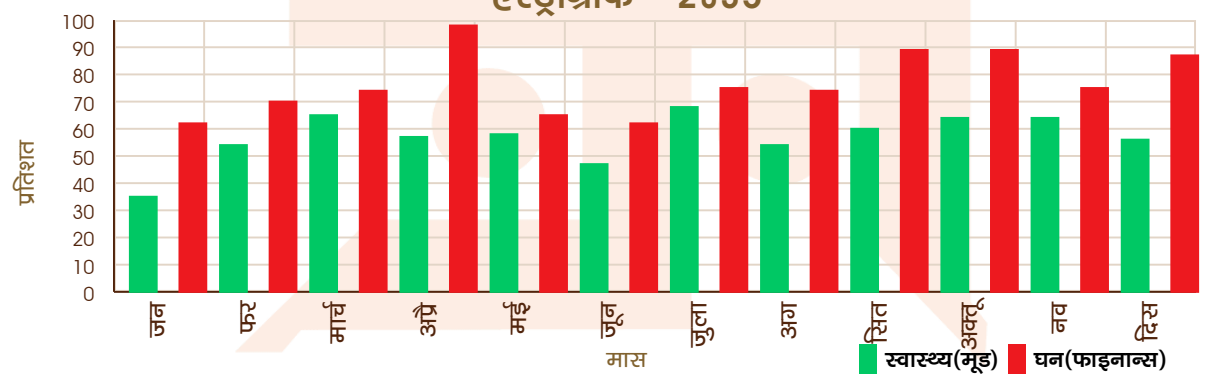

एस्ट्रोग्राफ - 2036

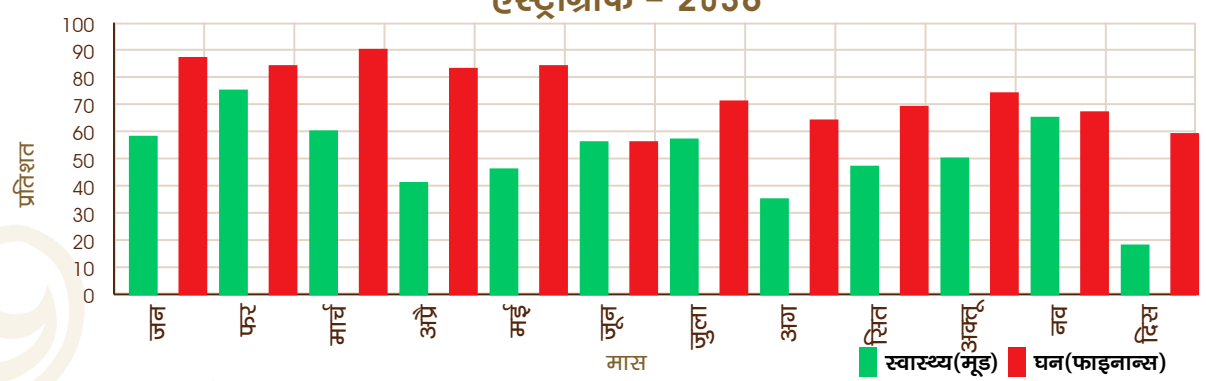

एस्ट्रोग्राफ - 2037

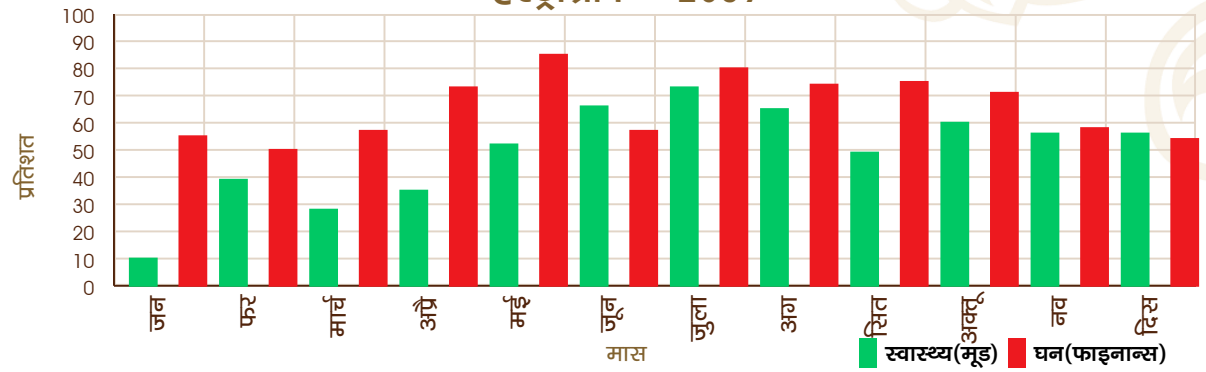

एस्ट्रोग्राफ - 2038

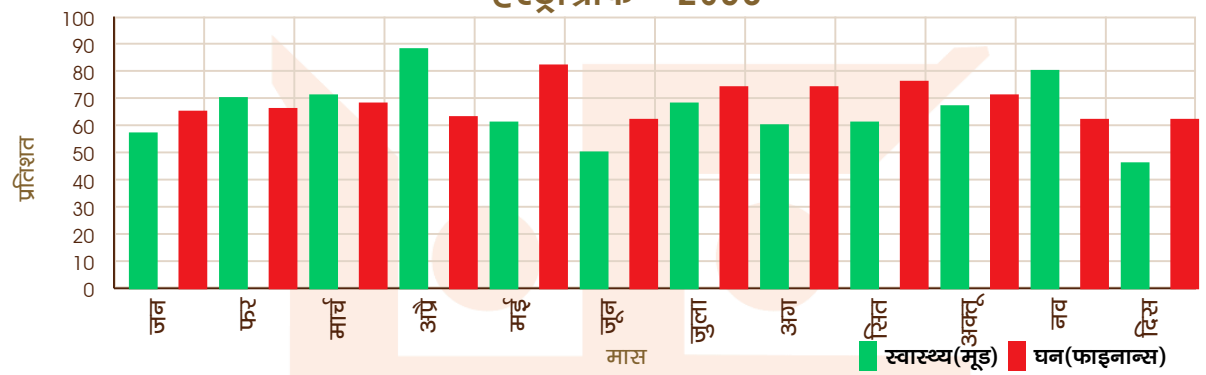

एस्ट्रोग्राफ - 2039

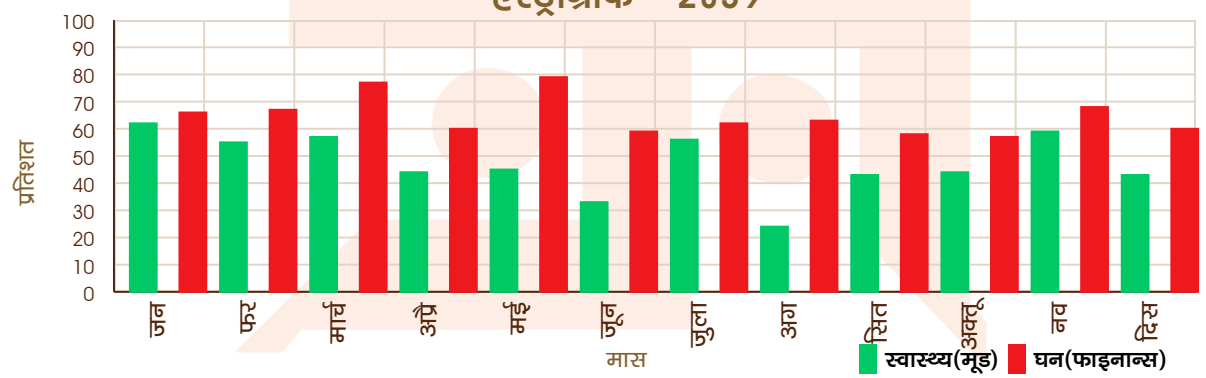

एस्ट्रोग्राफ - 2040

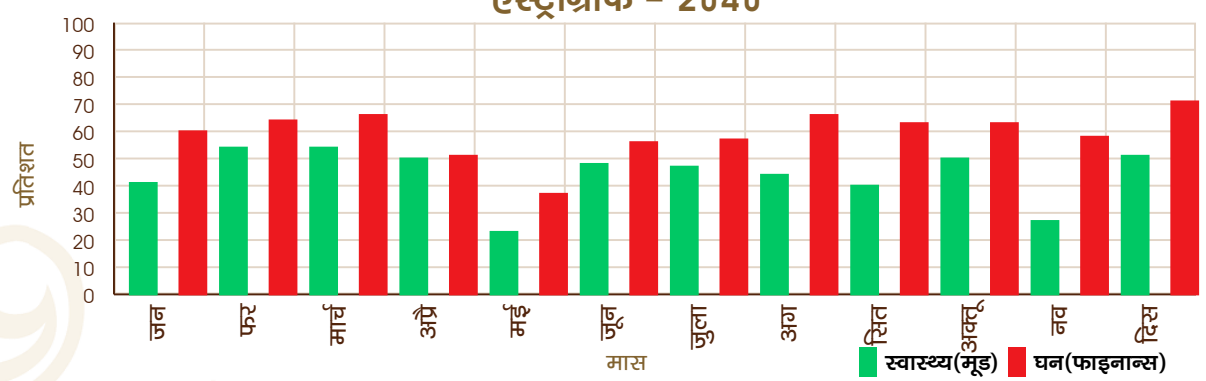

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2041

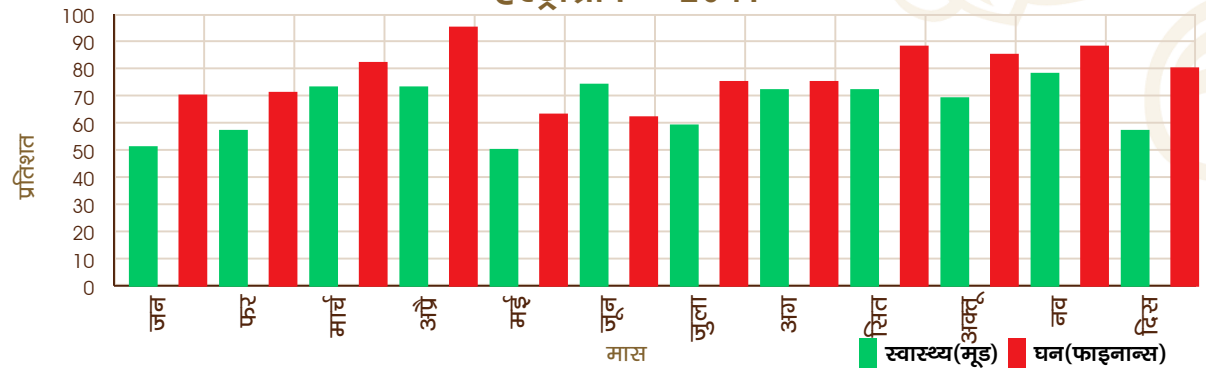

एस्ट्रोग्राफ - 2042

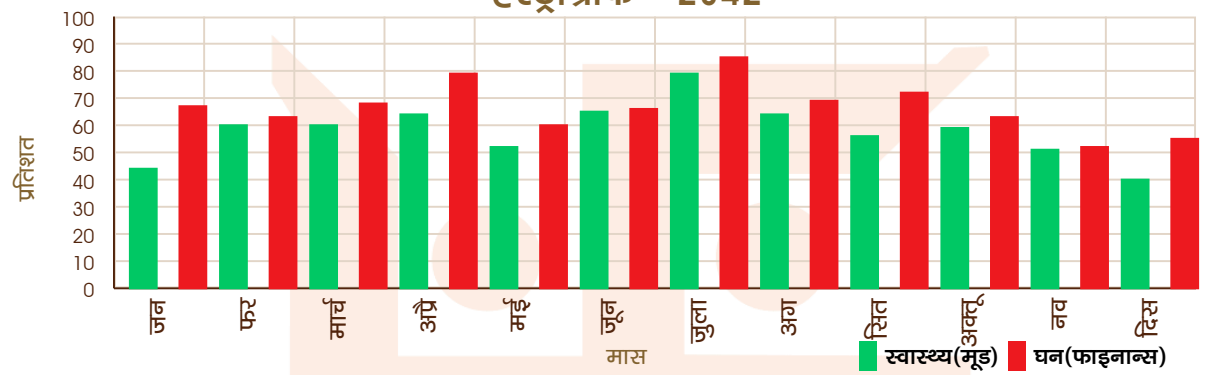

एस्ट्रोग्राफ - 2043

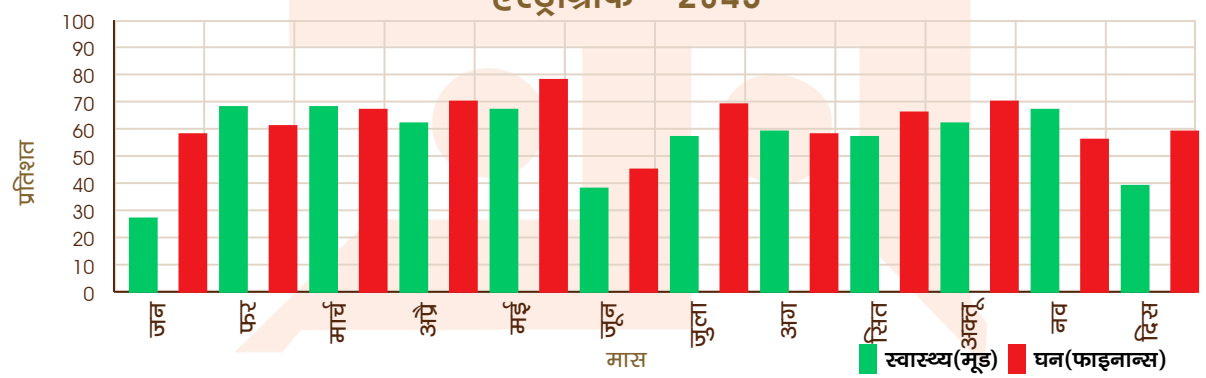

एस्ट्रोग्राफ - 2044

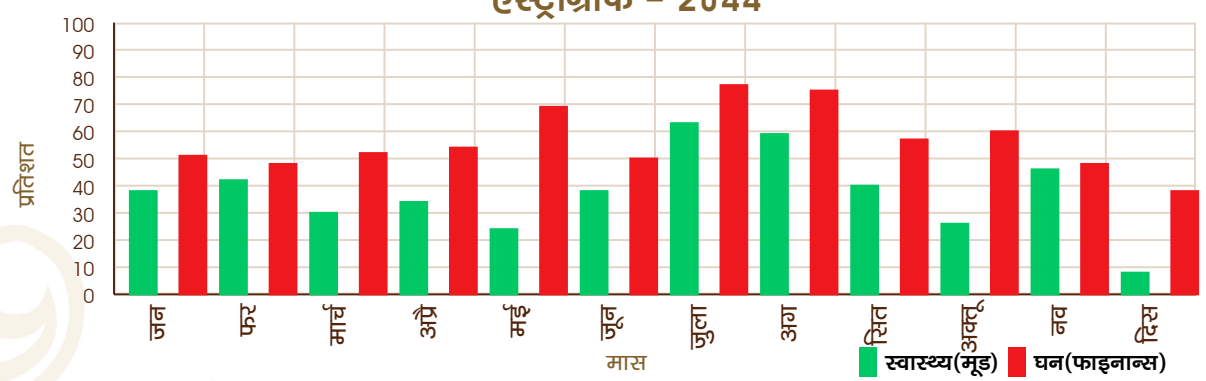

योग

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शनि योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

काम योग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
परदारपराङ्मुखो भवेद्बरदारात्मजबन्धुसंश्रितः।
जनकादधिकः शुभैर्गुणैर्महनीयां श्रियमेति कामजः।।
।। फलदीपिका।। अ. 6 / श्लोक 44, 51।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा सप्तम स्थान में

शुभ ग्रह बैठे हो एवं सप्तम भाव का स्वामी स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो कामयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दूसरे के स्त्री में आसक्त नहीं होंगे और आपको उत्तम जीवनसाथी, सन्तान और बन्धुओं का सुख प्राप्त होगा। आप शुभ गुणों से युक्त लक्ष्मीवान् होंगे। आप अपने पिता से अधिक उच्च पद प्राप्त करेंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,बुध योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप ल क्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।

।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

विपरीत राज योग

रिपुपतौ रन्ध्रे स्थिते।
अन्योन्यर्क्षगता निरीक्षणयुताश्चान्यैरयुक्तेक्षिता
जातोऽसौ नृपतिः प्रशस्तविभवो राजाधिराजेश्वरः।।

।। फलदीपिका ।। अ. 6।। पृ. 135 ।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश अष्टम (मृत्यु) भाव में स्थित हो, इन भावों के स्वामी एक दूसरे की राशि में हों या एक दूसरे से वीक्षित हों और अन्य भावों के स्वामीयों से युत या निरीक्षित न हों तो विपरीत राज योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका के अध्ययन से यह प्रमाणित हो रहा है कि आपके जीवन पर विपरीत राजयोग का पूर्ण प्रभाव पड़ रहा है। फलतः आप ग्राम्य स्तर के सरकारी कर्मचारी से लेकर राज्य सरकार के स्तर तक सेवारत रहेंगे। आपको सभी प्रकार के राज्यसुख उपलब्ध होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,केतु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अनेक वाहन प्राप्ति योग

सौख्याधिपे शोभनखेचरेण भाग्येश्वरेणापि युतेथ वा स्यात् ।
सेनाबहुत्वं समुपैति जातो बहुत्वदेशाभरणानि यानम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-161 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश शुभ ग्रह हो तथा भाग्येश से भी युक्त हो तो जातक बहुत सेना तथा देश-विदेश के वस्त्राभरणभूषणवाहनादि से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सभी सुखों से युक्त होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्र, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : राहु,चंद्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31 ।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म के कारण धन व्यय योग

शुभेन कर्मनाथेन दृष्टे युक्ते व्ययेश्वरे ।
स्वोच्चामित्रस्ववर्गस्थ धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-8 ।।

यदि जन्मपत्रिकामें दशमेश शुभ ग्रह से व्ययेश दृष्ट युक्त हो तथा अपने उच्च, मित्र स्वराशिगतनवांशक में हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 18 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धार्मिक कार्य में धन व्यय करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।